www.epaper.azadsipahi.in

* ओड़िशा संस्करण

11 दिसंबर, 2024
मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, एकादशी
संवत 2081
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
बुधवार, वर्ष 10, अंक 53

झारखंड की षष्ठम विधानसभा के पहले सत्र का दूसरा दिन, सर्वसम्मति से हुआ विधानसभा अध्यक्ष का चयन

बना इतिहास, लगातार दूसरी बार स्पीकर बने रवींद्रनाथ

- सीएम और बाबूलाल ले गये आसन तक

सुनील कुमार सिंह

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड की छठी विधानसभा ने अपने पहले सत्र के दूसरे दिन इतिहास रच दिया। नाला के विधायक प्रो रवींद्रनाथ महतो को सदन ने सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया। वह लगातार दूसरी बार अध्यक्ष बने हैं। यह उपलब्धि हासिल करनेवाले वह पहले व्यक्ति हैं। इससे पहले भी प्रो महतो के नाम एक खास रिकॉर्ड बन चुका है। पूरे कार्यकाल तक स्पीकर रह कर चुनाव जीतनेवाले वह पहले विधायक हैं। झारखंड की छठी विधानसभा के वह अकेले ऐसे सदस्य हैं, जिनके खिलाफ कोई भी मामला दर्ज नहीं है। वह लगातार तीसरी बार और कुल मिला कर चौथी बार विधायक बने हैं।

प्रो महतो मृदुभाषी, मिलनसार और बिना विवाद के सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले विधायक हैं। यही कारण है कि उनके लंबे राजनीतिक जीवन में उन पर कभी प्राथमिक ही दर्ज नहीं हुई। उनके विधानसभा क्षेत्र के लोग भी कहते हैं कि वह सभी को अपने साथ लेकर चलते हैं।

पिता की अंत्येष्टि के बाद सदन में आये हैं महतो : रवींद्रनाथ महतो का पूरा परिवार अभी सदमे में है। उनके पिता गोलोकनाथ महतो का रविवार को निधन हुआ है। प्रो महतो उनकी अंत्येष्टि कर सदन की कार्यवाही में भाग ले रहे हैं। इसलिए वह अलग पोशाक में थे। शोकाकुल होने के बावजूद जिम्मेदारियों के प्रति इतना समर्पण ही उन्हें औरों से अलग करता है।

हेमंत और बाबूलाल आसन तक लेकर गये

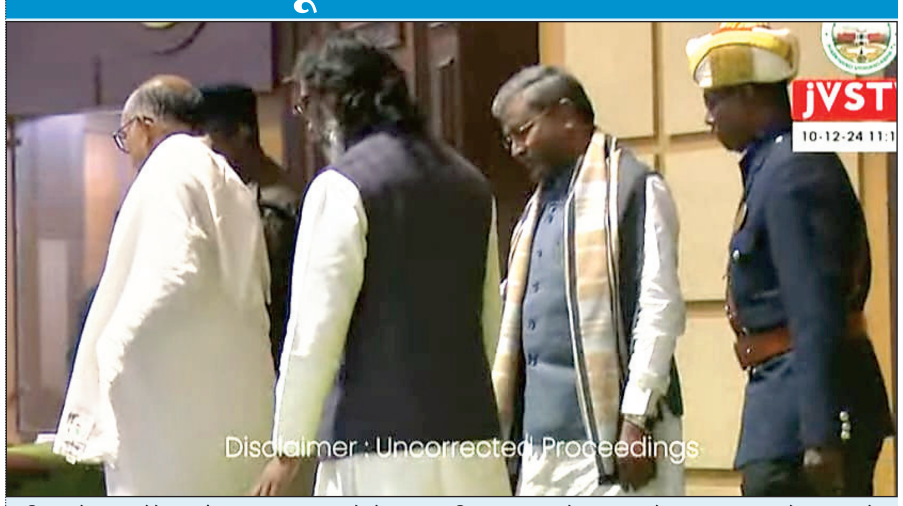

सीएम हेमंत सोरेन और भाजपा के बाबूलाल मरांडी सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने के बाद रवींद्रनाथ महतो की सीट तक गये और उन्हें बधाई दी। इसके बाद दोनों उन्हें आसन तक लेकर आये और अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठाया।

सात सेट में भरा था नामांकन : सोमवार को रवींद्रनाथ महतो ने विधानसभाध्यक्ष पद के लिए सात सेट में अपना नामांकन किया था। पहले सेट में हेमंत सोरेन, दूसरे में राधाकृष्ण किशोर, तीसरे में सुरेश पासवान, चौथे में अरूप चटर्जी, पांचवें में बाबूलाल मरांडी, छठे में सरयू राय तथा सातवें में जयराम महतो प्रस्तावक बने थे। वहीं, सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के विधायकों ने समर्थन किया था। सभी सेट में नामांकन वैध पाया गया।

आज पेश होगा अनुपूरक बजट: बुधवार को ही राज्यपाल का अभिभाषण होगा तथा अनुपूरक बजट पेश होगा। गुरुवार को अंतिम दिन राज्यपाल के अभिभाषण तथा अनुपूरक बजट पर चर्चा होगी। इसके बाद अनुपूरक बजट पारित किया जायेगा। वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर पहली बार अनुपुरक बजट पेश करेंगे।

सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों ने दी बधाई

सत्ता पक्ष के साथ विपक्ष की भूमिका अहम: हेमंत सोरेन

रांची । मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने स्पीकर के चयन पर सदन को संबोधित करते हुए कहा कि आज झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष चुने गये रवींद्रनाथ महतो को अपनी पार्टी ओर सत्ता पक्ष के तरफ से बधाई देता हूं। ये लोकतंत्र का सबसे बड़ा मंदिर है। हमारे लोकतंत्र का लोहा दुनिया मानती है। आज उन महान विभूतियों के विचारों को देश आजाद होने से लेकर आज सभी मानते हैं। आपकी अध्यक्षता में पांचवीं विधानसभा सफलतापूर्वक चली। आपने सहनशीलता के साथ सदन चलाया। पक्ष-विपक्ष के बीच संतुलन बनाया। इस सदन की गरिमा को और मजबूत करने के लिए आपकी भूमिका बेहतरीन है। हम सबने मिलकर फिर आपको अध्यक्ष चुना है। हमें उम्मीद ओर भरोसा है कि छठी विधानसभा को भी पहले की तरह सब मिलकर बेहतर बनायेंगे। हेमंत सोरेन ने कहा कि सत्ता पक्ष के साथ विपक्ष की भूमिका अहम हैं। विपक्ष से यह आग्रह है कि जनता ने जो निर्णय सुनाया है, उसका आदर करे। राज्य की महान विभूतियों के सपने को साकार करने में भूमिका निभाते रहेंगे। अध्यक्ष महोदय सफलतापूर्वक संचालन करेंगे, सदन आपके साथ रहेगा। आपके आदेश का निर्वहन होगा।

उद्देश्य और लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ेंगे: राधाकृष्ण किशोर

संसदीय कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने अपने संबोधन में कहा कि यह पल खुशी और हर्ष का है। पूरा सदन आपको आसन पर देख गौरव महसूस कर रहा है। आपके पिछले कार्यकाल में मैं सदन का हिसा नहीं था, लेकिन जो मैंने देखा, आपका संचालन वो अद्भुत था। हम एक उद्देश्य और लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ेंगे। राज्य की समस्या का निराकरण हम इस सदन के जरिये करेंगे। संसदीय राजनीतिक शुचिता का पालन सदन करेगा।

संसदीय सस्थाओं पर ध्यान देन की जरूरत: सरयू राय

जदयू विधायक सरयू राय ने कहा कि अध्यक्ष का पद केवल सभा संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि विधानसभा सचिवालय और सभी संसदीय समितियों का भी सर्वोच्च प्रभार अध्यक्ष के पास होता है। उन्होंने उम्मीद जतायी कि अध्यक्ष के नेतृत्व में विधानसभा सुचारू रूप से चलेगी और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रश्नकाल, शून्यकाल और ध्यानाकर्षण जैसे सत्र के महत्वपूर्ण विषय आम जनता के हित से जुड़े होते हैं।

विपक्षी सदस्यों को थोड़ा अधिक अवसर दें: बाबूलाल मरांडी

भाजपा विधायक बाबूलाल मरांडी ने रवींद्रनाथ महतो के विधानसभा अध्यक्ष चुने जाने पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष से अपील करते हुए कहा कि विपक्षी सदस्यों को थोड़ा अधिक अवसर दें। नवनिर्वाचित सदस्यों को भी सदन में भरपूर अवसर दें। इससे राज्य की ज्वलंत समस्याओं की पहचान और समाधान में सरकार को भी मदद मिलेगी। कोई भी विधायक सदन में मामला उठाये, तो उसका समाधान हो। सदन के कस्टोडियन के नाते सभी को अवसर दें। इससे नये विधायकों में आत्मविश्वास पैदा होगा। दोनों पक्ष को लेकर चलें। आप विपक्ष पर ज्यादा ध्यान देंगे, तो बेहतर होगा। विपक्ष के विषयों पर भी आपका ध्यान होना चाहिए। काफी नये विधायक आये हैं। आप उन्हें भी मौका देंगे, यही उम्मीद है। उन्होंने कहा कि सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों की अहम भूमिकाएं होती हैं। सरकार जहां संविधान और नियमावली की संरक्षक होती है, वहीं विपक्ष सदन में उठाये गये मुद्दों की निगरानी और पहरेदारी का कार्य करता है। अपने वक्तव्य के अंत में मरांडी ने एक बार फिर रवींद्रनाथ महतो को बधाई दी और आशा जतायी कि उनके नेतृत्व में विधानसभा का संचालन सुचारु और प्रभावी तरीके से होगा।

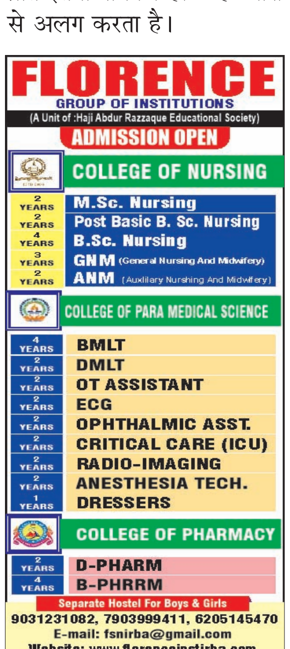

धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस

- 60 सांसदों का समर्थन, रिजिजू बोले, विपक्ष सभापति का अपमान करता है, बहुमत हमारे पास

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र के 10वें दिन मंगलवार को विपक्षी सांसदों ने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया। विपक्षी सांसदों ने राज्यसभा के महासचिव पीसी मोदी को धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस दिया। इस नोटिस में कांग्रेस, टीएमसी, आप, सपा, डीएमके, सीपीआइ, राजद समेत विपक्षी पार्टियों के 60 सांसदों के दस्तखत हैं। विपक्ष का आरोप है कि राज्यसभा के सभापति और उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ पक्षपातपूर्ण तरीके से सदन चलाते हैं और विपक्ष को बोलने नहीं देते। विपक्ष के नोटिस पर संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि विपक्ष हमेशा चेयर (सभापति) का अपमान करता है। वे सभापति के अधिकारों का

अनादर करते हैं। सदन में एनडीए के पास बहुमत है और हम सभी को चेयरमैन पर भरोसा है। वहीं, मंगलवार को 11 बजे दोनों सदनों की कार्यवाही शुरू हुई।

लोकसभा में हंगामे के चलते पहले 12 बजे तक सदन स्थगित कर किया गया। 12 बजे कार्यवाही शुरू होने के बाद भी अडाणी-जॉर्ज सोरोस मुद्दे पर हंगामा जारी रहा, स्पीकर ने बुधवार तक के लिए सदन को स्थगित कर दिया। हंगामे के चलते राज्यसभा की कार्यवाही भी बुधवार तक के लिए स्थगित कर दी गयी।

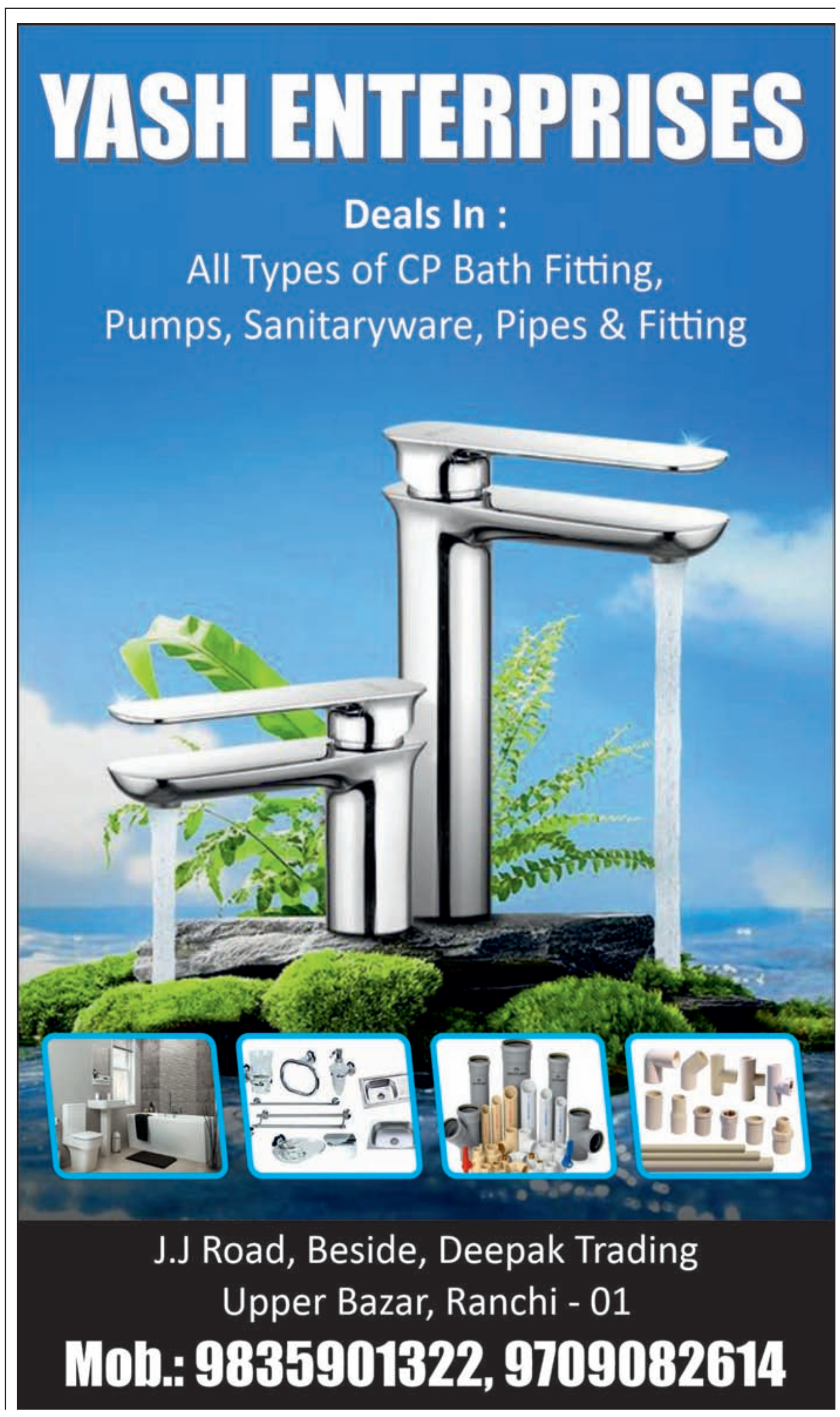

मंजे हुए राजनीतिज्ञ हैं राधाकृष्ण किशोर

- सदन में पूरा होमवर्क कर पहुंचते हैं
- विपक्ष को जवाब देने की तैयारी में जुटे

प्रशांत झा

रांची (आजाद सिपाही)। हेमंत सरकार के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर एक मंजे हुए राजनीतिज्ञ हैं। उन्हें राजनीति का लंबा अनुभव है। वह छह बार के विधायक तो हैं ही, साथ ही मंत्री और विधानसभा में सचेतक के पद को भी संभाल चुके हैं। नतीजतन सरकार के विभागों के कामकाज, संसदीय कार्य और विधानसभा की कार्यवाही का उन्हें लंबा अनुभव है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इसी अनुभव को देखते हुए उन्हें एक तरफ झारखंड की वित्तीय व्यवस्था को और बेहतर बनाने की जिम्मेदारी देते हुए वित्त मंत्री बनाया है, तो सदन की कार्यवाही में अहम भूमिका निभाने के लिए संसदीय कार्य मंत्री का भी पद दिया है। राधाकृष्ण किशोर अपनी जिम्मेदारी को निभाने में जुट गये हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व और मार्गदर्शन में उनका पहला कदम बुधवार को सदन में अनुपूरक बजट के रूप में दिखेगा, जबकि दूसरा कदम गुरुवार को इस पर चर्चा के दौरान दिखेगा।

कम बजट खर्च बन सकता है मुद्दा

विपक्ष की अपनी भूमिका है। सरकार को घेरने का प्रयास तो करेगा ही। अमूमन विपक्ष सरकार को अनुपूरक मांगने पर मुख्य बजट की राशि खर्च नहीं होने को लेकर घेरता है। इस वर्ष यह सही भी है कि बजट राशि अब तक बहुत कम खर्च हुई है। वित्त मंत्री इसके पीछे तर्क देते हुए कहा कि यह चुनावी वर्ष था। पहले लोकसभा और फिर विधानसभा चुनाव होने के कारण राज्य में आचार संहिता लगी हुई थी। जिस वजह से बजट राशि कम खर्च हुई है। विपक्ष तो विपक्ष है, वह केवल मंत्री की दलीलों से तो मान नहीं लेगा कि चुनाव था, इसलिए राशि कम खर्च हुई है। वित्त मंत्री का अपना अनुभव भी इस बात को जानता है। इस वजह से विपक्ष के सवालों का जवाब देने के लिए तैयारी कर रहे हैं। वह चुनावी वर्षों में बजट खर्च की स्थिति को खंगालने की कोशिश कर रहे हैं। खास कर 2019 में जब चुनाव हुए थे, राज्य में भाजपा की सरकार थी, जो आज विपक्ष में है। ऐसे में लगता है कि एक ओर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का मार्गदर्शन और दूसरी तरफ राधाकृष्ण किशोर जैसे अनुभवी सहयोगी के मिश्रण वाली सरकार सामने हो, तो निश्चय ही विपक्ष को किसी मुद्दे पर घेरने में शायद ही कामयाबी मिल पाये।

मंईयां सम्मान की राशि पर जवाब देने को तैयार

राधाकृष्ण किशोर की खासियत है कि वह सदन में होमवर्क कर पहुंचते हैं। बुधवार को उन्हें अनुपूरक बजट पेश करना है और गुरुवार को चर्चा में शामिल होना है। विपक्ष की घेरेबंदी को भी काटना है। इसके लिए वह पहले से ही होमवर्क करने में जुट गये हैं। अनुपूरक बजट में विभिन्न विभागों द्वारा राशि की मांग की जायेगी। खास कर कल्याण विभाग द्वारा मंईयां सम्मान योजना के लिए राशि की मांग होगी। वित्त मंत्री ने इसकी तैयार कर ली है। चालू वित्तीय वर्ष का अब तीन महीना बचा हुआ है। विभाग जो राशि योजना पर खर्च नहीं कर पायेगा, उनको सरेंडर करा कर उन राशियों का मंईयां सम्मान योजना के लिए उपयोग किया जायेगा। इसलिए इस मुद्दे पर तो विपक्ष सरकार को शायद ही घेर पायेगा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
194000 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Subscribe NOW

सर्राफा
सोना (बिक्री) 73,000 रु./10 ग्राम
चांदी 97,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, बुधवार, 11 दिसंबर, 2024
www.azadsipahi.in

ऐसे ही झारखंड की सियासी स्टार नहीं बन गयीं कल्पना सोरेन

विधानसभा सत्र के पहले दिन सादगी और विनम्रता से जीता सभी का दिल

झारखंड की छठी विधानसभा का पहला सत्र अभी चल रहा है। सत्र के पहले दिन नवनिर्वाचित विधायकों का शपथ ग्रहण संपन्न हुआ। सत्र के पहले दिन वैसे तो तमाम विधायकों का रंग-ढंग सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा था, लेकिन भीड़ से अलग यदि कोई चेहरा था, तो वह था कल्पना सोरेन का, जिन्होंने लगातार दूसरी बार गांडेय विधानसभा सीट से चुनाव जीता है। वह मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी और झारखंड के सबसे बड़े राजनीतिक शख्सियत शिबू सोरेन की बहू हैं, लेकिन विधानसभा के भीतर उन्होंने जिस सादगी और विनम्रता का परिचय दिया, उससे साफ हो गया कि कल्पना सोरेन ऐसे ही झारखंड की सियासी स्टार नहीं बनी हैं। उनमें कुछ ऐसा जरूर है, जो उन्हें दूसरों से अलग करता है। अपने व्यवहार से कल्पना सोरेन ने पूरे सदन का ध्यान तो खींचा ही है, आम लोग भी उनके मुरीद हो गये हैं। कल्पना सोरेन ने जिस तरह सिर पर पल्लू रख कर चाचा चंपाई सोरेन, बाबूलाल मरांडी और सरयू राय के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया, उससे साबित हो गया कि कल्पना सोरेन के जीवन में संस्कारों का कितना महत्व है और वह भारतीय परंपराओं से कितने गहरे रूप से जुड़ी हैं। इतना ही नहीं, रामेश्वर उरांव, राधाकृष्ण किशोर और मथुरा महतो जैसे बड़ों के पैर छूकर और अपने समकक्ष विधायकों का अभिवादन कर कल्पना सोरेन ने साबित कर दिया कि उनके लिए सियासत से ऊपर उनका संस्कार है। परिस्थितियों ने भले ही कल्पना सोरेन को सियासत की पथरीली जमीन पर उतारा है, लेकिन उन्होंने अपनी विनम्रता से इस पथरीली जमीन को बेहद नर्म बना दिया है। यह झारखंड के लिए बेहद सुखद है। कल्पना सोरेन की सादगी और उनकी विनम्रता के बारे में बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

झारखंड की छठी विधानसभा का चार दिवसीय पहला सत्र नौ दिसंबर को शुरू हुआ। इस विधानसभा में करीब दो दर्जन युवा चेहरे पहुंचे हैं और सत्र के पहले दिन इन सभी की गतिविधियों पर लोगों की खास निगाह थी, लेकिन जिस एक विधायक ने सभी का ध्यान खींचा, वह थीं कल्पना सोरेन, जो मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी होने के साथ गांडेय विधानसभा सीट से लगातार दूसरी बार विधायक बनी हैं। विधायक कल्पना सोरेन की सादगी और विनम्रता ने जहां सदन के बाकी सदस्यों को अभिभूत किया, वहीं सदन के बाहर आम लोगों को भी खासा प्रभावित किया। झारखंड के पहले राजनीतिक परिवार की बहू और मुख्यमंत्री की पत्नी होने के बावजूद कल्पना सोरेन पूरी तरह सहज और शालीन थीं। पोशाक से लेकर मेकअप तक कहीं भी कोई गुरूर या दंभ नहीं, एक आम भारतीय शिक्षित महिला की तरह कल्पना सोरेन के व्यवहार की चौतरफा तारीफ हो रही है। उन्होंने सिर पर पल्लू रख कर जिस तरह खुद से बड़े लोगों के पैर छूकर आशीर्वाद लिया, उससे जाहिर हो गया कि कल्पना सोरेन के भीतर उनके संस्कार बहुत गहरे जमे हुए हैं। चाहे बाबूलाल मरांडी हों या सरयू राय, चाचा चंपाई सोरेन हों या डॉ रामेश्वर उरांव या फिर राधाकृष्ण किशोर और मथुरा महतो, कल्पना ने हर किसी का पैर छुआ और आशीर्वाद लिया। सदन के भीतर और बाहर उनके व्यवहार में कहीं से कोई दर्प या आभामंडल दिखाई नहीं दिया। वह जितनी सहज थीं, आम तौर पर कोई नहीं रहता। इतना ही नहीं, वह जिससे भी मिलीं, उसे यथोचित सम्मान दिया। किसी का हाथ जोड़ कर अभिवादन किया, तो किसी से हाथ भी मिलाने से नहीं चूकीं। कल्पना सोरेन ने अपनी सादगी और विनम्रता से साबित कर दिया कि वह ऐसे ही झारखंड की सियासत की स्टार नहीं बन गयी हैं। कल्पना सोरेन उच्च शिक्षित हैं, लेकिन परंपरा और संस्कारों को उन्होंने तनिक भी नहीं छोड़ा है।

वास्तव में इस विधानसभा चुनाव ने झारखंड के राजनीतिक क्षितिज पर कल्पना सोरेन के रूप में एक ऐसे सितारे को जन्म दिया है, जिसने महज नौ महीने में अपनी रोशनी से इस पथरीले रास्ते को चमकदार बना दिया है। कल्पना सोरेन को भले ही परिस्थितियों ने सियासत में उतार है, लेकिन अपने संस्कार, व्यहार और चाल-ढाल से वह झारखंड की राजनीति में एक नयी लकीर खींच रही हैं।

इतने कम समय में कल्पना सोरेन के इतने लोकप्रिय होने की कई वजहें हैं। वह मुद्दों की बात करती हैं। वह तेजी से लोगों से जुड़ती हैं। परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम उनमें है। कल्पना ने झारखंड में सिर्फ झारखंड के ही मुद्दों को नहीं उठाया, बल्कि छत्तीसगढ़ में हसदेव जंगल की कटाई का मुद्दा भी उठाया, जहां से आदिवासियों को हटाया गया, मणिपुर में आदिवासी महिलाओं के साथ हुई बर्बरता का जिक्र बार-बार किया। इससे उनकी पहचान बड़ी होती गयी।

अब ऐसा कहा जाने लगा है कि कल्पना सोरेन के रूप में देश को एक बेहद लोकप्रिय महिला आदिवासी नेता मिलने वाली हैं। हालांकि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी संथाली हैं,और ओडिशा के मयूरभंज से ही आती हैं, लेकिन कल्पना सोरेन का जिस तरह से उदय हो रहा है, उससे लग रहा है कि वे राजनीति में लंबी पारी खेलने की तैयारी में हैं। इस बात में संदेह नहीं है कि कल्पना झारखंड में आदिवासियों की सबसे बड़ी महिला नेता बन गयी हैं। कल्पना सोरेन की राजनीति कहां जाती है, ये तो वक्त बतायेगा, लेकिन कल्पना सोरेन के जरिये झारखंड की राजनीति नये रास्ते पर आगे बढ़ गयी है, जिसका परिणाम सुखद ही होगा।

ऐसे हुआ कल्पना सोरेन का उदय

वह 31 मार्च की रात थी, जब कल्पना सोरेन अपने पति हेमंत सोरेन से मिलने इडी के दफ्तर में आयी थीं। और फिर चार मार्च की वह रात गिरिडीह के झंडा मैदान में झामुमो के स्थापना दिवस समारोह का मंच, जहां कल्पना सोरेन भर्रायी आवाज में हुंकार भर रही थीं। इस आवाज और इस अपील का झारखंड में जादुई असर हुआ। गले में हंसुली, एक हाथ में कड़ा, एक हाथ में घड़ी, हरे पाढ़ की साड़ी में जब कल्पना सोरेन मंच से लोगों का अभिवादन करती हैं, तो लोग पूरी गर्मजोशी से नारों और तालियों के साथ उनसे जुड़ जाते हैं। महज नौ महीने बाद 23 नवंबर की शाम रांची हवाई अड्डे पर जब हेमंत सोरेन अपनी स्टार प्रचारक का स्वागत करने पहुंचते हैं, तो झारखंड ही नहीं, पूरे देश को महसूस होता है कि कल्पना सोरेन अब केवल शिबू सोरेन की बहू और हेमंत सोरेन की पत्नी नहीं रहीं, बल्कि उनकी खुद की एक पहचान है।

हेमंत सोरेन के जेल जाने के बाद झामुमो बेहाल हो गया था। परिवार भी बिखरने की कगार पर था। ऐसे में कल्पना ने घर की देहरी से बाहर निकलने का फैसला किया और फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उन्होंने लोकसभा चुनाव में इंडी गठबंधन के लिए प्रचार की कमान संभाली और फिर विधानसभा चुनाव में भी उन्होंने जम कर प्रचार किया।

कहा जाता है कि हेमंत सोरेन यदि जेल नहीं जाते, तो शायद कल्पना कभी राजनीति में नहीं आतीं। मजबूरी में ही सही, उनका राजनीति में आना झारखंड के सियासी इतिहास का सुनहरा अध्याय साबित हुआ। उनकी रैलियों में हेमंत सोरेन से भी ज्यादा भीड़ उमड़ती रही। उनकी रैलियों की इतनी मांग थी कि प्रत्याशी की तरफ से कल्पना की सभाएं कराने की बाढ़ आ गयी थी। कल्पना ने राजनीति में जो लकीर खींची है, वह इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनसे पहले किसी महिला ने झारखंड में ऐसी लोकप्रियता हासिल नहीं की थी। झारखंड की राजनीति में महिलाएं आती रही हैं, लेकिन कल्पना अब आइकन बन चुकी हैं।

शिव शीतला मंदिर में 10 लाख के आभूषण की चोरी

- आक्रोशित श्रद्धालुओं ने चोरों को गिरफ्तार करने की मांग की
- एसपी ने कहा, जल्द होगा चोरी कांड का पर्दाफाश

कार्तिक कुमार

पाकुड़ (आजाद सिपाही)। शहर के प्रतिष्ठित शिव शीतला मंदिर में बीती रात मां शाकंभरी मंदिर में 10 लाख के आभूषणों की चोरी हो गयी है। चोरी की घटना की जानकारी मंगलवार की सुबह 5:45 बजे हुई। इसकी सूचना मंदिर समिति के लोगों को दी गयी। जानकारी मिलने पर सचिव अनिल टिब्रीवाल, संजय मोदी, जगदीश अग्रवाल, सह सचिव बबलू सिंह, सरवन टिब्रीवाल, मनोज डोकानिया, सुरेश अग्रवाल सहित दर्जनों लोग मंदिर पहुंचे और थाना प्रभारी को सूचना दी गयी। नगर थाना प्रभारी हरदेव प्रसाद ने चोरी की घटना की जांच पड़ताल की

और कहा कि बहुत जल्द फॉरेंसिक टीम को बुलाकर जांच की जायेगी और सीसीटीवी कैमरे से भी फुटेज की जांच की जायेगी। चोरी की घटना से आक्रोशित मारवाड़ी मोहल्ले की महिलाएं नगर थाना पहुंचकर चोरी की घटना के विरुद्ध थाना प्रभारी को आवेदन दिया और 24 घंटे के अंदर इसके खुलासे की मांग की। इधर, सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश अग्रवाल ने भी पुलिस अधीक्षक से शीतला मंदिर में हुई चोरी कांड की घटना का जल्द उजागर करने की मांग की है। वहीं जदयू के जिला अध्यक्ष गौतम मंडल ने मंदिर में चोरी की घटना को लेकर सवाल उठाया है और कहा कि मंदिर परिसर में पुलिस की तैनाती होने के बावजूद मंदिर में चोरी होना अपने आप में कई सवाल को खड़ा करता है। वहां तैनात पुलिस मंदिर की सुरक्षा कम और अपनी जेब भरने का काम ज्यादा करते हैं। इसकी जांच होनी चाहिए। इधर, एसपी ने मंदिर में हुई चोरी कांड की घटना को गंभीरता से लिया है और कहा कि बहुत जल्द इस कांड का पर्दाफाश होगा।

काउंसिल ने जिला एसोसिएशन से मांगे 50 रुपये प्रति वकालतनामा

जेएसबीसी सदस्य मनोज सिंह ने किया विरोध

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड स्टेट बार काउंसिल (जेएसबीसी) द्वारा जिला बार एसोसिएशन को प्रति वकालतनामा में 50 रुपये काउंसिल के लिए इकट्ठा करने के आदेश को लेकर किचकिच शुरू हो गयी है। स्टेट बार काउंसिल के सदस्य मनोज सिंह ने काउंसिल की ओर से वकालतनामा में 50 रुपये का इजाफा करने के आदेश पर अपना विरोध जाहिर करते हुए जेएसबीसी को पत्र लिखा है। काउंसिल अध्यक्ष को लिखे गये अपने पत्र में उन्होंने कहा है कि जिला बार एसोसिएशन से प्रत्येक वकालतनामा में काउंसिल के लिए 50 रुपये इकट्ठा करने का आदेश नियमसंगत नहीं है। इससे वित्तीय अनियमितता होने की आशंका है। साथ ही इससे जिला बार एसोसिएशन के साथ-साथ आम लोगों पर भी बोझ पड़ेगा।

प्रत्येक वकालतनामा में लिये जाने वाले शुल्क में काउंसिल के लिए भी 50 रुपये लेने का आदेश

दरअसल झारखंड स्टेट बार काउंसिल की ओर से 22 नवंबर को एक पत्र जारी किया गया था। झारखंड के सभी जिला बार एसोसिएशन को जारी किये गये पत्र में काउंसिल की ओर से यह निर्देश दिया गया था कि प्रत्येक वकालतनामा में लिये जाने वाले शुल्क में काउंसिल के लिए भी 50 रुपये लिये जायें। यह आदेश 2 जनवरी से प्रभावी होना है। लेकिन उससे पहले ही इस आदेश का विरोध शुरू हो गया है।

दीनानाथ पेंटे बने पीयूसीएल के नये अध्यक्ष

- झारखंड कन्वेंशन में 3 प्रस्ताव पारित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। लोक स्वतंत्र संगठन (पीयूसीएल) झारखंड का कन्वेंशन संपन्न हो गया। इस कन्वेंशन में दीनानाथ पेंटे को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। कार्यक्रम में आगामी दो वर्षों के लिए कार्य योजना निर्धारित की गयी। इसके अलावा पिछले कई प्रस्तावों पर चर्चा कर उन्हें जारी रखने का समर्थन किया गया और तीन नये प्रस्ताव पारित किये गये।

कौन-कौन से प्रस्ताव किये गये पारित : बिना किसी राजनीतिक दल को समर्थन या उनकी आलोचना किये हुए सांप्रदायिकता और मानवाधिकार हनन के किसी भी मामले में दूसरे समान विचारधारा वाले संगठनों के साथ तालमेल बनाकर सहयोग किया जायेगा। विचाराधीन कैदियों के मानवाधिकार हनन और जेल और न्यायिक सुधार की दिशा में निरंतर काम करते रहने की आवश्यकता है। झारखंड की नयी यूनिट के रूप में घाटशिला के गठन के लिए सहमति बनी। अब यह स्वतंत्र इकाई है जो पहले पूर्वी सिंहभूम में जमशेदपुर इकाई के अंतर्गत कार्यरत थी।

नवनिर्वाचित समिति के सदस्यों ने संभाला कार्यभार

सम्मेलन में पूर्व महासचिव अरविंद अविनाश ने नयी समिति को कार्यभार सौंपा। समिति के सभी नवनिर्वाचित सदस्यों ने अपना कार्यभार संभाल लिया है। शशि सागर वर्मा को महासचिव की जिम्मेदारी दी गयी है। वहीं, दशरथ महतो, विनोद कुमार पॉल, डॉ सुप्रियो भट्टाचार्य, डॉ पीएम टोनी को उपाध्यक्ष और जितेंद्र कुमार को सचिव बनाया गया है। निषाद खान और संजय कुमार बोस को संगठन सचिव और कमलेश साव को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। कार्यक्रम में पिछली समिति के उपाध्यक्ष सोलोमन ने राज्य की रिपोर्ट पेश की। भारत भूषण चौधरी ने सभा का संचालन किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन कुमारी लीना ने किया।

हाइकोर्ट ने कहा- संविदा कर्मियों को नहीं हटा सकते

- पेयजल विभाग में आउटसोर्स नियुक्ति के आदेश पर रोक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड हाइकोर्ट ने पेयजल स्वच्छता विभाग में अनुबंध पर कार्यरत कर्मचारियों को हटा कर आउटसोर्स कर्मियों की नियुक्ति करने के आदेश पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने

सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। दरअसल स्वच्छ भारत मिशन और जल जीवन मिशन में ब्लॉक वॉश कोआर्डिनेटर के पद पर कार्य कर रहे लोगों को हटाकर पूरे राज्य में आउटसोर्स के जरिए नये लोगों को रखने का आदेश इसी वर्ष 16 सितंबर को हुआ था। जिसके खिलाफ राम किशुन एवं अन्य ने हाइकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। इस मामले की सुनवाई हाइकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस डॉ एसएन पाठक की कोर्ट में हुई। सुनवाई के दौरान उन्होंने कहा कि संविदा कर्मियों को नहीं हटा सकते। अधिवक्ता नवीन कुमार ने प्रार्थियों की ओर से बहस की।

राहुल गांधी की व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट पर सुनवाई पूरी, आदेश 23 को

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी से जुड़े मानहानि मुकदमे में कोर्ट में व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट की मांग वाली याचिका पर मंगलवार को रांची के एमपी/एमएलए के विशेष न्यायाधीश सार्थक शर्मा की अदालत में सुनवाई पूरी हो गयी। मामले में कोर्ट अपना आदेश 23 दिसंबर को सुनायेगी।

राहुल गांधी मामले में व्यक्तिगत पेशी से छूट चाहते हैं। इसको लेकर उनकी ओर से 14 अगस्त को सीआरपीसी की धारा 205 के तहत याचिका दाखिल की है। दरअसल 2018 में कांग्रेस अधिवेशन में राहुल गांधी ने अमित शाह के खिलाफ टिप्पणी की थी, जिसको लेकर रांची में नवीन झा की ओर से शिकायत दर्ज करायी गयी थी।

विकास का रोड मैप तैयार करने के लिए मंथन जल्द

- सीएस कार्यालय ने विभागों से रिपोर्ट मांगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड के विकास के लिए रोड मैप तैयार करने के लिए मुख्य सचिव स्तर पर जल्द ही विस्तृत बैठक की जायेगी। सीएस कार्यालय ने इस संबंध में सभी विभागों से योजना बजट के विरुद्ध निर्गत स्वीकृत्यादेश, आवांटनादेश,

व्यय की स्थिति एवं अगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए विभागों द्वारा रोड मैप निर्धारण के लिए किये जा रहे कार्यों पर रिपोर्ट मांगी गयी है। मुख्य सचिव अलका तिवारी इसकी समीक्षा करेंगी। यह प्रयास हो रहा है कि 31 मार्च के पहले बजट उपबंध की राशि खर्च की जाये।

जो राशि खर्च नहीं हो सकी उसे सरेंडर भी कराने को कहा जायेगा। सड़क, भवन, पुल, डैम, आवास योजना, कृषि, उद्योग पर विशेष रूप से फोकस किया जायेगा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
194000 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	20.0 °c	13.4 °c
सूर्यास्त (आज) :		17.03 बजे
सूर्योदय (कल) :		06.19 बजे

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिले सांसद नलिन सोरेन

मंगलवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और विधायक कल्पना सोरेन से कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में सांसद नलिन सोरेन और उनके परिजनों ने मुलाकात कर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

प्राइवेट नर्सिंग होम, हॉस्पिटल और डायग्नोस्टिक सेंटर की होगी निगरानी

नियामक संस्था का होगा गठन : इरफान अंसारी

अब गरीब मरीजों को इलाज के अभाव में जान नहीं गंवानी पड़ेगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य के प्राइवेट नर्सिंग होम, हॉस्पिटल और डायग्नोस्टिक सेंटरों की मनमानी पर रोक लगाने की कवायद शुरू कर दी गयी है। इस संस्थाओं को कंट्रोल करने के लिए स्टेट लेवल पर नियामक संस्था का गठन किया जायेगा। इसका एलान राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने किया है। उन्होंने कहा कि नियामक संस्था आम नागरिकों के हितों की सुरक्षा के साथ स्वास्थ्य सेवाओं की निगरानी भी करेगी। उन्होंने जोर देकर कहा है कि आम लोगों के हितों के साथ किसी तरह का अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। अब गरीब मरीजों को इलाज के अभाव में जान नहीं गंवानी पड़ेगी।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

- **मेष** — रोग-शोक-दुःश्चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा,सुख-सुविधा के साधन बनेंगे।
- **वृष** — परिश्रम प्रयत्न से जटिल समस्या का समाधान मिलेगा,कर्मक्षेत्र में अनुकूल वातावरण।
- **मिथुन** — रोजी-रोजगार में सफलता,माता पिता का सहयोग, प्रभावशाली व्यक्तियों से वांछित सहयोग मिलेगा।
- **कर्क** — विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकाश होगा,परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी।
- **सिंह** — कठिन परिश्रम-प्रयत्न से आजीविका के क्षेत्र में सपलता, आत्मबल एवं कर्मबल में वृद्धि होगी।
- **कन्या** — नौकरी-व्यापार की स्थिति में सुधार, नई आशाओं का उदय होगा, धैर्य व साहस से सभी कार्य पूरे होंगे।
- **तुला** — परिस्थितियों में सुधार,नौकरी में बदलाव होने की संभावना,विविध समस्याओं का समाधान।
- **वृश्चिक** — स्वास्थ्य में सतर्कता आवश्यक है,राजनीतिक सम्पर्क प्रभाव बढ़ेगा, चिन्तित मनोरथ की सिद्धि होगी।
- **धनु** — आत्मविश्वास की वृद्धि,रुके कामों में प्रगति, सामाजिक-राजनीतिक व्यक्तियों के लिए कुछ कर दिखाने का पर्याप्त अवसर मिलेगा।
- **मकर** — आजीविका संबंधी चिंता दूर होगी, साहसिक कार्य में सफलता,संतान पक्ष से शुभ समाचार की प्राप्ति।
- **कुंभ** — लाभकारी प्रयास सफल होगा, स्वजन-मित्रों का सहयोग, स्वाभिमान और स्वावलम्बन बढ़ेगा।
- **मीन** — चिन्तनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी, परिश्रम का फल मिलेगा, कर्मक्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करने का अवसर मिलेगा।

राज्य में विकास की राह में खड़े अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं को पहुंचना प्राथमिकता : चमरा लिंडा

चमरा लिंडा ने मोरहाबादी स्थित कल्याण कॉम्प्लेक्स कार्यालय का भ्रमण किया

राज्य के आदिवासी कल्याण आयुक्त अजय नाथ झा ने मंत्री का स्वागत किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के मंत्री चमरा लिंडा ने मंगलवार को मोरहाबादी स्थित कल्याण कॉम्प्लेक्स कार्यालय का भ्रमण किया। मौके पर आदिवासी कल्याण आयुक्त अजय नाथ झा तथा अन्य अधिकारियों ने उनका अभिवादन किया। इस अवसर पर मंत्री चमरा लिंडा का कार्यालय में उपस्थित सभी कर्मियों ने भी स्वागत किया। मौके पर मंत्री चमरा लिंडा ने कल्याण परिसर के सभी कार्यालयों के सभी कर्मियों से परिचय लिया और विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं के अद्यतन कार्य प्रगति की जानकारी ली।

इस अवसर पर राज्य के आदिवासी कल्याण आयुक्त अजय नाथ झा, प्रबंध निदेशक नेलसम बागे, प्रबंध निदेशक सुधीर बारा, टीआरआइ से उपनिदेशक मोनिका टूटी सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

योजनाओं का लाभ समय से लाभुकों तक पहुंचे

इस अवसर पर मंत्री चमरा लिंडा ने कहा कि अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं का लाभ विकास की राह में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। मंत्री चमरा लिंडा ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी योजनाओं का लाभ ससमय पूरी पारदर्शिता के साथ लाभुकों तक पहुंचे इस निमित्त प्रतिबद्धता के साथ कार्यों का संपादन करें। सभी प्रकार की छात्रवृत्ति राशि का वितरण, साइकिल वितरण, मुख्यमंत्री रोजगर सृजन सहित विभाग द्वारा चलाये जा रहे अन्य महत्वकांक्षी योजनाओं का पूर्ण लाभ पात्र गरीब जरूरतमंद लोगों तक पहुंचे यह हम सभी की जिम्मेवारी है। उन्होंने कहा कि राज्य के भीतर अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के बच्चों को भी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का समान अवसर प्रदान करना राज्य सरकार की प्राथमिकता है।

पूर्व तट रेलवे

फाइल सं. DRM/Engg/KUR/24-25/ E-Tender/88, दिनांक : 05.12.2024

निविदा सं. e-Tender-CENTKUR-257-2024, दिनांक : 27.11.2024

विवरण : खोरधा रोड मण्डल के BOXN डिपो/ अनुगुल में कंप्रेसर शेड, CTRB एवं RTR रूम, सिक लाइन कवर शेड रूफ के लिए शीट एवं अन्य सुविधा का प्रावधान।

कार्य की अनुमानित लागत : ₹ 250.64 लाख, EMD : ₹ 2,75,300/-, पूरा होने की अवधि: 10 (दस) महीने।

निविदा बंद होने की तिथि व समय : दिनांक 20.12.2024 को 1500 बजे।

ऐसी ई-निविदा के तहत डाक/कूरियर/फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म (Firm) के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

द्रष्टव्य : प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई-निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन / शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की कम से कम 10 (दस) दिन पहले वेबसाइट का पुनःअवलोकन करें। निविदाकारों/बोलीदाताओं के पास अवश्य क्लास-III डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र होना चाहिए और वे IREPS पोर्टल में अवश्य पंजीकृत होना चाहिए। केवल पंजीकृत निविदाकार/बोलीदाता ई-टेंडरिंग में शामिल हो सकते हैं।

मण्डल रेलवे प्रबंधक (इंजीनियरिंग), खोरधा रोड

PR-788/P/24-25

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए मुख्य संकेत एवं दूर संचार अभियंता/निर्माण/पूर्व मध्य रेल/महेंद्रुघाट/पटना निम्नलिखित कार्य हेतु ऑनलाइन ई-निविदा के माध्यम से खुली निविदा आमंत्रित करते हैं:

ई-निविदा संख्या: एस एण्ड टी-सी-डीएचएन-22R

1. कार्य का नाम: एस एंड टी उपयोगिता पूर्व मध्य रेलवे के धनबाद डिवीजन में इंजीनियरिंग निर्माण कार्य के संबंध में गोमोह-पीकेए, जीएमओ-सीआरपी-जेएनएन, पीटीआरयू- टीकेएस, कुजू-आरआरएमई, पीकेए- पीईएच या उप सीएसटीई/कॉन/डीएचएन के अधीन किसी अन्य स्थान पर सिग्नलिंग केबल, लोकेशन बॉक्स, क्वाड, ओएफसी आदि का स्थानांतरण। **2. अनुमानित लागत:** रुपया 5,49,39,568.72 **3. अमानत राशि:** रु. 4,24,700.00 **4. निविदा प्रपत्र का मूल्य:** शून्य **5. कार्य निस्पादित करने का समय:** 24 महिना **6. ई निविदा ऑनलाइन जमा करने का अंतिम दिन एवं समय:** 30.12.2024 को 15:00 बजे तक। विस्तृत निविदा सूचना एवं दस्तावेज भारतीय रेल की वेबसाइट http://www.ireps.gov.in पर देखने के लिए उपलब्ध है।

उप मुख्य संकेत एवं दूर संचार अभियंता/निर्माण
पूर्व मध्य रेलवे, धनबाद

पीआर/01668/सीडीएचएन/एसएण्डटी/टी/24-25/32

बांग्लादेश के हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ मुखर हुए कई संगठन

सर्व सनातन समाज का आक्रोश मार्च, राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार और मानवाधिकार उल्लंघन के खिलाफ देशभर में प्रदर्शन चल रहा है। जम्मू-कश्मीर, नयी दिल्ली, मुंबई, असम, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक समेत देश के कई राज्यों में लोग रैलियां निकाल रहे हैं। इधर झारखंड की राजधानी रांची में सर्व सनातन समाज के नेतृत्व चिन्मय मिशन अखिल भारतीय संत समाज समिति, मेन रोड गुरुद्वारा, श्वेतांबर जैन समाज, बौद्ध समाज, आदिवासी समाज, बंगाली एसोसिएशन, जनजाति विकास परिषद, विद्यार्थी परिषद, विश्व हिंदू परिषद, एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण केंद्र के कार्यकर्ताओं सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के हजारों की संख्या में लोगों ने बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अत्याचार और उनके मानवाधिकार हनन के खिलाफ मोरहाबादी मैदान से फिरायालाल होते हुए राजभवन तक धरना प्रदर्शन किया। इसके बाद राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा।

हिंदुओं पर हो रहा है अत्याचार

आक्रोश सभा का संचालन विजय कुमार ने किया। आक्रोश सभा में सामाजिक कार्यकर्ता सोमा उरांव ने कहा कि आज हम सब बांग्लादेश के अल्पसंख्यक हिंदुओं को अपना समर्थन देने के लिए एकजुट हुए हैं और मांग करते हैं कि जिहादियों पर कड़ी करवाई हो। आज जो स्थिति बांग्लादेश में है अगर हिंदू समाज नहीं जागा तो झारखंड में भी वह स्थिति बहुत जल्द होगी। भारत को अब एक हिंदू राष्ट्र घोषित करना होगा। समाज सेवी राकेश लाल ने संबोधित करते हुए कहा कि बांग्लादेश भारत का ही अंग था जिसे जिहादियों ने छीन लिया था, पाकिस्तानी सेना ने बांग्लादेशियों पर हमला और महिलाओं के साथ दुष्कर्म किया था तब उनकी रक्षा भारत ने ही की थी। आज उसी बांग्लादेश के मुसलमानख हिंदुओं के साथ अत्याचार कर रहे हैं, उनको मार रहे हैं। आज जिस इस्कॉन के लोगों ने उन्हें रोटी दी, बंग बंधु ने बांग्लादेश को आजादी दी, उन्हीं के कार्यकर्ताओं के खिलाफ अत्याचार किया जा रहा है। उन्होंने सर्व समाज को आह्वान करते हुए कहा कि इस अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायें। प्रांत मंत्री विश्व हिंदू परिषद के मिथलेश्वर मिश्र ने कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार को देखकर वेदना होती है, इससे हम सभी आक्रोशित हैं। हिंदू समाज बसुधैव कुटुंबकम में विश्वास करने वाला संप्रदाय है। हम सभी अहिंसा के पुजारी हैं लेकिन जब हमें उकसाया जाता है तो हम इसका विरोध करते हैं।

राज्यपाल को ज्ञापन सौंपने वालों में सर्व सनातन समाज के प्रतिनिधिमंडल में भूतेशानंद जी महाराज, सरदार बिक्रम सिंह, पवन लामा, विनोद जैन, स्वामी परिपूर्णानंद महाराज, विनोद जालान, राकेश लाल, पवन मंत्री, शेखर चौधरी, रवि मुंडा, विनोद गाडयान, प्रशुन रायपत, सुनीता गुप्ता शामिल थे।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमले को जल्द से जल्द रोकने की मांग की

रांची (आजाद सिपाही)। विराट हिंदू आक्रोश मार्च में मुख्य रूप से विधायक सीपी सिंह, श्री महावीर मंडल रांची के पूर्व अध्यक्ष राजीव रंजन मिश्रा और अध्यक्ष रवि कुमार पिंकू एवं श्री चैती दुगार्पूजा महासमिति के महामंत्री गोपाल पारीक शामिल हुए। श्री मिश्रा ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की कड़ी निंदा की एवं बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमले को जल्द से जल्द रोकने की मांग की। श्री मिश्रा ने बांग्लादेश सरकार से हिंदुओं की सुरक्षा की मांग की।

बांग्लादेश का अस्तित्व भारत के कारण है

सामाजिक कार्यकर्ता विनोद गाड्यान ने कहा कि दुनियाभर के देशों ने बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचार का विरोध किया है। उन्होंने पूरी दुनिया से मांग करते हुए कहा कि बांग्लादेश में हो रहे मानवाधिकार हनन के खिलाफ पूरी दुनिया आवाज उठाये। राजेंद्र कृष्ण ने कहा कि बांग्लादेश का अस्तित्व भारत के कारण है, लेकिन वहां हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है, वह काफी अफसोसजनक है। विश्व मानवाधिकार आयोग से आह्वान करते हुए कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार को जल्द से जल्द समाप्त किया जाये। इस्कॉन के सदस्य प्रकाश ने उपस्थित जनसमूह से हिंदुओं को जगाने का आह्वान किया और बांग्लादेश में हो रहे क्रूरता के खिलाफ एकजुट होने पर बल दिया। विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री याज्ञवल्क्य ने कहा कि बांग्लादेश के उदय में लाखों भारतीयों ने अपनी शहादत दी थी, आज उनके साथ अत्याचार हो रहा है। आज बांग्लादेश में एक विचार पनप गया है कि जिसकी आबादी ज्यादा होगी वह कम आबादी वाले समाज के लोगों को जिंदा रहने नहीं देंगे। भारत एक संवेदनशील देश है, दुनिया में जहां कहीं भी लोगों के साथ अत्याचार होता है, भारत अत्याचार के खिलाफ उनके साथ खड़ा होता है। सुनीता कुमारी गुप्ता ने कहा कि बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार की जितनी निंदा की जाये कम है, बांग्लादेश के मुसलमान हिंदुओं को कम आंक रहे हैं जो बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। रवि शंकर ने हिंदू समाज को धन्यवाद दिया और कहा कि आज हिंदू समाज एकजुट होकर बांग्लादेश के हिंदुओं के समर्थन में खड़े हुए यह काबिले तारीफ है।

कार्यालय नगर परिषद, सिमडेगा।

द्वितीय डाक बन्दोबस्ती आमंत्रण सूचना संख्या :-22/2024-25

वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिए गांधी मेला सिमडेगा का डाक दिनांक 16.12.2024 को 12:00 बजे अपराह्न नगर परिषद सिमडेगा के सभा कक्ष में होगी। किसी कारणवश उक्त तिथि को डाक नहीं होने पर इस की अगली तिथि का निर्धारण अलग से किया जायेगा, जिसकी सूचना उसी दिन नोटिस बोर्ड में दे दिया जायेगा। मेला की अवधि 26 जनवरी 2025 से 31 जनवरी 2025 तक होगी।

सुरक्षित जमा राशि एवं जमानत की राशि निम्नलिखित है:–

क्र0	सैरात का नाम	डाक की न्यूनतम राशि	जमानत की राशि
1	गाँधी मेला, सिमडेगा	52,40,550.00	5,24,055.00

इच्छुक व्यक्ति निश्चित तिथि एवं समय पर डाक में निम्न शर्तो के साथ भाग ले सकते हैं। डाक बोलते समय निम्नवत कागजातों को दाखिल करने के पश्चात ही डाक में भाग लिया जा सकता है :–

1. अद्यतन आचरण प्रमाण पत्र उपायुक्त/पुलिस अधीक्षक स्तर से विगत छः माह के अन्दर का निर्गत हो/निवास से संबंधित आधार कार्ड/होल्डिंग टैक्स संबंधित रसीद की छायाप्रति दाखिल करना अनिवार्य होगा।
2. आचरण प्रमाण–पत्र का मूलप्रति कार्यालय में एक दिन पूर्व जमा करना अनिवार्य होगा।
3. डाक कक्ष में डाक वक्ता के द्वारा किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार किये जाने पर कठोर कार्रवाई की जायेगी।
4. विगत तीन वित्तीय वर्षो का आयकर जमा का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है एवं पैन कार्ड की छायाप्रति संलग्न करना आवश्यक है।
5. डाक बोलने के पूर्व सरकारी सुरक्षित जमा राशि का 10 प्रतिशत राशि जमानत के रूप में कुल 5,24,055.00 रूपये एक दिन पूर्व कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद सिमडेगा के नाम से DD के रूप में कार्यालय अवधि में जमा करना अनिवार्य होगा, जिसकी पावती दी जायेगी।
6. उच्चतम डाक वक्ता को एक मुश्त में डाक के 24 घंटे के अन्दर डाक की संपूर्ण राशि जमा करना अनिवार्य होगा।
7. संवेदक के द्वारा किसी भी दुकानदार से कोई अवैध राशि की वसूली नहीं करनी होगी। शिकायत प्राप्त होने पर विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।
8. उच्चतम डाक वक्ता द्वारा डाक की राशि जमा करने के पश्चात किसी भी स्थिति में राशि की वापसी नहीं की जाएगी।
9. एकरारनामा कराने के पश्चात ही वसूली कार्या देशनिर्गत किया जायेगा ।डाक धारी द्वारा मेला परिसर की साफ–सफाइ प्रतिदिन कराया जायेगा।
10. उच्चतम डाक वक्ता द्वारा संपूर्ण राशि जमा नहीं करने की स्थिति में द्वितीय डाक वक्ता से एकरारनामा करते हुये बन्दोबस्ती उनके नाम से की जाएगी एवं असफल डाक वक्ता को तीन वर्ष हेत डाक में सम्मिलित करने से वंचित कर दिया जाएगा एवं जमानत की राशि जब्त कर ली जायेगी। द्वितीय डाक वक्ता की सुरक्षित जमानत राशि प्रथम डाकवक्ता के साथ एकरारनामा उपरान्त वापस की जायेगी।
11. डाक की बोली में सिर्फ डाकवक्ता ही भाग लेंगे।डाक में भाग लेने वाले डाक वक्ता शपथ पत्र (नोटरी/कार्यपालक दण्डाधिकारी के कार्यालय से निर्गत), DD कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद सिमडेगा के नाम से निर्गत एवं आचरण प्रमाण–पत्र (उपायुक्त/पुलिस अधीक्षक द्वारा निर्गत) के साथ दिनांक 14.12.2024 दिन शनिवार अपराह्न 05:00 तक नगर परिशद कार्यालय में जमा करेंगे। इस अवधि के बाद किसी प्रकार दावा मान्य नही होगा।
12. दुकानदारों से वसूली की जाने वाली राशि पूर्ववत्त रहेगी। दिनांक 16.12.2024 को होने वाले गाँधी मेला का डाक में सिर्फ वही यक्ति भाग ले सकेंगे, जो उपरोक्त कंडिका 11 के सभी शर्तो को पूर्ण करेंगे।
13. ऐसे संवेदक/डाक वक्ता जिनका पूर्व के किसी भी सैरात की राशि बकाया है वे डाक की बोली में भाग नहीं ले सकेंगे। इस संबंध मेंनोटरी/कार्यपालक दण्डाधिकारी द्वारा निर्गत शपथ पत्र समर्पित करना अनिवार्य है।
14. डाक की बोली के प्रत्येक चक्र में 500.00 (पाँच सौ) रूपये की राशि की वृद्धि करनी होगी।
15. बिना कारण बताए डाक को अस्वीकृत करने एवं डाक की शर्तो में संशोधन करने का अधिकार अधो हस्ताक्षरी के पास सुरक्षित रहेगा।
16. डाक वक्ता डाक की बोली में भाग लेने हेतु प्रवेश करने के उपरान्त डाक बोली की समाप्ति के पश्चात ही बाहर जा सकेंगे।
17. डाक वक्ता यह सुनिश्चित करेंगे कि मेला के दौरान NH के किनारे जाम न हो और यातायात बाधित न हो।
18. डाक वक्ता के द्वारा पार्किंग की व्यवस्था स्वयं की जाएगी। किसी तरह की शिकायत प्राप्त होने पर दण्ड के साथ कार्रवाई की जाएगी।
19. किसी भी विवाद का निष्पादन सक्षम न्यायालय सिमडेगा के क्षेत्राधिकार में होगा।

ह0/-
प्रशासक
नगर परिषद, सिमडेगा।

ज्ञापांक : 2394(ii) दिनांक : 10.12.2024

जनसमस्या नहीं सुलझी, तो जनवरी में होगा बड़ा आंदोलनः बटेश्वर मेहता

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। बरकट्ठा विधानसभा के निर्दलीय प्रत्याशी बटेश्वर प्रसाद मेहता ने मंगलवार को उपायुक्त नैंसी सहाय से मिल कर कई जनसमस्याओं से उन्हें अवगत करवाया। समस्याओं में इचाक प्रखंड के बोधीमारी कुरहा मैदान में मास्ट लाइट को लगाने, जिले में बढ़ते अपराध बढ़ते हत्या की घटना, नशाखोरी सहित कई समस्याओं से अवगत कराया। उपायुक्त नैंसी सहाय ने श्री मेहता को आश्वस्त किया कि जल्दी ही समस्याओं का निराकरण होगा। साथ ही अपराध पर अंकुश लगाने की बात कही। श्री मेहता ने अपर समाहर्ता संतोष सिंह से मिलकर एक पत्र के माध्यम से जिले भर के प्रखंड कार्यालय में हो रहे धांधली को लेकर जन समस्या से जुड़ी बातों को रखा। प्रखंड कार्यालय में कैंप लगा कर म्यूटेशन संबंधित कार्यों को सरल कर जनता के कार्यों को सर्व सुलभ बनाने की बात को रखा।

सीजीएल परीक्षा रद्द कराने को लेकर बवाल, लाठी चार्ज

नेशनल हाइवे किया जाम दौरान सभी दुकानों और प्रतिष्ठानों को बंद कराया

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। जेएसएससी सीजीएल परीक्षा और रिजल्ट रद्द कराने को लेकर हजारीबाग में हजारों छात्र सड़क पर उतर विरोध जताया। गांधी मैदान से निकल कोर्रा चौक होते सभी भारत माता चौक पहुंचे। इस दौरान सभी दुकानों और प्रतिष्ठानों को बंद कराया और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। फिर भारत माता चौक पहुंच एनएच को जाम किया। इस दौरान छात्रों का आक्रोश देखते बन रहा था। सभी हाथों में तख्तियां लिए विरोध जता रहे थे। सभी ने एक स्वर में कहा कि जेएसएससी सीजीएल में गड़बड़ी हुई है, जमकर भ्रष्टाचार हुआ है। बिना कटअप मार्क्स जारी किये हुए रिजल्ट निकाला गया है। रिजल्ट में धांधली हुई है, पेपर लीक के बाद भी परीक्षा को कैंसिल नहीं किया गया। हजार की संख्या में छात्र सड़क पर बैठ सड़क को घंटों जाम किया। इस दौरान पुलिस मूकदर्शक बनी रही। छात्रों का कहना था कि अब जेएसएससी कार्यालय का घेराव करेंगे और जब तक न्याय नहीं मिला तब यह जारी रहेगी। आंदोलनकारी नेता उदय मेहता ने कहा कि आज जेएसएससी सीजीएल परीक्षा रद्द कराने को लेकर हजारीबाग में आक्रोश रैली निकला है। हमलोगों ने सबों से निवेदन किया था कि अपने और अपने बच्चों के भविष्य के लिए आक्रोश रैली में शामिल हों। यह आक्रोश रैली पूर्णतः शांति पूर्वक निकला है। सड़क पर बैठ धरना दे रहे छात्र-छात्राओं ने पूरे धरने में टायर जला कर विरोध जारी रखा। उन्हें हटाने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। उसके बाद धरने पर बैठे छात्र-छात्रा आक्रोशित हो गये और पुलिस पर पथराव शुरू कर दिया। पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए धरना स्थल से छात्र-छात्राओं को खदेड़ा। इस दौरान यातायात पुलिस की जिप्सी समेत कई दूसरे वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गयी। खबर लिखे जाने तक पुलिस जाम छुड़वाने में लगी थी। इधर सदर एसडीओ अशोक कुमार ने कहा कि हमसे शांति पूर्वक विरोध-प्रदर्शन का आदेश मांगा गया था जिसे हमने दिया था। मगर छात्र-छात्रा आक्रोशित होकर विरोध प्रदर्शन किया और घंटों सड़क को जाम किया। जिससे सड़क से गुजरने वाली हजारों गाड़ियां जाम में फंसी रही।

पथराव के बाद पुलिस ने किया लाठी चार्ज

सीजीएल परीक्षा परिणाम को रद्द करने के लिए आंदोलन कर रहे छात्रों पर पुलिस ने हजारीबाग में बल प्रयोग करते हुए लाठी चार्ज किया है। वहीं उग्र छात्रों ने पुलिस पर जमकर पथराव किया है। जिसमें एक दर्जन से अधिक गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई है। जो गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई है उसमें पुलिस की गाड़ी और पब्लिक ट्रांसपोर्ट की गाड़ी भी शामिल है। लगभग 4 घंटे तक छात्रों ने एनएच जाम रखा। प्रशासन के समझाने के बावजूद छात्र इस बात को लेकर अड़े हुए थे कि परीक्षा परिणाम रद्द किया जाये। जब स्थिति बिगड़ी हुई देखी तो प्रशासन ने लाठी चार्ज करते हुए भीड़ को तितर-बितर किया। वहीं उग्र छात्रों ने इस दौरान जमकर पथराव किया है। जिसमें एक दर्जन से अधिक गाड़ी क्षतिग्रस्त किया गया। जिसमें पुलिस की गाड़ी भी शामिल है। यही नहीं जाम में फंसे बस और छोटे चार पहिया गाड़ी को भी निशाना बनाया गया। लगभग आधे घंटे तक पुलिस ने बल प्रयोग करते हुए भीड़ को तीतर बीतर किया है। इस दौरान पुलिस ने आंसू गैस का भी इस्तेमाल किया।

घटना स्थल पर एसडीओ सदर अशोक कुमार, एडिशनल एसपी अमित कुमार, पांच थाना के थाना प्रभारी भी घटनास्थल पर मौजूद रहे। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस बल भी तैनात की गयी। घटना पर हजारीबाग सदर एसडीओ अशोक कुमार ने कहा कि बहुत समझाने के बावजूद स्थिति नियंत्रण के बाहर गयी। तब भीड़ को तीतर बीतर करने के लिए हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। छात्रों की ओर से भी पथराव किया गया है। उन्होंने कहा कि विधि संवत कार्रवाई भी की जायेगी।

विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं: प्रदीप प्रसाद

जेएसएससी सीजीएल परीक्षा रद्द करने को लेकर विद्यार्थियों का आक्रोश झलक रहा था। उनके समर्थन में हजारीबाग के सदर विधायक प्रदीप प्रसाद भी भारत माता चौक पर पहुंचे। उन्होंने प्रदर्शनकारियों के साथ धरना स्थल पर बैठकर संवाद किया और उनकी मांगों को गंभीरता से सुना। सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा झारखंड के विद्यार्थियों के भविष्य के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। मैं सदन में भी इस मुद्दे को पुरजोर तरीके से उठाने के लिए तैयार हूं। आज मुझे सदन में बोलने का मौका नहीं दिया गया, लेकिन मैं वहां एम-सील लेकर गया था, ताकि यह बता सकूं कि परीक्षा लीक की समस्या को रोकने के लिए हमें और मजबूत और प्रभावी कदम उठाने होंगे। उन्होंने आगे कहा हेमंत सरकार और संबंधित विभागों को इस बात को समझना होगा कि इन धांधलियों के चलते लाखों युवाओं का भविष्य

अंधकारमय हो रहा है। मैं विद्यार्थियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा हूं और उनकी हर जायज मांग का समर्थन करता हूं। प्रदीप प्रसाद ने छात्रों के साथ सड़क पर बैठकर उनकी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आंदोलनरत युवाओं को यह भरोसा दिलाया कि उनकी आवाज को दबने नहीं दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि झारखंड की भर्तियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करना और परीक्षा प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाना उनकी प्राथमिकता है।

बड़कागांव में वाहनों की हुई जांच

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बड़कागांव एसडीपीओ पवन कुमार के निर्देशानुसार बड़कागांव थाना गेट के पास ड्राइवरी लाइसेंस, बिना हेलमेट के मोटरसाइकिल चलाने वाले और कम उम्र के चालकों का जांच पड़ताल किया गया। जांच के दौरान कम उम्र के चालकों को भी पकड़ कर उनके अभिभावकों को बुलाकर उन्हें हिदायत दी गयी। इस कार्य में मुख्य रूप से थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल, ए एस आई बसंत प्रसाद, विकास कुमार, राहुल सिंह समेत पुलिस जवानों ने मुख्य भूमिका निभायी। एसडीपीओ पवन कुमार ने कहा कि क्षेत्र में बिना हेलमेट को चलने वाले, कम उम्र के चालकों और बिना ड्राइवरी लाइसेंस वाले चालक पकड़े जाने पर कार्रवाई की जायेगी। ग्रामीणों को जागरूकता करने के लिए आज जांच पड़ताल की गयी। इसके बाद अगर कोई कानून का उल्लंघन करेंगे तो उन पर कार्रवाई होगी।

बांस हस्तशिल्पकारों का प्रशिक्षण शुरू

कोडरमा (आजाद सिपाही)। उद्योग विभाग, मुख्यमंत्री लघु और कुटीर उद्यम विकास के कोडरमा द्वारा सोसायटी फॉर रूरल एंड एजुकेशन एडवांसमेंट के संयुक्त तत्वावधान कोडरमा प्रखंड के झुमरीगांव में विशेष घटक योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति बांस हस्तशिल्प कारों के विकास के लिए 25 दिवसीय हस्तशिल्पकार प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। प्रशिक्षण के मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री लघु और कुटीर उद्यम विकास बोर्ड के अघनु उरांव, हजारीबाग से आए प्रशिक्षण एजेंसी सोसायटी फॉर रूरल एंड एजुकेशन एडवांसमेंट के रामनाथ महली, प्रखंड उद्यमी समन्वयक अभिनाश मिश्रा और झुमरी पंचायत के मुखिया श्याम सुंदर दास और उप मुखिया मौजूद रहे। इस अवसर पर जिला उद्यमी समन्वयक अघनु उरांव ने कहा कि शिल्पकारकारों को आधुनिकी सामग्री बनाने की प्रशिक्षण दी जायेगी ताकि इससे जुड़े क्षेत्र में काम करने वाले का आर्थिक विकास हो सके। संचालन प्रखंड उद्यमी समन्वयक अभिनाश मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान ममता देवी, यशोदा देवी, गुड़िया देवी, शांति देवी, कंचन देवी, कविता देवी, रेखा देवी, घोली देवी, रानी देवी, पूजा देवी, आरती देवी, गायत्री देवी, मुन्नी देवी, गुड़िया देवी, सावित्री देवी, सुनिता देवी और शांति देवी और अन्य लोग उपस्थित रहे।

बच्चों के बीच बांटे गये स्वेटर

विष्णुगढ़ (आजाद सिपाही)। प्रखंड के गाल्होबार स्थित आंगनबाड़ी केंद्र केंदुवाडीह में मुखिया मंजू देवी ने 40 नौनिहालों के बीच स्वेटर का वितरण किया गया। मुखिया मंजू देवी ने बच्चों के अभिभावकों को ठंड में स्वेटर पहनाकर नियमित आंगनबाड़ी केंद्र भेजने की अपील की। साथ ही कहा कि ठंड के मौसम को देखते हुए झारखंड सरकार की यह एक अच्छी योजना है। ठंड के इस मौसम में बच्चों को गर्म कपड़ों की जरूरत होती है। सरकार ने बच्चों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए यह सराहनीय पहल की है। उन्होंने सरकार के पहल की सराहना की और बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। मौके पर मुख्य रूप से छोटी शर्मा, वार्ड सदस्य शांति देवी, विजय महतो, जामुन महतो, अंशिका राज, अनवी राज, गुड़िया कुमारी, खुशबू कुमारी, नंदनी कुमारी, मोनिका कुमारी, रागिनी कुमारी, प्राची कुमारी, स्नेहा साहू, रिया कुमारी, सलोनी कुमारी, संजना कुमारी समेत काफी संख्या में ग्रामीण महिला पुरुष आदि मौजूद रहे।

बाराती बस दुर्घटनाग्रस्त, 18 लोग घायल

कोहरा के कारण घटी घटना

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग के चरही थाना क्षेत्र अंतर्गत हत्यारी मोड़ के निकट सड़क दुर्घटना में लगभग 17 से 18 लोग घायल हो गये। बताया जाता है कि बिहार के छपरा से विक्रम बस बारातियों को लेकर रांची के लिए जा रही थी। इसी दौरान सुबह घना कोहरा होने की वजह से गाड़ी अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। घटना में कई यात्री घायल हो गये। स्थानीय और पुलिस के मदद से

घायलों को बस से बाहर निकाला गया और इलाज के लिए शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल हजारीबाग में भर्ती कराया गया। वहीं इसकी जानकारी घायल के परिजनों को भी दी गयी। प्रत्यक्षदर्शी डॉ देवेंद्र सिंह देव ने बताया कि वे रांची से हजारीबाग के लिए आ रहे थे। इसी दौरान उन्होंने देखा की हत्यारी मोड़ स्थित बस दुर्घटनाग्रस्त है और अफरा तफरी का माहौल बना हुआ है। स्थानीय और पुलिस के सहयोग से सभी को बाहर निकाला गया और उसके बाद इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। हजारीबाग का स्थित हत्यारीन मोड को ब्लैक स्पॉट के रूप में भी देखा जाता है। जहां आये दिन दुर्घटना घटती है। इसे देखते हुए हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने सरकार का ध्यान भी आकृष्ट करने का काम किया है। एक बार फिर हत्यारिन मोड़ में हुई घटना ने यह सोचने को विवश कर दिया है कि इस जगह को क्यों ना ब्लैक स्पॉट घोषित कर व्यापक इंतजाम किया जाये।

कोडरमा अंडर 14 की टीम फाइनल में पहुंची

कोडरमा (आजाद सिपाही)। झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में खेले जा रहे हैं इंटर डिस्ट्रिक्ट अंडर 14 क्रिकेट टूर्नामेंट में कोडरमा की टीम ने जबरदस्त प्रदर्शन किया है। लगातार सात मैच जीत कर कोडरमा ने फाइनल में जगह पक्की कर ली है। गुमला में खेले गये मैच में कोडरमा ने पाकुड़ को 225 रन से, जामताड़ा को 117 रन से, हजारीबाग को साथ विकेट से, जमशेदपुर को 27 रन से, सरायकेला को 334 रन से और धनबाद को तीन विकेट से हराकर जबरदस्त खेल का परिचय दिया है। वहीं सेमीफाइनल मैच में बारिश की वजह से रद्द हुए मैच में बेहतर रन रेट के आधार पर कोडरमा को फाइनल के लिए क्वालीफाई कर दिया गया। फाइनल मैच हजारीबाग के संजय सिंह क्रिकेट स्टेडियम में बोकारो और कोडरमा के बीच 11 दिसंबर को खेला जायेगा। कोडरमा के फाइनल में पहुंचने पर कोडरमा जिला के खेल प्रेमियों में हर्ष है। हर्ष व्यक्त करने वालों में जिला क्रिकेट एसोसिएशन के संरक्षक पुलिस अधीक्षक कोडरमा अनुदीप सिंह, एसडीपीओ कोडरमा अनिल कुमार सिंह, मेजर विधान चंद्र शर्मा, अमरजीत सिंह छाबड़ा, दिनेश सिंह, विवेकानंद चौधरी, अनिल सिंह, कृष्ण बरहपुरिया, डॉक्टर उपेंद्र भदानी, पंकज सिंह, विनोद विश्वकर्मा, मनोज सहाय पिंकू, सुनील जैन, आलोक पांडे, उमेश सिंह, अनिल पांडे, शीतल छाबड़ा, सुमन कुमार, सुरेंद्र प्रसाद, सोनू खान, ओम प्रकाश, विशाल कुमार, राकेश पांडे, मुकेश प्रभाकर, धर्मेंद्र कौशिक, कुंदन राणा, तहसीन हुसैन, अशोक यादव, महेश भारती, दिवाकर राम सहित जिले के सभी खेल प्रेमी शामिल हैं।

केटीपीएस डीवीसी का सबसे अधिक विद्युत उत्पादन करने वाला केंद्र बनेगा

कोडरमा (आजाद सिपाही)। जिले के बांझेडीह में स्थित कोडरमा थर्मल पावर स्टेशन के विस्तारीकरण का कार्य नए साल 2025 में शुरू हो जायेगा। यहां 800 गुणा दो के दो नये यूनिटों के माध्यम से कुल 1600 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होगा। इसके लिए भेल को 14 हजार करोड़ से अधिक का टेंडर अवॉर्ड किया गया है। डीवीसी के मुख्य अभियंता मनोज ठाकुर ने बताया कि विस्तारीकरण के बाद कोडरमा डीवीसी का सबसे बड़ा और अधिक विद्युत उत्पादन करने वाला केंद्र बन जायेगा। वर्तमान में यहां 1000 मेगावाट का विद्युत उत्पादन हो रहा है। प्लांट के विस्तारीकरण के बाद यहां 2600 मेगावाट का अतिरिक्त विद्युत उत्पादन होगा। थर्मल पावर प्लांट के नए दो यूनिट का निर्माण का कार्य करीब चार साल तक चलेगा। इससे यहां 4 हजार से अधिक रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। इसके साथ ही तिलैया डैम में 155 मेगावाट सोलर पावर का भी निर्माण होगा। कोडरमा के तिलैया डैम और डीवीसी के पंचेत डैम में 155 -155 मेगावाट क्षमता का सोलर पावर प्लांट का निर्माण किया जा रहा है। तिलैया डैम में इसका कार्य स्टर्लिंग विल्सन कंपनी और पंचेत डैम में एलएंडटी को दिया गया है। डीवीसी (केटीपीएस) के मुख्य अभियंता मनोज कुमार ठाकुर ने बताया कि 18 महीने में इसका निर्माण कार्य पूरा हो जायेगा। यहां उत्पादित बिजली सीधे नेशनल ग्रिड को भेजा जायेगा। अब रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में देश काफी आगे बढ़ चुका है। जिले के बांझेडीह में स्थित कोडरमा थर्मल पावर स्टेशन के विस्तारीकरण का कार्य 800 गुणा दो के दो नए यूनिटों के माध्यम से कुल 1600 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होगा। इसके लिए भेल को 14 हजार करोड़ से अधिक का टेंडर अवॉर्ड किया जा चुका है।

तीन बच्चियों को अगवा कर ले जा रहे युवक को ग्रामीणों ने पकड़ा, की धुनाई

आजाद सिपाही संवाददाता

चलकुशा। थाना क्षेत्र के बडानो जंगल में कोडरमा जिला के जयनगर थाना क्षेत्र के ग्राम तिलोकरी से तीन बच्चों को मोटरसाइकिल संख्या जे एच 12 एम 8896 से उठाकर चलकुशा थाना क्षेत्र के बडानो जंगल में रखा था। सोहानी कुमारी (9 वर्ष), आरूही कुमारी पिता गणेश साव (5 वर्ष) दोनों कोडरमा जिला के जयनगर थाना के तिलोकरी की रहने वाली है और कल्याणी कुमारी पिता बिन्दे साव (7 वर्ष) जिला नवादा बिहार की रहने वाली है जो अपने बुआ की घर रह रही थी। तीनों को मंजूर आलम पिता साबिर अली गरजामु, थाना बरही जिला हजारीबाग का रहने वाला है जिसके पास से दो आधार कार्ड,

एक राशन कार्ड पाया गया है। वह बच्चियों को चाउमिन खिलाने के बहाने अपने मोटरसाइकिल पर बैठाकर चलकुशा के बडानों जंगल ले गया और बच्चियों को कहा कि सोर मचाने पर गला रेत देंगे। सोहानी कुमारी पिता गणेश साव (9 वर्ष) ने किसी तरह जंगल से भाग कर खलिहान में काम कर रहे लोगों को जानकारी दी। जिसके बाद ग्रामीणों ने अपहरणकर्ता को धर दबोचा और जमकर धुनाई कर दी। जिसके बाद तीनों बच्चियों और अपहरणकर्ता को चलकुशा पुलिस के हवाले कर दिया। यह घटना पुरे क्षेत्र में आग कि तरह फेल गयी। जिसकी सुचना सुन कर बच्चियों के परिजन चलकुशा थाना पहुंचे और सकुशल देखकर चैन की सांस ली। थाना प्रभारी चितरंजन कुमार ने कहा इसकी जांच पड़ताल कर आरोपी को उचित कार्रवाई के लिए न्याय हिरासत में भेज दिया जायेगा।

भराजो पंचायत भवन में समन्वय समिति की बैठक

टाटीझरिया (आजाद सिपाही)। टाटीझरिया प्रखंड के भराजो पंचायत भवन में समन्वय समिति की बैठक मुखिया स्वातिका कुमारी की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में मुख्य रूप से, पंचायत सेवक, रोजगार सेवक, आंगनबाड़ी सेविका, एएन एम, विद्यालय के शिक्षक, पंसस, वार्ड सदस्य, जलसहिया, प्रदान संस्था सदस्य समेत अन्य उपस्थित था। उपस्थित सभी सदस्यों को विकास के बारे में प्रदान संस्था के नितेश यादव ने बारिकी से बताया। मुखिया स्वातिका कुमारी ने कही कि आपसी समन्वय से ही पंचायत का विकास संभव है। बैठक में मुखिया प्रतिनिधि उपेंद्र पांडेय, पंचायत सचिव अर्जुन प्रसाद, रोजगार सेवक अरूण रवि, पंसस प्रतिनिधि प्रकाश रवि, उपमुखिया कौलेश्वर कुमार, वार्ड सदस्य सुधीर कुमार, कृष्णा कुमार, रघुनंदन प्रसाद, दीपक दास, नागेश्वर प्रजापति, सरयु ठाकुर, राजेश राम, गीता देवी, आंगनबाड़ी सेविका अनिता देवी, अजिता देवी, गायत्री देवी, चिंता देवी, रेखा देवी, रामनारायण कुशवाहा समेत अन्य उपस्थित था।

विद्यालय प्रबंधन समिति गठन को लेकर बैठक

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। उत्क्रमित मध्य विद्यालय तुइयो में विद्यालय प्रबंधन समिति गठन को लेकर बैठक हुई। बैठक कि अध्यक्षता मुखिया शंकर रविदास ने की संचालन उप प्रमुख प्रतिनिधि उत्तीम महतो ने किया। पर्यवेक्षक रामकृष्ण पांडेय, मुकेश कुमार और उपप्रमुख सुरजी देवी की देख रेख में समिति का गठन किया गया। जिसमें मतदान के माध्यम से अर्जुन प्रसाद को अध्यक्ष, माजदा खातून को उपाध्यक्ष और उर्मिला देवी को संयोजिका के पद पर चयन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक हीरालाल राणा, मिथुन पासवान, बसंत कुमार राजेश प्रसाद, धर्मेंद्र प्रसाद, फुलवा देवी, रेखा देवी प्यासी देवी समेत सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

स्टोन चिप्स लदा हाइवा जब्त

केरेडारी(आजाद सिपाही)। केरेडारी प्रखंड के सीओ रामरतन बर्णवाल ने मंगलवार को बिना वैध चालान के स्टोन चिप्स लदे एक हाइवा और एक ट्रेक्टर को जब्त किया। दोनों वाहनों को केरेडारी और पगार ओपी में जमा कर अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है। इस बाबत केरेडारी सीओ रामरतन बर्णवाल ने बताया की किसी भी किमत पर अवैध परिवहन नहीं होने दिया जायेगा और चिप्स और स्टोन लगे वाहनों को जांच लगातार की जायेगी और जो भी दोषी होंगे विधि सम्मत कार्रवाई की जायेगी।

मानवाधिकार दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

झुमरी तिलैया (आजाद सिपाही)। पीपीएसएस डीएवी पब्लिक स्कूल झुमरी तिलैया, कोडरमा के बच्चों ने विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर हिंदी भाषण आराध्या के द्वारा अंग्रेजी भाषण प्रेरणा के द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसके माध्यम से मानवाधिकारों के प्रति लोगों को प्रेरित किया गया। कुमुद ने हिंदी कविता के माध्यम से और दृष्णा ने रोचक तथ्यों के माध्यम से मानवाधिकार दिवस के अर्थ को समझाया। मानवाधिकार को समझने और उसके महत्व को समझाते हुए एक नाटक सृष्टि, सुहानी, सोनम, स्नेहा, सुरभि और स्वाति के द्वारा प्रस्तुत किया गया। बच्चों ने 10 दिसंबर के महत्व को उजागर करते हुए सुंदर और आकर्षित पोस्टर भी बनाये। कार्यक्रम का मंच संचालन अंशिका भदानी ने किया। मौके पर विद्यालय के प्राचार्य श्रीकृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि मानवाधिकार हमारी सभी गतिविधियों में न्याय, सहिष्णुता, आपसी सम्मान और मानवीय गरिमा की आवश्यकता की अभिव्यक्ति है। अधिकारों की बात करना हमें इस विचार को व्यक्त करने की अनुमति देता है कि सभी व्यक्ति नैतिकता और न्याय के दायरे का हिस्सा हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के शिक्षक दिनेश कुमार दुबे, बलराम मिश्रा और जयदेव आचार्या ने अपना योगदान दिया।

आइसेक्ट विवि में विश्व मानवाधिकार दिवस का आयोजन

यह दिन सम्मान, स्वाभिमान और समानता के साथ मानव अधिकारों की रक्षा को लेकर जागरूक करता हैः डॉ एमके

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। आइसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग के मुख्य कैंपस सभागार में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन और विधि विभाग के सहयोग से राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के बैनर तले मंगलवार को विश्व मानवाधिकार दिवस के मौके पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एनएसएस के छात्र-छात्राओं की ओर से पेश किये गये लक्ष्य गीत व प्रेरक उद्बोधन से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम परिचय के बाद मौके पर मौजूद बतौर मुख्य अतिथि डीन

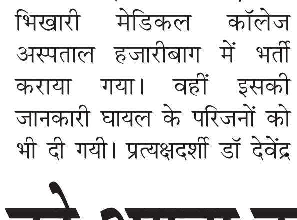

एकेडमिक डॉ एमके मिश्रा ने विश्व मानवाधिकार दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दरअसल यह दिन सम्मान, स्वाभिमान और समानता के साथ मानव अधिकारों की रक्षा को लेकर जागरूक करता है। डॉ भीमराव अंबेडकर के योगदान का उल्लेख करते हुए विशिष्ट अतिथि व विश्वविद्यालय के डीन एडमिन डॉ एसआर रथ ने कहा कि डॉ अम्बेडकर ने समाज की कुरीतियों और विकृतियों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने आज के युग में एकता और सहानुभूति के सिद्धांतों को बनाये रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य वक्ता और विधि विभाग डीन डॉ जयदीप सान्याल ने कहा कि मानवाधिकार और मूल स्वतंत्रता ऐसे व्यक्तिगत अधिकार हैं, जो मानवीय आवश्यकताओं और क्षमताओं पर आधारित होते हैं। वे वे अधिकार हैं, जिनके बिना व्यक्तित्व का हनन और प्रतिष्ठा का विनाश हो जाता है। विधि विभाग विभागाध्यक्ष कोमल पल्लवी भेंगरा ने मानवाधिकारों का संरक्षण और क्रियान्वयन करना हर नागरिक की जिम्मेदारी बतायी। राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयिका डॉ रोजी कांत ने मानवाधिकारों की शिक्षा को समाज में फैलाने की आवश्यकता पर बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन सीएस एंड आइटी विभाग डीन उदय रंजन ने किया। बताते चलें कि कार्यक्रम ने छात्र-छात्राओं को मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाने और समाज में उनके महत्व को समझाने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मौके पर कृषि संकायाध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार, एचआर राज तिवारी, टीपीओ मनोज कुमार, कृषि विभागाध्यक्ष डॉ सत्यप्रकाश विश्वकर्मा, प्रभात किरण, प्रतिभा हेंब्रम, फरहीन सिद्दीकी, संजय कुमार, डॉ आरसी राणा, डॉ विनय कुमार, तबरेज खान, प्रिति वर्मा, विशाखा बाला, मति गीता स्वामी सहित अन्य प्राध्यापक - प्रध्यापिकाओं और कर्मियों के साथ साथ स्वयंसेवकों व अन्य छात्र-छात्राओं की मौजूदगी रही।

पूर्व मंत्री बंधु तिर्की आज हजारीबाग में

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव सह झारखंड प्रभारी और झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निर्देशानुसार हजारीबाग जिला समिक्षा समिति के संयोजक पूर्व मंत्री बंधु तिर्की अपने दो सदस्यों शंतानू मिश्रा और मनोज सहाय पिंकू के साथ हजारीबाग के दो दिवसीय समिक्षा बैठक में भाग लेंगे। ज्ञात हो बुधवार को 11 बजे से 2 बजे हजारीबाग विधानसभा और 2 बजे से 4 बजे बड़कागांव विधानसभा की समिक्षा करेंगे। वहीं हजारीबाग परिसदन में रात्रि विश्राम करेंगे। गुरुवार को 11 बजे से 2 बजे बरही विधानसभा और 2 बजे से 4 बजे मांडू विधानसभा की समिक्षा करेंगे। उक्त जानकारी जिला कांग्रेस के उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता निसार खान ने दी।

श्री गुरुनानक स्कूल के बच्चों का शैक्षणिक भ्रमण

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। श्री गुरुनानक पब्लिक स्कूल के बच्चों का शैक्षणिक भ्रमण किया गया। शैक्षणिक भ्रमण में कक्षा नर्सरी से एक के बच्चे शामिल हुए। बच्चों ने ओरमांझी मछलीघर, बटरफ़्लाई पार्क में शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण पंद्रह शिक्षक भी शामिल थे। प्रिंसिपल हरजाप सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित इस भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को जल में रहने वाली मछलियों के विभिन्न प्रकार से अवगत कराना और उनके प्रति संवेदनशील रहना था। जलीय जीवन के बारे में जानने का यह उत्तम साधन है। बटरफ़्लाई पार्क सुंदर और मनोरम और मन को शांत करनेवाला था। पार्क में रंग-बिरंगी तितलियां को देखकर बच्चे काफी आनंदित हुए। ये तितलियां काफी बड़े आकार की और विभिन्न प्रकार की थी। छात्रों ने इसका पूरा आनंद लिया। भ्रमण के साथ विद्यार्थियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गयी थी। स्कूल में इस तरह के भ्रमण आयोजित किये जा रहे हैं ताकि बच्चे खेल खेल में पढ़ाई का आनंद लें। यह प्रयोगात्मक शिक्षा का उदाहरण है। जो विद्यालय लागू कर रहा है। इस तरह के भ्रमणों के आयोजन से विद्यार्थी अनुशासन में रहना क्रमबद्ध होकर चलना इत्यादि सीखते हैं।

मांगों को लेकर विस्थापित समिति न्यू बिरसा ने की बैठक

उरीमारी (आजाद सिपाही)। विस्थापित समिति न्यू बिरसा पोटंगा कार्यालय में तीन सूत्री मांगों को लेकर समिति के अध्यक्ष सूरज बेसरा की अध्यक्षता में मंगलवार को बैठक हुई। संचालन समिति के सचिव जीतन मुंडा ने किया। बैठक में एक स्वर में लोगों ने कहा कि आगामी 12 दिसम्बर को न्यू बिरसा आउटसोर्सिंग का सम्पूर्ण कार्य को बाधित किया जाएगा। आउटसोर्सिंग कम्पनी में पिछले कई महिनों से बेरोजगार विस्थापितों को रोजगार से जोड़ने को लेकर झूठा दिलासा देकर सभी कार्यों पर बाहर से लोगों को लाकर कार्य करवाया जा रहा है, जबकि आउटसोर्सिंग कम्पनी में झारखण्ड सरकार के नियमानुसार पहला प्राथमिकता स्थानीय विस्थापित ग्रामीणों को रोजगार से जोड़ना है। सी.एच.पी. सैलो के मध्यम से कोयला को बाहर भेजा जा रहा है, सी.सी.एल प्रबंधन भी वादा के विरोध कार्य कर रही है, समझौता के मुताबिक पहला प्राथमिकता रोड सेल में कोयला देना है, जिसे रोड सेल के माध्यम से विस्थापित ग्रामीणों को रोजगार से जोड़ा जा सके। लेकिन प्रबंधन विस्थापितों के साथ छल कपट कर रहा है । बैठक में मुख्य रूप से सूरज बेसरा, जीतन मुण्डा, संजय करमाली,मोहन सोरेन, बिनोद हेम्ब्रोम, सन्नी सोरेन,रैना मांझी, झरी करमाली,बेनीलाल सोरेन, अजय बेसरा, आंनद बेसरा, अजय करमाली, विजय सोरेन, प्रेम सोरेन, सुखराम बेसरा,पंकज हेम्ब्रोम ,दिनेश मुंडा, मिथुन सोरेन, ममता देवी, बुधनी देवी, डोढ़को देवी, कपूर मुनि देवी, तालोमुनी देवी,तलमी देवी, लील मुनि देवी सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

हाइवा ट्रक चोरी कर भाग रहा युवक धराया

चतरा (आजाद सिपाही)। सदर थाना पुलिस ने हाइवा ट्रक चोरी कर भाग रहे एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक पंकज कुमार इटखोरी थाना क्षेत्र के धनखेरी गांव निवासी नागेश्वर गोप का पुत्र है। सदर थाना प्रभारी विपिन कुमार ने बताया कि गिद्धौर थाना क्षेत्र के दुआरी गांव निवासी हाइवा चालक रुपेश बस स्टैंड चतरा में हाइवा खड़ी कर स्टैंड के एक होटल में खाना खाने चला गया। इसी दौरान दो युवक एक्सयूवी कार से वहां पहुंचे और खड़ी हाइवा को मास्टर की से खोलकर इटखोरी की ओर चल दिये। हाइवा में लगे जीपीएस के माध्यम से हाइवा चालक को वाहन चोरी होने का एहसास हुआ। उसने तुरंत डायल 100 पर फोन कर गाड़ी चोरी होने की सूचना दी। पुलिस तुरंत सक्रिय हुई और जीपीएस लोकेशन के आधार पर इटखोरी पुलिस की मदद से हाइवा को इटखोरी के पास से बरामद कर लिया गया। हालांकि इस दौरान चोर वाहन को खड़ी कर कर फरार होने में सफल हो गया था। लेकिन पुलिस ने एक्सयूवी कार के नंबर के मदद से कुछ ही घंटे में चोरी की घटना में शामिल पंकज को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद उसके विरुद्ध सदर थाना में मामला दर्ज करते हुए जेल भेज दिया गया।

संध्या प्रधान ने किया मनरेगा योजना का निरीक्षण

चतरा (आजाद सिपाही)। लावालौंग प्रखंड क्षेत्र के मधनिया पंचायत और लावालौंग पंचायत में मंगलवार को मनरेगा के तहत संचालित विभिन्न प्रकार के योजनाओं का निरीक्षण मनरेगा लोकपाल संध्या प्रधान द्वारा किया गया। जिसमें मनरेगा के तहत संचालित मिश्रित बागवानी योजना, बिरसा सिंचाई कूप योजना, डोभा आदि योजना का भौतिक निरीक्षण किया गया। जिसमें लगभग सभी योजनाएं संतोषजनक पायी गयी। वहीं अधूरे पड़े योजनाओं को जल्द पूर्ण करने का निर्देश दिया गया और साथ ही अन्य कई आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया गया। इस दौरान लावालौंग बीपीओ निरंजन कुमार सिंह, रोजगार सेवक मनोरंजन कुमार, नौशाद आलम, राजेश कुमार समेत कई ब्लॉक कर्मी और लाभुक मौजूद थे।

जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

हंटरगंज/चतरा (आजाद सिपाही)। जिला विधिक सेवा प्राधिकार चतरा के निर्देशानुसार हंटरगंज बाजार में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के मौके पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हंटरगंज प्रखंड कार्यालय के पीएलवी कुमार विवेक रंजन और सरयू यादव के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस मौके पर लोगों को मानवाधिकार से संबंधित जानकारी दी गयी। इस मौके पर काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

चुटूपालू घाटी में गड्ढा बना ट्रेलर के लिए काल

चालक और खालसी की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। चुटूपालू घाटी में हो रही सड़क दुर्घटनाओं को रोकने की दिशा अब तक ना तो एनएचएआइ और ना ही जिला प्रशासन की पहल कर रही है। हर बार सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में जिला प्रशासन एनएचएआइ को निर्देशित करती रही है। लेकिन एनएचएआइ पर आदेशों का असर नहीं हो रहा है। नतीजतन वाहनों के चालक और राहगीर असमय मौत के गाल में समा रहे है। इधर सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में डीसी ने कई बार एनएचएआइ के अधिकारियों को सड़क की एलाइनमेंट से लेकर लाइटों को दुरुस्त करने का निर्देश दिया है। बावजूद एनएचएआइ के अधिकारियों के कानों में जु नहीं गूंज रही है। इससे स्पष्ट होता है की घाटी में जो भी हो होने दो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।

गड्ढे में गिरते ही ट्रेलर का केबिन हुआ क्षतिग्रस्त

गड्ढे में गिरते ही ट्रेलर का केबिन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। इससे चालक और खलासी केबिन में फंसे रह जाने के कारण दोनों ने दम तोड़ दिये। जब तक पुलिस पहुंची वहां तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी। तत्काल पुलिस ने घटना की जानकारी वरीय पुलिस पदाधिकारी को दी।

एक बार फिर चुटूपालू घाटी में दो लोगों की हुई दर्दनाक मौत: रांची-पटना मुख्यमार्ग अंतर्गत फोरलेन के चुटूपालू घाटी में एक बार फिर सड़क दुर्घटना में ट्रेलर चालक और खलासी ने अपनी जान गवा दी है। जानकारी के अनुसार रांची से रामगढ़ की ओर से आ रही सरिया लदा ट्रेलर संख्या पीबी 04एए 9328 का अचानक ब्रेक फेल हो जाने से ट्रेलर चालक ने सड़क किनारे किसी तरह रोकने चाहा, लेकिन उसे क्या पता सड़क किनारे पड़ी गड्ढा काल बनकर खड़ी है।

कोठार ओवर ब्रिज के पास कार पलटी बाल बाल बच्चे लोग: रांची-पटना मुख्य मार्ग अंतर्गत फोरलेन के कोठार ओवर ब्रिज के पास एक कार पलट गयी। जिससे कार में सवार लोग बाल बाल बच गये। इधर, घटना की सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने सड़क पर पलटी कर को स्थानीय लोगों की मदद से हटवाया। जानकारी के अनुसार हजारीबाग से रांची की ओर जा रही डीएल 1सीटी 6130 कार अचानक डिवाइडर से टकराकर पलट गयी। हालांकि इस घटना में किसी भी तरह की कोई हताहत नहीं हुई।

कांटिनेंटल कोक एंड मिनरल्स कंपनी से निकल रहा है जहरीला धुआं, परेशानी

15 दिनों के अंदर कार्यवाई नहीं हुआ तो उग्र आंदोलन: रवि कुमार

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। नगर परिषद के वार्ड नंबर एक धनहारा स्थित कॉन्टिनेंटल कोक एंड मिनिरल्स कंपनी से निकलने वाले धुंवे से लोग परेशान है। साथ ही आस-पास क्षेत्र के धनहारा, बरवाटोला, गुडिदोहर, रामनगर के हजारों घर बसा है। जिसे लेकर समाजसेवी रवि कुमार के नेतृत्व में फेक्टरी प्रबंधक से मिलकर सात सूत्री मांगों को रखा। जिसका प्रतिलिपि झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण कार्यालय रांची, धुर्वा, उपायुक्त कार्यालय रामगढ़, प्रभारी कुजू ओपी, श्रम अधीक्षक कार्यालय रामगढ़ दिया है। सात सूत्री मांगों में कंपनी से निकलने वाले जहरीले चिमनी के धुंवे से यहां के लोगों को काफी परेशानी हो रही है, झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के नियमानुसार ही धुंवे छोड़ा जाये, कारखाने में स्थानीय लोगों को रोजगार दिया जाये और उनके मासिक वेतन खाते में दिया जाये, बहेतर स्वास्थ्य के लिए मुफ्त मेडिकल शिविर का आयोजन किया जाये, विधवा, विकलांग, वृद्धा पेंशन व्यक्तियों के लिए गर्म वस्त्र वितरण किया जाये, जलवायु परिवर्तन विभाग के नियमानुसार पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक किया जाये, युवाओं के खेल सामग्री वितरण किया जाये और सुरक्षा समिति का गठित किया जाये आदि मांग शामिल है। मांगो को प्रबंधक द्वारा 15 दिनों के अंदर पूरा नही किया तो ग्रामीणों द्वारा आंदोलन किया जायेगा। जिसका जवाबदेही फेक्ट्री प्रबंधक और प्रशासन की होगी। मौके पर विशेश्वर बेदिया, रविश मुंडा, सिक्की कुमार, संदीप कुमार, दीपक कुमार, नागेन्द्र कुमार, राहुल कुमार आदि शामिल थे ।

अपराधियों ने ओवर ब्रिज पर की फायरिंग, दहशत

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। पतरातू में अपराधियों के होंसले बुलंद है। पतरातू रेलवे फाटक के समीप मंगलवार शाम अपराधियों ने ओवर ब्रिज निर्माण स्थल में फायरिंग कर दहशत का माहौल बना दिया। अपराधि बाइक पर सवार अपराध कर्मियों ने दो राउंड फायरिंग की जिसमें एक गोली निर्माण स्थल में खड़े पोपलेन मशीन में फायरिंग करने के बाद बाइक पर सवार अपराधी फरार हो गये। अपराधी के जाने के बाद कार्यस्थल पर खड़े कर्मचारियों ने घटना की सूचना तत्काल पर पतरातू थाना को दी इसके बाद सूचना मिलते ही पतरातू अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी पवन कुमार सशस्त्र बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच फायरिंग की घटना का जायजा लिया। मौके पर आरपीएफ इंस्पेक्टर मुकेश कुमार भी पहुंचे और घटनास्थल की जानकारी ली। छानबीन के दौरान पतरातू पुलिस को घटनास्थल से एक अपराधी गिरोह का पर्चा भी हाथ लगा है जिसमें पुलिस ने बरामद किया है। जिसमें काम कर रहे कंपनी को मैनेज करने की बात कही गयी है। बताया जाता है कि अपराधियों ने लगभग दो राउंड फायरिंग की है। पुलिस को एक जिंदा कारतूत और एक खोखा भी बरामद किया है। पुलिस घटना की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। घटना के बाद साइट पर कार्य कर रहे हैं मजदूर सहित पतरातू क्षेत्र के ग्रामीणों में दहशत का माहौल है।

ग्रामीणों ने चोर को पकड़कर किया पुलिस के हवाले

हंटरगंज/ चतरा (आजाद सिपाही)। प्रखंड के उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय जवादोहर में रविवार की रात अज्ञात चोरों द्वारा सोलर प्लेट की चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। घटना की जानकारी दूसरे दिन सोमवार को स्कूल खुलने के बाद हुई। जिसे लेकर मंगलवार को ग्रामीणों ने एक बैठक किया। बैठक में चोरी की घटना से संबंधित गहन जांच पड़ताल की गयी। जांच पड़ताल के दौरान गांव के पांच व्यक्ति पर सोलर प्लेट चोरी करने का संदेह जाहिर किया गया। संदिग्ध व्यक्तियों को बैठक में बुलाया गया। ग्रामीणों ने जब कड़ाई से पूछताछ किया तो वे लोग सोलर प्लेट चोरी करने की बात को स्वीकार किया। चोर के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने हेतु इसकी जानकारी पुलिस को दी गयी। पुलिस विद्यालय पहुंचकर चोरी की घटना में शामिल सभी लोगों को थाना ले आयी है।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में विचार गोष्ठी का किया गया आयोजन

बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए शिक्षक और अभिभावकों को जागरूक होना पड़ेगा: प्राचार्य

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए शिक्षक और अभिभावकों को जागरूक होना पड़ेगा। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पक्ष पर भी ध्यान देना होगा। उक्त बातें रामप्रसाद चंद्रभान सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य वरुण कुमार चौधरी ने कही। ज्ञात हो विद्यालय की वंदना सभागार में कक्षा चतुर्थ और पंचम के अभिभावकों के साथ विचार गोष्ठी रखी गयी। जिसमें 120 अभिभावकों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का उद्घाटन अभिभावकों ने दीप प्रज्ज्वलित और पुष्पार्चन कर किया। गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य बच्चों में अनुशासन, स्वच्छता, वेशभूषा और शिक्षा के प्रति उत्साह जागृत करना है। अभिभावकों ने भी बच्चों की समस्याओं को रखा और कई सुझाव भी दिये। अभिभावकों को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य ने कहा पढ़ाई के साथ-साथ संस्कार और संस्कृति का ज्ञान अवश्य देना चाहिए। बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान देने में शिक्षकों और अभिभावक दोनों का योगदान होता है। अभिभावक अपना थोड़ा समय बच्चों के लिए जरूर निकाले। बच्चों को घर का बना हुआ टिफिन ही दें। उनकी कॉपी और डायरी प्रतिदिन जरूर देखें। बच्चों से अच्छा व्यवहार करें। उनकी गतिविधियों पर नजर रखें। घर के परिवेश को भी संस्कार युक्त रखना चाहिए, क्योंकि बच्चे हमारा अनुसरण करते हैं। मौके पर आचार्य, दीदी जी ने भी बच्चों से जुड़ी समस्याओं को अभिभावकों के सामने रखा और कई सुझाव दिये। कार्यक्रम में रीता तिवारी, विकास कुमार कुशवाहा, कुमकुम झा, दुर्गेश कुमार, प्रवीण कुमार राय और अभिभावक उपस्थित थे।

पतरातू इंस्पेक्टर ने थाना का किया निरीक्षण

भुरकुंडा (आजाद सिपाही)। पतरातू इंस्पेक्टर योगेंद्र सिंह ने मंगलवार को बासल थाना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान योगेंद्र सिंह ने थाना के विभिन्न पंजी, लूटबंदी और डकैती पंजी, गिरोह पंजी, अपराध निर्देशिका, डोजियर, मलखाना, खतियान आदि के बावत जानकारी लेते हुए कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। साथ ही थाना व परिसर की साफ-सफाई, थाना के सभी दागियों का प्रत्येक माह निरीक्षण करने और पंजियों के अच्छी से संधारण को लेकर थाना प्रभारी कैलाश कुमार और थाना के अन्य कर्मियों को सुसेवांक (जीएस) हेतु पुलिस अधीक्षक रामगढ़ से अनुशंसा कराने की बात कही।

रेलवे उप-समिति के अध्यक्ष के रूप में चुने गये सरदार मनमोहन सिंह लांबा

रामगढ़ (आजाद सिपाही)। एफजेसीसीआई ने रेलवे उप-समिति के लिए सरदार मनमोहन सिंह लांबा का रामगढ़ जिले के नए अध्यक्ष के रुप में चुना है। यह सम्मानित पद रेलवे क्षेत्र में वृद्धि और विकास के लिए महत्पूर्ण जिम्मेदारियां निभाने के लिए मनोनीत किया जाता है। मनमोहन सिंह रामगढ़ के कई सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर पूर्व से जिले के कल्याणकारी कार्यो में अपना योगदान देते आ रहे है। अध्यक्ष के रूप में मनोनीत होने के बाद उन्होंने कहा कि रेलवे बुनियादी ढांचे को बढ़ाना, कुशल रेलवे लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के माध्यम से व्यापार और वाणिज्य को सुविधाजनक बनाना, सरकारी एजेंसियों और नियामक निकायों के साथ रेलवे उद्योग और एफजेसीसीआई सदस्यों के हितों की वकालत करना है। उन्होने कहा कि मैं रेलवे उप-समिति का नेतृत्व करने और झारखंड के रेलवे क्षेत्र के विकास में योगदान करने के लिए सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं प्रगति और विकास को आगे बढ़ाने के लिए एफजेसीसीआई सदस्यों, सरकारी एजेंसियों, संजय अखौरी और अमित साहू जैसे हितधारकों के साथ मिलकर काम करने के लिए उत्सुक हूं।

रामगढ़ जिला में नहीं होगी बिजली की समस्या : राजीव

गोला (आजाद सिपाही)। प्रखंड के कुष्टेगढ़ा और जांगी में मांगवार को ट्रांसफर्मर का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सांसद प्रतिनिधि राजीव जायसवाल ने फीता काटकर किया। इसके बाद गांव में फिर से बिजली बहाल हो गयी। ग्रामीणों ने बताया कि गांव में ट्रांसफर्मर खराब होने से काफी समस्या उत्पन्न हो रही थी। इसकी जानकारी सांसद प्रतिनिधि को दी गयी। इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए तुरंत बिजली विभाग के अधिकारियों से बातचीत कर ट्रांसफर्मर उपलब्ध कराया गया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि ने सभी ग्रामीणों को विश्वास दिलाते हुए कहा कि बिजली की समस्या हो य अन्य समस्या, सभी का समाधान करना मेरी जिम्मेदारी है। क्षेत्र की जो भी समस्या है। सभी का समाधान समय के साथ किया जायेगा। मौके पर सूरज वर्मा, अंकित सिंह, विनीत यादव, चंदर देव भोगता, झूठन भोगता, गोपाल भोगता, पवन कुमार, अरुण दांगी, परिक्षित महतो आदि थे।

शपथ पत्र

शपथ पत्र के अनुसार क्र. सं. 684 दिनांक 10.12.2024 । मै मिथलेश क्षेत्री पिता - स्व0 बीर बहादुर क्षेत्री निवासी - निरमाया, अस्पताल के पास, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, थाना - सदर, जिला - राँची (झारखण्ड) का निवासी हूँ। तथा नीचे लिखित बातें मेरी जानकारी में सत्य एवं सही है। 1. यह कि मै भारतीय नागरिक हूँ। 2. यह कि मै अपनी पुत्री का नाम - "अनन्या क्षेत्री" रखा था, परन्तु ज्योतिषी के कारण "अनन्या क्षेत्री " के स्थान पर उसका नाम "वाणी क्षेत्री" कर रहा हूँ। 3. यह कि आज तारिख से "अनन्या क्षेत्री" के स्थान पर "वाणी क्षेत्री" से जाने जायेगी । 4. यह कि मै यह शपथ पत्र अपनी पुत्री का नाम "वाणी क्षेत्री" सत्यापित हेतु दे रहा हूँ, जो कि सही एवं सत्य है। यह शपथ पत्र आज दि. 10/12/2024 को सम्पन्न हुआ।

शपथ पत्र

शपथ पत्र के अनुसार क्र. सं. 683 दिनांक 10.12.2024 । मै मिथलेश क्षेत्री पिता - स्व0 बीर बहादुर क्षेत्री निवासी - निरमाया, अस्पताल के पास, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, थाना - सदर, जिला - राँची (झारखण्ड) का निवासी हूँ। तथा नीचे लिखित बातें मेरी जानकारी में सत्य एवं सही है। 1. यह कि मै भारतीय नागरिक हूँ। 2. यह कि मै अपनी पुत्री का नाम - "मन्नत क्षेत्री" रखा था, परन्तु ज्योतिषी के कारण "मन्नत क्षेत्री" के स्थान पर उसका नाम "इशिता क्षेत्री" कर रहा हूँ। 3. यह कि आज तारिख से "मन्नत क्षेत्री" के स्थान पर "इशिता क्षेत्री" से जाने जायेगी । 4. यह कि मै यह शपथ पत्र अपनी पुत्री का नाम "इशिता क्षेत्री" सत्यापित हेतु दे रहा हूँ, जो कि सत्य एवं सही है। यह शपथ पत्र आज दि. 10/12/2024 को सम्पन्न हुआ।

बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचार को लेकर आक्रोश रैली

छोटे बड़े सभी व्यवसायियों ने अपनी-अपनी दुकानें बंद रख कर इसका समर्थन दिया

आजाद सिपाही संवाददाता

चतरा। लावालौंग प्रखंड मुख्यालय में मंगलवार को बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे बर्बरता पूर्ण अत्याचार के खिलाफ जन आक्रोश रैली निकाली गयी। जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस दौरान छोटे बड़े सभी व्यवसायियों ने अपनी-अपनी दुकानें बंद रख कर इसका समर्थन दिया। लावालौंग यज्ञशाला परिसर में बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ सभा का आयोजन किया गया। इसके बाद पूरे लावालौंग बाजार का भ्रमण कर जन आक्रोश रैली निकाली गयी। रैली के दौरान बांग्लादेशी घुसपैठियों को भगाओ, हिंदुओं पर अत्याचार नहीं सहेंगे, इस्कॉन के सन्यासी चिन्मय कृष्ण दास को रिहा करो, जैसे कई नारे लगाये जा रहे थे। इसके बाद लावालौंग प्रखंड विकास पदाधिकारी को राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा गाया। जनाक्रोश रैली में शंकर साहू, खगेश्वर साहू, नीरज चंद्रवंशी, उमेश ठाकुर, विवेक केसरी आदि सैकड़ों सनातनी महिला पुरुष मौजूद थे।

दामोदर घाटी निगम / DAMODAR VALLEY CORPORATION
डीवीसी टावर्स / DVC TOWERS: वीआईपी रोड / VIP ROAD
कोलकाता / KOLKATA - 700054

सार्वजनिक सूचना

एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि झारखंड के कोडरमा जिले के बांझेडीह में मेसर्स दामोदर वैली कॉरपोरेशन द्वारा 1600 मेगावाट (2X800 मेगावाट) क्षमता के थर्मल पावर प्लांट (चरण-II) की स्थापना के लिए कोडरमा थर्मल पावर स्टेशन के हमारे प्रस्तावित विस्तार को पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने पत्र दिनांक 07.12.2024 (फाइल संख्या: J-13011/2/2005-IA-II (T) के माध्यम से पर्यावरणीय मंजूरी (ई.सी) प्रदान कर दी गई है। इसकी प्रति झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पास उपलब्ध है और इसे पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की उनकी वेबसाइट https://environmentclearance.nic.in पर भी देखा जा सकता है।

परियोजना प्रस्तावक
मेसर्स दामोदर वैली कॉर्पोरेशन,
डीवीसी मुख्यालय, डीवीसी टावर्स, वीआईपी रोड कोलकाता,
कोलकाता-700054, पश्चिम बंगाल

वैकल्पिक व्यवस्था पर निगाहें

सीरिया में रविवार को जिस तरह से इस्लामी विद्रोहियों ने राजधानी दमिश्क पर कब्जा किया और राष्ट्रपति बशर अल-असद देश छोड़ने को मजबूर हुए, वह अप्रत्याशित तो है ही, पूरे पश्चिम एशिया के लिए अनिश्चितता के एक नये सिलसिले की शुरुआत साबित हो सकता है। इस प्रकरण में कई ऐसे पहलू हैं, जो भारत की चिंता से सीधे तौर पर जुड़ते हैं। चाहे राष्ट्रपति बशर अल-असद हों या उनके पिता हाफिज अल-बशर, दोनों निरंकुश माने जाते रहे, लेकिन सीरिया में दोनों ने सेकुलर नीति अपनायी। उनके शासन काल में इस्लामी कट्टरपंथियों पर अंकुश बना रहा। अब उनकी जगह काबिज हुए इस्लामी विद्रोहियों के संभावित रुख को लेकर दुनिया भर में आशंकाएं हैं। सीरिया में उनकी वजह से आइएसआइएस जैसे आतंकवादी समूह के फिर से सिर उठाने का डर पैदा हो गया है। ऐसे में यह सवाल खड़ा हो गया है कि क्या आने वाले दौर में भारतीय उपमहाद्वीप में आतंकी तत्वों की सक्रियता बढ़ने वाली है। सीरिया के साथ भारत के आर्थिक रिश्ते भले ही ज्यादा प्रगाढ़ न हुए हों, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोनों एकजुट रहे हैं। यही नहीं, बशर अल-असद ने कश्मीर के सवाल पर हमेशा भारत का साथ दिया। यहां तक कि कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाये जाने को लेकर भी सीरिया ने कहा था कि यह भारत का आंतरिक मामला है और किसी भी देश को अपने भूभाग में नागरिकों की हिफाजत के लिए जरूरी कदम उठाने का पूरा अधिकार है। देखना होगा कि बदले हालात में सीरिया के रुख में किस तरह का और कितना बदलाव आता है। विद्रोही गुटों को हासिल तुर्किये के कथित समर्थन को देखते हुए कुछ एक्सपर्ट्स कह रहे हैं कि सीरिया के नये निजाम की नीतियों पर उसका प्रभाव दिखेगा। अच्छी बात यह है कि तुर्किये के साथ भी भारत के रिश्तों में पिछले कुछ समय में सुधार देखा जा रहा है। जहां कश्मीर पर उसके रुख में नरमी आयी है, वहीं भारत ने भी ब्रिक्स में तुर्किये की एंट्री को रोकने का प्रयास नहीं किया। सीरिया के घटनाक्रम पर भारत ने जिस तत्परता से अपना रुख स्पष्ट किया, वह भी काफी कुछ कहता है। 24 घंटे के अंदर ही विदेश मंत्रालय ने सीरिया की एकता, अखंडता और संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने की जरूरत बताते हुए कहा कि मसले का हल निकालने की प्रक्रिया न केवल शांतिपूर्ण बल्कि सीरिया की अगुआई वाली और समाज के सभी तबकों के हितों का ध्यान रखने वाली होनी चाहिए। जाहिर है, सीरिया मामले से जुड़े अपने हितों को लेकर भारत संवेदनशील और गंभीर है।

चाहे राष्ट्रपति बशर अल-असद हों या उनके पिता हाफिज अल-बशर, दोनों निरंकुश माने जाते रहे, लेकिन सीरिया में दोनों ने सेकुलर नीति अपनायी। उनके शासन काल में इस्लामी कट्टरपंथियों पर अंकुश बना रहा।

अभिमत
आजाद सिपाही

पीएलएफएस 2.5 मिलियन से अधिक व्यक्तियों के लिए विस्तृत रोजगार और जनसांख्यिकीय डेटा प्रदान करता है, जिससे राष्ट्रीय, राज्य और ग्रामीण/शहरी स्तरों पर रुझानों और विविधताओं का विश्लेषण संभव हो पाता है। एलएफपीआर की गणना 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की कुल आबादी के सापेक्ष नियोजित और बेरोजगार व्यक्तियों (काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध) के प्रतिशत के रूप में की जाती है।

महिला श्रम बल भागीदारी दर: पीएलएफएस का अवलोकनात्मक विश्लेषण

डॉ शमिका रवि/ डॉ मुदित कपूर

सारांशः महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (एलएफपीआर) महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण और समग्र आर्थिक समावेशिता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह शोध पत्र 2017-18 से भारतीय राज्यों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एलएफपीआर में उल्लेखनीय पुनरुत्थान को उजागर करते हुए कठोर अर्थमितीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अनुभवजन्य विश्लेषण के लिए तीन व्यापक विषय हैंः (1) महिला एलएफपीआर में हालिया रुझान, (2) एलएफपीआर पर वैवाहिक स्थिति और मातृत्व-पितृत्व का प्रभाव, और (3) भारत के सभी क्षेत्रों और राज्यों में उम्र और लिंग के साथ एलएफपीआर में भिन्नता।

इस अध्ययन में इस्तेमाल किया गया डेटा सभी उपलब्ध (2017-18 से 2022-2023) में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) से लिया गया है। पीएलएफएस 2.5 मिलियन से अधिक व्यक्तियों के लिए विस्तृत रोजगार और जनसांख्यिकीय डेटा प्रदान करता है, जिससे राष्ट्रीय, राज्य और ग्रामीण/शहरी स्तरों पर रुझानों और विविधताओं का विश्लेषण संभव हो पाता है।

एलएफपीआर की गणना 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की कुल आबादी के सापेक्ष नियोजित और बेरोजगार व्यक्तियों (काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध) के प्रतिशत के रूप में की जाती है।

पूर्वोत्तर राज्यों में, ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसमें नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश सबसे आगे हैं।

परिणाम तीन खंडों में प्रस्तुत किये गये हैं। परिणामों का पहला सेट 2017-18 से 2022-23 तक महिला एलएफपीआर के रुझान को दर्शाता है।

भारत ने 2017-18 से 2022-23 तक विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एलएफपीआर में पर्याप्त वृद्धि देखी है। पिछले दस वर्षों में सरकार की कई योजनाएं हैं, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को लक्षित करते हुए। इनमें मुद्रा ऋण, ड्रोन दीदी योजना और दीनदयाल अंत्योदय योजना के तहत जुटाये गये एसएचजी ग्रामीण महिलाओं के लिए कुछ प्रमुख पहलों के नाम हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर, ग्रामीण महिला एलएफपीआर 24.6% से बढ़ कर 41.5% (69% वृद्धि) हो गयी, जबकि शहरी एलएफपीआर मामूली रूप से 20.4% से बढ़ कर 25.4% (25% वृद्धि) हो गयी। महत्वपूर्ण अंतरराज्यीय भिन्नताएं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, झारखंड (233% वृद्धि) और बिहार (6X वृद्धि) जैसे राज्यों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गयी है। पूर्वोत्तर राज्यों ने भी उल्लेखनीय वृद्धि दिखायी (उदाहरण के लिए, नगालैंडः 15.7% से 71.1%) की वृद्धि। राष्ट्रीय स्तर पर, शहरी क्षेत्रों में कुल मिला कर मामूली वृद्धि देखी गयी।

परिणामों का दूसरा सेट, आयु, वैवाहिक स्थिति और घरेलू संरचना, विशेष रूप से 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की उपस्थिति के आधार पर महिला एलएफपीआर प्रस्तुत करता है।

सामान्य रुझान दर्शाते हैं कि लगभग सभी राज्यों में महिला एलएफपीआर में वृद्धि हुई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक वृद्धि देखी गयी है। हमने यह भी पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं ने अविवाहित महिलाओं की तुलना में अधिक भागीदारी वृद्धि दिखायी है।

राजस्थान और झारखंड जैसे राज्यों ने विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के बीच महत्वपूर्ण वृद्धि दिखायी। हालांकि, महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और अंतरराज्यीय भिन्नताएं हैं। उत्तरी राज्यों में, पंजाब और हरियाणा में महिला एलएफपीआर कम रही। पूर्वी राज्यों में, ग्रामीण बिहार में देश में सबसे कम एलएफपीआर था, लेकिन हाल के वर्षों में इसमें महत्वपूर्ण सुधार हुआ है - विशेष रूप से ग्रामीण विवाहित महिलाओं के लिए।

पूर्वोत्तर राज्यों में, ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसमें नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश सबसे आगे हैं। पूर्वोत्तर के शहरी क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं के बीच मध्यम वृद्धि देखी गयी है, जबकि देश के अन्य हिस्सों में शहरी क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं के लिए मामूली वृद्धि देखी गयी है। पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों में, एलएफपीआर में वृद्धि मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाओं के बीच केंद्रित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में केवल मामूली वृद्धि देखी गयी है। आंध्र प्रदेश में बच्चों वाली शहरी महिलाओं की एलएफपीआर में बड़ी गिरावट आयी है।

परिणामों का तीसरा सेट लिंग और आयु के आधार पर एलएफपीआर में अंतर प्रस्तुत करता है। इसमें पाया गया कि वैवाहिक स्थिति और बच्चों की उपस्थिति प्रत्येक श्रेणी के लिए कैसे अंतर लाती है। कुल मिला कर परिणाम दर्शाते हैं कि महिला एलएफपीआर एक घंटी के आकार का वक्र बनाती है, जो 30-40 वर्ष की आयु में चरम पर होती है और उसके बाद तेजी से घट जाती है। दूसरी ओर, पुरुष एलएफपीआर 30-50 वर्ष की आयु से उच्च (100%) रहता है, उसके बाद धीरे-धीरे घटता है। महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए वैवाहिक स्थिति एलएफपीआर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। विवाहित पुरुष लगातार राज्यों और आयु समूहों में उच्च एलएफपीआर प्रदर्शित करते हैं, जबकि विवाह महिला एलएफपीआर महत्वपूर्ण रूप से कम होता जाता है, खास कर शहरी क्षेत्रों में। 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की उपस्थिति महिला एलएफपीआर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, विशेष रूप से युवा महिलाओं (20-35 वर्ष) के लिए और शहरी क्षेत्रों में यह अधिक प्रबल रूप से प्रभावित करती है।

भारत ने 2017-18 से 2022-23 तक विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एलएफपीआर में पर्याप्त वृद्धि देखी है। पिछले दस वर्षों में सरकार की कई योजनाएं हैं, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को लक्षित करते हुए। इनमें मुद्रा ऋण, ड्रोन दीदी योजना और दीनदयाल अंत्योदय योजना के तहत जुटाये गये एसएचजी ग्रामीण महिलाओं के लिए कुछ प्रमुख पहलों के नाम हैं। ऐसी कई अन्य पहलें हैं, जिन्हें पूरे भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के दृष्टिकोण के साथ जोड़ा गया है। हमारा शोध पत्र इन पहलों के अंतिम परिणाम को भारत भर में और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एलएफपीआर में संचयी और महत्वपूर्ण वृद्धि की पड़ताल करता है। हालांकि, इन कार्यक्रमों के प्रभावों का मूल्यांकन करने और भारत की महिला एलएफपीआर में लगातार अंतर-राज्यीय और ग्रामीण-शहरी असमानताओं का पता लगाने के लिए गहन शोध की आवश्यकता है।

(लेखक : डॉ शमिका रवि इएसी-पीएम और डॉ मुदित कपूर आइएसआइ, दिल्ली हैं।)

देश-विदेश की खबरें

पीएम नरेंद्र मोदी की युवा वर्ग को राजनीति में लाने की पहल

दिल्ली में होगा 'यंग लीडर्स डायलॉग' का आयोजन, दो हजार युवा लेंगे हिस्सा

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि देश के हर क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं को नेतृत्व के लिए तैयार करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि राजनीति में भी युवाओं को आगे आना चाहिए और राजनीति को उन लोगों के हाथों में नहीं छोड़ना चाहिए, जो इसे अपने परिवार की संपत्ति समझते हैं। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि 12 जनवरी 2025 को स्वामी विवेकानंद की जयंती पर दिल्ली में यंग लीडर्स डायलॉग का आयोजन किया जायेगा। इसमें देशभर से दो हजार चुने हुए युवाओं को आमंत्रित किया जायेगा। तकनीक के माध्यम से करोड़ों युवा इसमें भाग लेंगे। इसमें विकसित भारत के संकल्प पर युवाओं के दृष्टिकोण से चर्चा होगी। प्रधानमंत्री ने रामकृष्ण मठ की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह वह वटवृक्ष है, जिसके बीज में स्वामी विवेकानंद जैसे महान तपस्वी की असीम ऊर्जा समाहित है। पीएम मोदी ने कहा कि हमें हर क्षेत्र में नेतृत्व के लिए युवाओं को तैयार करना होगा। आज जैसे तकनीक और अन्य क्षेत्रों में हमारे युवा आगे बढ़ रहे हैं, वैसे ही राजनीति में भी उन्हें नेतृत्व करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अब हम राजनीति को ऐसे लोगों के भरोसे नहीं छोड़ सकते, जो इसे अपने परिवार की संपत्ति समझते हैं। इसलिए, हम 2025 में एक नयी शुरुआत करने जा रहे हैं। पीएम मोदी ने कहा कि भारत आज अपनी ज्ञान परंपरा के आधार पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हमने अमृतकाल की एक नयी यात्रा शुरू की है। हमने विकसित भारत का दृढ़ संकल्प लिया है, जिसे तय समय सीमा के भीतर पूरा करना है। आज भारत के युवाओं ने विश्व में अपनी क्षमता और सामर्थ्य साबित की है।

इंफाल में आर्म्ड फोर्स स्पेशल पावर एक्ट के विरोध में रैली, नारेबाजी की

आजाद सिपाही संवाददाता

इंफाल। मणिपुर की राजधानी इंफाल में मंगलवार को सैकड़ों लोगों ने रैली निकाली। ये लोग यहां आर्म्ड फोर्स स्पेशल पावर एक्ट फिर से लागू करने और जिरीबाम में तीन बच्चों और तीन महिलाओं की हत्या के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे।

प्रदर्शनकारी हाथों में तख्तियां लिये थे। ये लोग मणिपुर को नष्ट मत करो, मणिपुर को बचाओ के नारे लगा रहे थे। रैली पश्चिमी इंफाल के थाउ मैदान से शुरू होकर 5 किलोमीटर दूर खुमान लैंपक स्टेडियम पहुंची। 10 दिसंबर को मानवाधिकार दिवस भी है। इस मौके पर ऑल मणिपुर यूनाइटेड क्लब्स ऑर्गनाइजेशन, पोइरेई लीमारोल मीरा पैबी अपुनबा मणिपुर, ऑल मणिपुर वूमेन वॉलिंटरी एसोसिएशन, मानवाधिकार समिति और मणिपुर छात्र संघ ने संयुक्त रैली निकाली।

बता दें कि नवंबर में जिरी और बराक नदियों में तीन महिलाओं और तीन बच्चों के शव बरामद हुए थे। इसके बाद राज्य में फिर हिंसा हुई थी। मणिपुर में पिछले साल मई से जारी जातीय हिंसा में 250 से अधिक लोग मारे गये हैं। हजारों लोग बेघर हो गये हैं।

ओड़िशा में 10 साल में 857 हाथियों की मौत

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। राज्य में विभिन्न कारणों से हर साल हाथियों की मौत का आंकड़ा बढ़ रहा है। वन एवं पर्यावरण मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया ने विधानसभा में लिखित जवाब दिया है। आंकड़ों के मुताबिक 10 साल में 857 हाथियों की मौत हो चुकी है। इनमें 305 हाथियों की मौत बीमारी से हुई, जबकि 149 हाथियों की मौत बिजली के झटके से हुई। इसके अलावा 229 हाथियों की मौत अन्य प्राकृतिक कारणों से हुई। 30 हाथियों की मौत अवैध शिकार के कारण, 29 की मौत रेलवे दुर्घटनाओं के कारण 16 की मौत हिंसक घटनाओं के कारण हुई। नवंबर 2024 तक राज्य में हाथियों की संख्या 2103 है। 2015 में 1954, 2017 में 1976 और 2024 में हाथियों की संख्या बढ़ कर 2 हजार 98 हो गयी। वन एवं पर्यावरण मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया ने विधानसभा में लिखित जवाब दिया है।

पारादीप में 78 बांग्लादेशी को अटक रखा गया

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। पारादीप भारतीय जलक्षेत्र सीमा में प्रवेश करने वाले 78 बांग्लादेशी नागरिकों को पारादीप में अटक रखा गया है। दोनों नावों पर 78 बांग्लादेशी सवार थे। तटरक्षक बल ने सभी बांग्लादेशियों को अटक रखा है। सभी स्वस्थ हैं। संदेह है कि जब वे मछली पकड़ने आए थे तो वे भारतीय सीमा में भटक गये थे।

शंभू बॉर्डर से सरवन सिंह पंधेर का एलान

14 को दिल्ली कूच करेगा 101 किसानों का जत्था

आजाद सिपाही संवाददाता

चंडीगढ़। पंजाब हरियाणा सीमा के पास शंभू बॉर्डर पर डटे किसानों ने एक बार फिर मंगलवार को दिल्ली कूच का एलान किया है। किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी कि 101 किसानों का जत्था 14 दिसंबर को दिल्ली की तरफ बढ़ेगा। मंगलवार को संयुक्त किसान मोर्चा और किसान-मजदूर संघर्ष समिति की सामूहिक बैठक हुई। इसके बाद आगामी निर्णय लिया गया। पंधेर ने साफ किया कि किसान भागने वाले नहीं हैं, बल्कि सरकार को भगायेंगे। इस बीच किसान संगठनों के बड़े नेता शंभू बॉर्डर से खनौरी बॉर्डर पहुंच गए हैं। किसानों ने यहां मंगलवार को सामूहिक भूख हड़ताल रखा। सोमवार को किसान नेता काका सिंह कोटडा ने मंच से कहा कि संयुक्त मोर्चा के प्रमुख जगजीत डल्लेवाल की सेहत लगातार बिगड़ती जा रही है। उनका वजन करीब 11 किलो कम हो गया है। वह काफी कमजोरी महसूस कर रहे हैं। उन्हें चक्कर आते रहते हैं।

दिलबाग की हालत ठीक नहीं : पंधेर ने एक बार फिर केंद्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि शंभू बॉर्डर पर लगातार हरियाणा पुलिस व सुरक्षा बलों की ओर से किसान नेताओं को निशाना बनाया जा रहा है। शुक्रवार को दिल्ली कूच करने गए जत्थे में शामिल किसान नेता सुरजीत सिंह फूल को घायल किया गया।

ओड़िशा के कटक और रायगड़ा जिलों में रेलवे फ्लाइओवर के निर्माण के लिए रेल मंत्रालय ने 509 करोड़ की मंजूरी दी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। भारतीय रेलवे की परिचालन दक्षता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम में, रेल मंत्रालय ने ओड़िशा के कटक और रायगडा जिलों में दो प्रमुख रेलवे फ्लाईओवर के निर्माण के लिए 509 करोड़ मंजूर किए हैं। यह पहल भारतीय रेलवे की व्यापक ऊर्जा, खनिज और सीमेंट कॉरिडोर योजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य ट्रेन की आवाजाही में सुधार करना और प्रमुख रेलवे लाइनों पर यातायात की भीड़ को कम करना है। रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आइटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अपनी हालिया ओड़िशा यात्रा में भी ओड़िशा में उपरोक्त रेल इन्फ्रा परियोजनाओं की मंजूरी के बारे में उल्लेख किया था।

मुख्य विशेषताएं

कटक जिले में 10.89 किलोमीटर लंबा रेल फ्लाईओवरः इस परियोजना में कटक जिले के राजआठगड, राधाकिशोरपुर और मछापुर रेलवे स्टेशनों को जोड़ने वाले 10.89 किलोमीटर लंबे रेल फ्लाईओवर का निर्माण शामिल है। यह बुनियादी ढांचा क्रॉस-ट्रैफि क के कारण होने वाली देरी के बिना एक साथ ट्रेन संचालन की सुविधा प्रदान करके परिचालन क्षमताओं को बढ़ायेगा। इस परियोजना की लागत 268.92 करोड़ रुपये है।

रायगड़ा जिले में 5.50 किलोमीटर लंबा रेल फ्लाईओवरः रायगड़ा जिले के सिंगापुर रोड स्टेशन पर 5.50 किलोमीटर लंबा रेलवे फ्लाईओवर बनाया जायेगा, जिससे रायपुर-बिजयनगरम रेलवे लाइन पर यातायात की भीड़ कम हो जायेगी। यह विकास सिंगापुर रोड स्टेशन और निकटवर्ती स्टेशनों के बीच निर्बाध ट्रेन आवाजाही की अनुमति देगा, जिससे क्रॉस ट्रैफिक के कारण होने वाली देरी से बचा जा सकेगा। परियोजना की अनुमानित लागत 239.83 करोड़ है

फ्लाईओवर के लाभ

एक साथ ट्रेन की आवाजाहीः नये फ्लाईओवर कई दिशाओं से ट्रेनों की एक साथ आवाजाही की अनुमति देंगे, जिससे क्षेत्र में ट्रेन संचालन की दक्षता में सुधार होगा।

मौजूदा यातायात बाधाओं को दूर करना : वर्तमान में, खुर्दा रोड और वाल्टेयर डिवीजनों के प्रमुख जंक्शनों पर सिंगापुर रोड और राजआठगड़-राधाकिशोरपुर-मछापुर स्टेशनों पर क्रॉस-मुवमेंट के कारण यातायात बाधाओं का अनुभव होता है। इन बाधाओं के कारण काफी देरी होती है, क्योंकि अप और डाउन ट्रेनों को अक्सर क्रॉस-ट्रैफिक क्लीयरेंस के लिए इंतजार करना पड़ता है। नये फ्लाईओवर विभिन्न दिशाओं से ट्रेनों के लिए समर्पित पथ बनाकर इन बाधाओं को दूर करेंगे, जिससे निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित होगी।

फ्लाईओवर परियोजनाएं : कटक जिलाः राजआठगड़, राधाकिशोरपुर और मछापुर के बीच 10.89 किमी लंबा फ्लाईओवर। **रायगड़ा जिलाः** सिंगापुर रोड स्टेशन पर 5.50 किमी फ्लाईओवर। 508.75 करोड़ की संयुक्त लागत के साथ ये विकास, भारतीय रेलवे की परिचालन दक्षता में सुधार, ट्रेन की आवाजाही की क्षमता को बढ़ाने और देरी को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बेंगलुरु में एआइ इंजीनियर ने किया सुसाइड

आजाद सिपाही संवाददाता

बेंगलुरु। बेंगलुरु में एक एआइ इंजीनियर के सुसाइड का मामला सामने आया है। 34 साल के अतुल सुभाष ने अपनी पत्नी और सास पर पैसों के लिए प्रताड़ित करने का आरोप लगाते हुए सुसाइड कर लिया। उन्होंने 9 दिसंबर को 1:20 घंटे का वीडियो और 24 पेज का लेटर जारी कर कहा है कि उसके पास आत्महत्या के सिवा कोई उपाय नहीं बचा है। अतुल ने उत्तर प्रदेश के जौनपुर की एक जज पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने अपने लेटर में लिखा है कि जज ने मामले को रफा-दफा करने के नाम पर 5 लाख रुपये मांगे थे।

अतुल ने यह भी लिखा कि उसकी पत्नी, सास और जौनपुर की जज ने उसे सुसाइड करने को कहा था। मूल रूप से बिहार के अतुल सुभाष का शव बेंगलुरु के मंजूनाथ लेआउट में उनके फ्लैट से बरामद हुआ। कमरे में 'जस्टिस इज ड्यू' यानी 'न्याय बाकी है' लिखी एक तख्ती मिली। अतुल के परिवार की शिकायत पर पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया है।

जेंडर आधारित हिंसा के विरुद्ध महिलाओं ने निकाली जागरूकता रैली

रंका (आजाद सिपाही)। रंका प्रखंड के रंकाखुर्द गांव में राष्ट्रीय अभियान के अंतर्गत मंगलवार को जेंडर आधारित हिंसा के विरुद्ध महिलाओं ने जागरूकता रैली निकाली। इस अवसर पर बीआरपी सत्येन्द्र कुमार एवं सक्रिय महिला आशा देवी के द्वारा डायन बिसाही, महिला उत्पीड़न, यौन शोषण, लिंग भेद, बाल विवाह इत्यादि विषयों पर विस्तार पूर्वक जानकारी दिया गया और महिलाओं को शपथ दिलायी गयी। इस मौके पर जेएसएलपीएस रंका के बीआरपी सत्येन्द्र कुमार, आशा देवी, बबिता देवी, डोली देवी, मालती देवी, ललिता देवी, पुष्पा देवी सहित काफी संख्या में समूह की महिलाएं उपस्थित थीं।

केतार दिव्यांग संघ के अध्यक्ष रविकांत चंद्रवंशी और श्याम बिहारी बने सचिव

केतार (आजाद सिपाही)। लोहिया समता उच्च विद्यालय के प्रांगण में जिला दिव्यांग संघ के अध्यक्ष बबलू कुमार के अध्यक्षता में प्रखंड स्तरीय दिव्यांग संघ का गठन किया गया। कार्यक्रम के शुरुआत में दिव्यांग संघ के जिला अध्यक्ष एवं अनुमंडल अध्यक्ष कमलेश बिहारी को मां चतुर्भुजी शक्तिपीठ केतार की प्रतिमा सप्रेम भेंट कर सम्मानित किया। प्रखंड स्तरीय दिव्यांग संघ के अध्यक्ष रविकांत चंद्रवंशी, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी, सचिव श्याम बिहारी राम, उपसचिव रवि राम, कोषाध्यक्ष श्याम नंदन यादव,उपकोषाध्यक्ष जयराम पासवान, सूचना मंत्री राणा प्रताप यादव एवं संगठन मंत्री प्रमोद कुमार सिंह को बनाया गया। वहीं सुरजन कुमार गुप्ता, सत्येंद्र कुमार, आदित्य कुमार, अनिल यादव, सुरेश साह,संतोष कुमार को सदस्य मनोनीत किया गया। बबलू और कमलेश बिहारी ने नव नियुक्त पदाधिकारी को शुभकामना देते हुए दिव्यांगों से संबंधित हक अधिकार के बारे में विस्तृत जानकारी दिया।

नोडल पदाधिकारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। गढ़वा जिला नोडल पदाधिकारी डॉक्टर राम सुंदर सिंह ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवनाथपुर का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में अनुपस्थित एक चिकित्सक व दो एमपीडब्ल्यू की हाजिरी काटी। अनुपस्थित चिकित्सा कर्मियों में चलंत चिकित्सक डॉक्टर प्रिंस कुमार एमपीडब्ल्यू विद्यानंद प्रजापति एवं गुप्तेश्वर प्रसाद का नाम शामिल है। मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवनाथपुर में उन्होंने उपस्थित चिकित्सक एवं कर्मी को ड्रेस कोड में रहने का निर्देश देने के साथ साफ सफाई एवं मरीज से अनुकूल व्यवहार करने का निर्देश दिया। स्वास्थ्य के क्षेत्र में चलाए जा रहे अन्य कार्यक्रमों का भी निरीक्षण किया। डॉक्टर सिंह के द्वारा बताया गया कि कम संसाधन में बेहतर कार्य करने की जरूरत है। इस मौके पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर दिनेश कुमार, जिला समन्वयक रोहित सिंह, कोऑर्डिनेटर नुरुल अंसारी, प्रखंड लेखा प्रबंधक प्रदीप कुमार पाठक, अभिनीत विश्वास सहित अन्य अस्पताल कर्मी मौजूद है।

बीडीओ ने बैंक कर्मियों के साथ की बैठक

कांडी (आजाद सिपाही)। प्रखंड कार्यालय में मंगलवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी राकेश सहाय के नेतृत्व में सभी बैंक के कर्मियों के साथ बैठक किया गया। बैठक में मजदूर एवं किसानो के जनहित हेतु कई बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा किया गया, जिसमें किसान क्रेडिट कार्ड, किसान ऋण माफी योजना, गुरुजी क्रेडिट कार्ड के अलावे कई बिंदुओं पर विस्तार रूप से चर्चा किया गया ताकि सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी प्रकार की सुविधा किसानों तक पहुंचे यह योजना किसानों के लिए हितकारी हो जो बिना बिचोलीयों एवं दलालों के बिना किसानों तक इसका लाभ मिल सके इस मौके पर भारतीय स्टेट बैंक के ए.के. मिंज, झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक कंडी के शाखा प्रबंधक प्रेमवर्धन, प्रखंड उद्यमी समन्वयक चंद्रशेखर कुमार मिश्रा, प्रखंड समन्वयक पंचायती राज उमंग पांडे, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक ओमप्रकाश गुप्ता, प्रखंड कृषि पदाधिकारी शाहिद अंसारी के अलावें अन्य कई लोग मौजूद थे।

मुखिया की असामयिक मौत पर शोक सभा

रंका (आजाद सिपाही)। रंका प्रखंड अंतर्गत रंका कला पंचायत के मुखिया एवं राजेश कुमार मद्धेशिया की पत्नी सविता देवी के असमिक मौत हो जाने पर कंचनपुर सामुदायिक भवन में मंगलवार को अंबेडकर युवा क्लब के द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से दो मिनट का मौन प्रार्थना किया गया। इस मौके पर वार्ड पार्षद प्रतिनिधि सत्येन्द्र कुमार रवि, झामुमो युवा नेता संतोष कुमार रवि, संवाददाता शिव कुमार रवि, स्वयंसेवक नन्दू राम, ईश्वर कुमार, रामकेश राम, राकेश कुमार रवि, मुकेश कुमार रवि, सुधीर कुमार रवि, आनंद कुमार रवि, मुकेश चौधरी,जयसंत कुमार, अभिषेक कुमार, अमित कुमार रवि, धर्मेंद्र कुमार, बिट्ठू कुमार सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

गढ़वा वासियों की सेवा निरंतर करता रहूंगा : मिथिलेश ठाकुर

गढ़वा में जनादेश के बाद पूर्व मंत्री का बड़ा बयान

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा विधानसभा चुनाव हारने के बाद पूर्व विधायक सह मंत्री ने जनता का आभार व्यक्त करते हुए एक भावुक बयान जारी किया है। उन्होंने कहा कि गढ़वा की जनता के जनादेश का मैं सम्मान करता हूं। जिन्होंने मुझे वोट दिया, उनका आभारी हूं, और जो नहीं दे सके, उनका विश्वास जीतने का प्रयास जारी रहेगा।

उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान किये गये विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि गढ़वा के विकास के लिए मैंने हर संभव प्रयास किया। आज गढ़वा का नाम झारखंड और पड़ोसी राज्यों में चर्चा का विषय है। हालांकि, विकास कार्यों के बावजूद जनता का आशीर्वाद पाने में विफल रहा, लेकिन मैं हारा हूं, हौसला नहीं।

पूर्व विधायक ने नव निर्वाचित विधायक पर तीखे आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने झूठे और भ्रामक प्रचार के जरिए मतदाताओं को भ्रमित किया। साथ ही, उन्होंने नव निर्वाचित विधायक पर वसूली और जनता को ढाल बनाने के गंभीर आरोप लगाये।

सोशल मीडिया पर उनके परिवार पर लगाए गए आरोपों पर पूर्व विधायक ने कहा कि यदि वे अपने आरोपों को प्रमाणित कर दें, तो मैं राजनीति से सन्यास ले लूंगा। अगर आरोप झूठे साबित हुए, तो मानहानि का मुकदमा दर्ज कराया जायेगा।

पूर्व विधायक ने नव निर्वाचित विधायक को गढ़वा के विकास के लिए सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा, मैं सकारात्मक सहयोग के लिए हमेशा तैयार हूं। विकास मेरा सपना था, है और रहेगा। गढ़वा का विकास बाधित करने वाले का विरोध करूंगा। मेरा खून का हर कतरा गढ़वा की जनता को समर्पित है।

जनता डेंटल क्लीनिक में 25 मरीजों की जांच, टूथपेस्ट-दवा का वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। शहर के कचहरी रोड स्थित जनता डेंटल क्लीनिक में आज मंगलवार को निशुल्क दांत जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में जिला मुख्यालय सहित विभिन्न क्षेत्रों के 25 मरीज का जांच किया गया। इस दौरान कई मरीजों को टूथपेस्ट और दवा भी दिया गया। मरीजों की जांच दंत चिकित्सक डॉक्टर में खान ने जांच किया। इस अवसर पर डॉक्टर एमएन खान ने कहा कि लोगों को दांतों की सफाई के लिए सुबह-शाम ब्रश करना चाहिए। ठंड के मौसम में अधिक ठंडा पानी नहीं पीना चाहिए। हल्का गुनगुना करके पीना चाहिए। उन्होंने कहा जिस दांत में हल्का-फुल्का गड्ढा हो। दांत के डॉक्टर से मिलकर चेकअप करा कर उसको भरवाना चाहिए। वहीं जिन लोगों का फ्लोराइड के कारण दांत में पीलापन हो जाता है। ऐसे में पीने के पानी को चेक करा कर उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिस चापाकल से फ्लोराइड का अधिक मात्रा निकलता है। उस इलाके के लोगों को दांत पर फ्लोराइड ज्यादा खराब होता है। पानी कम पीने से भी बार-बार मुंह में छाला होता है। कई तरह का मुंह संबंधित बीमारी भी हो जाता है। अधिक गुटका पान का सेवन करने से भी मुंह में कई तरह का बीमारी हो जाता है। ऐसे में पान गुटका के सेवन करने से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिविर आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य गरीब और असहाय लोगों को मदद पहुंचाना है। डॉक्टर एमएन खान ने कहा कि कई लोग आर्थिक समस्या होने के कारण अपनी दातों का इलाज नहीं करा पाते हैं। ऐसे में यह शिविर उन लोगों के लिए वरदान साबित होगा। उन्होंने कहा कि यह शिविर 31 दिसंबर तक जारी रहेगा। इस अवसर पर कई लोग उपस्थित थे।

तीन बच्चों की मां ने की आत्महत्या

केतार (आजाद सिपाही)। सुप्रसिद्ध मां चतुर्भुजी शक्तिपीठ के समीप स्थित कुएं में केतार निवासी पिंटू प्रसाद की 26 वर्षीय पत्नी पूजा देवी छलांग लगा कर जान दे दी। मृतक के पति पिंटू प्रसाद ने बताया कि मजदूरी कर मंगलवार की शाम घर वापस आया था। पत्नी से मामूली विवाद होने के बाद पत्नी गुस्सा में आकर घर के समीप कुआं में छलांग लगा लिया। परिजनों के द्वारा शोरगुल करने पर आसपास के काफी लोग इकट्ठे हो गये। रस्सी के सहारे मृतक को कुंए से बाहर निकाला गया। कुंए में पानी रहने के कारण पूजा की मौत हो गयी। सूचना पाकर थाना प्रभारी अरुण कुमार रवानी ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा के लिए थाना ले गये। इस घटना के सूचना पाकर काफी लोग घटनास्थल पर उपस्थित हो गये थे। मृतक के तीन मासूम बच्चे हैं। इस घटना की जानकारी मिलते ही झामुमो नेता कामेश्वर सिंह, शंभू सिंह, उमेश दुबे सहित अन्य लोग पहुंचकर सांत्वना व्यक्त किया।

अबुआ आवास में गड़बड़ी की शिकायत को लेकर बीडीओ को सौंपा आवेदन

केतार (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के महत्वाकांक्षी 'अबुआ आवास' योजना में प्रखंड क्षेत्र में घोर अनीमियता की शिकायत प्राप्त हो रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रखंड क्षेत्र के परती कुशवानी निवासी रविंद्र प्रजापति प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रशांत कुमार को आवेदन देकर आरोप लगाया है कि प्रभारी ब्लॉक कोऑर्डिनेटर सह कंप्यूटर ऑपरेटर अनूप कुमार के द्वारा अबुआ आवास योजना की स्वीकृति प्रदान करने के एवज में 15000 की मांग किया गया। आवेदन में जिक्र किया गया कि जब तक पैसा नहीं देते हो तब तक अबुआ आवास स्वीकृत नहीं होगी और अबुआ आवास का पैसा नहीं मिल पायेगा। आवेदन में उल्लेख किया है कि अबुआ आवास की सूची ओबीसी कैटेगरी में क्रमांक 9 पर नाम है। परंतु आवास योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। लाभुक वरीय अधिकारियों से आवास दिलाने की गुहार लगाया है।

बाल विवाह पर रोक लगाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

डंडा। महिला हिंसा के उन्मूलन के लिए, बाल विवाह पर रोक लगाने के लिए एवं महिला अधिकार के लिए पंचायत सचिवालय भिखही के प्रांगण मे जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत पश्चात उपस्थित अतिथियों को स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के द्वारा बुके देकर सम्मानित किया गया।

जागरूकता कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुखिया वीरेंद्र चौधरी ने कहा कि सबसे ज्यादा वैज्ञानिक युग मे भी डायन भुत के प्रति अंधविश्वास है जिसके चलते गावं समाज मे रोज विवाद होता है, नशा पान के कारण घरेलु विवाद होता है, कम उम्र मे विवाह के कारण पति पत्नी के वैवाहिक जीवन मे भी घरेलु हिंसा आये दिन होता है इन कुरीतियों के खिलाफ सभी पंचायत के फ्रंट लाइन वर्कर, स्वास्थ्य सहिया, सेविका सहायिका, स्वयं सहायता समूह के सक्रिय सदस्यो, वार्ड सदस्यो, समाजसेवीयो के नेतृत्व मे टोला, गावं मे बैठक कर जागरुकता फैलाने की जरुरत है तभी इन कुरीतियों को खतम किया जा सकता है।

जागरूकता कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डंडा थाना प्रभारी अविनाश राज ने कहा कि आज के समय मे ग्रामीण क्षेत्र से पति पत्नी, सास और पुत्रवधु के बीच के विवाद थाने मे ज्यादा आता है। नई कानून 2023 मे इसमें परिवर्तन किया गया है। ऐसे शिकायते का निवारण थाना स्तर से कॉउंसिलिंग के द्वारा किया जाता है। यदि न्यायलय के पास भेजने योग्य होता है तो प्राथमिकी दर्ज की जाती है। थाना प्रभारी ने अपने संबोधन मे कहां की बच्चियों के साथ छेड़खानी यदि होती है तो पोस्को एक्ट के तहत करवाई की जाती है महिलाओ तथा बच्चियों के साथ बलात्कार जैसी घटनाओ मे अक्सर समाज उसे छुपाने का प्रयास करता है जो अत्यंत ही गंभीर मामला है। जहां तक बाल विवाह का प्रश्न है इसमें बालिकाओं की उम्र 18 वर्ष तथा बालक की उम्र 21 वर्ष मे ही शादी करना है यदि बाल विवाह कोई करते है तो दोषी पाये जानेवाले व्यक्ति पर प्राथमिकी दर्ज होगा और उन्हें 2 वर्ष की सजा होगी।

ग्रामीण महिलाओं के आय का साधन बना वन तुलसी

जितेंद्र यादव

डंडई (आजाद सिपाही)। प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में इन दिनों वन तुलसी काटने का कार्य जोरों पर चल रहा है। ग्रामीण इलाके में वन तुलसी काटकर उससे बीज निकालना आय का बड़ा साधन साबित हो रहा है। प्रखंड के लावादोनी गांव के आदिम जनजाति कोरवा जनजाति के अधिकतर महिलाएं व बच्चे वन तुलसी झारने के कार्य में लगे हुए हैं। वन तुलसी के बीज से प्रतिदिन ढाई सौ से तीन सौ रुपए कमाई कर लेते हैं। इस दौरान वन तुलसी के कटाई कर रही रुकमनी कुंवर पति स्व बसंत कोरवा ने बताई की पति के गुजर जाने के बाद बच्चों की भरण पोषण के लिए वन तुलसी के बीज झाड़ परिवारिश कर रहे है। विधवा पेंशन तो मिलेला लेकिन उतना कम पैसा में गुजारा नई हो पावेला। अब शरीर थक गाईल भारी काम नइखे होत का करूं बाबू वन तुलसी के सहारे इस समय नून, तेल, मसाला चलत बा। वही बताया कि गांव व घर में अभी कोई काम नइखे चलत। गांव में कमाए का कोई जरिया नहीं होने पर वन तुलसी हम लोगों के आय का जरिया बना हुआ है। हालांकि अफसोस की बात यह है कि यह वन तुलसी सालों भर नहीं रहता। यह दो से तीन माह ही रोजगार दे पाता है। फिर भी बिना खाद बीज और किसी खर्च के अपने आप उग जाता हैं वन तुलसी हम लोगों के लिए, आय का साधन बना हुआ है। जंगलों में अपने आप उग आए यह पौधा हम जैसे कई गरीबों के जीने का सहारा बना हुआ है। हम लोग दिन भर में 4 से लेकर 8 किलो तक तुलसी का सूखा हुआ बीज झाड़ लेते हैं। जिससे हम लोगों की कमाई ढाई से तीन सौ रुपए तक हो जाती है। इस वन तुलसी के पौधे को बाजार में 20 से 25 रुपए प्रति किलो व्यापारी के हाथों बेच देते हैं।वही लारा, सिकरिया गांव के कई आदिवासी महिलाओं ने बताया कि वन तुलसी से बीज झाड़ कर उसके दाने को बाजार में बेच दिया जाता है। इसमें कोई लागत नहीं लगता। सिर्फ मेहनत करनी पड़ती है। वही वन तुलसी का पौधा अधिकतर जंगली इलाके में आसानी से अधिक संख्या में मिल जाता है।

सड़क दुर्घटना में पंचायत सहायक के पुत्र की मौत

केतार (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के पाचाडुमर पंचायत के पंचायत सहायक भोला पासवान के 14 वर्षीय पुत्र टिभू कुमार की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार टिभू कुमार गढ़वा से अपने नाना के घर चिनिया ऑटो से जा रहा था। तभी ऑटो अनियंत्रित हो गया और टिभू को सिर में गंभीर चोट आया जिससे उसकी मृत्यु हो गया। शव घर पहुंचते ही परिजन दहाड़ मारकर रोने लगे। मौके पर उपस्थित लोग परिजनों को किसी प्रकार ढाढस बंधाकर अंतिम संस्कार किया गया। मौके पर मुखिया श्यामसुंदर बैठा, बीएफटी छोटन पासवान, पंचायत सहायक सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बाइक और ऑटो की टक्कर में दो युवक घायल

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। भवनाथपुर टाउनशिप मुख्य मार्ग के देवी धाम के समीप मंगलवार को एक ऑटो और बाईक के टक्कर में दो युवक हुए गंभीर रूप से घायल। दोनों घायलों को राहगीरों के द्वारा भवनाथपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्राथमिक उपचार के लिए भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सक द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रेफर किया गया। घायलों में दिवाकर उरांव पिता बैजनाथ उरांव, रवि उरांव पिता पलटन यादव दोनो धनीमंडरा के अधेलिया टोला निवासी है। इस घटना में दिवाकर उरांव का एक पैर बुरी तरह जख्मी हो गया है। घटना के बारे में बताया जाता है कि उक्त दोनों युवक एक ही बाईक पर सवार होकर टाउनशिप जा रहे थे और भवनाथपुर से ही एक मकरी बरवारी टोला का ऑटो में लकड़ी लेकर टाउनशिप की ओर जा रहा था कि तीखे मोड पर ओवर टेक करने के दरम्यान बाइक और ऑटो में टकराव हो गया।

उत्क्रमित उच्च विद्यालय सरांग बटोवा में प्रबंधन समिति का चुनाव

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। उत्क्रमित उच्च विद्यालय सरांग बटोवा में प्रबंधन समिति का चुनाव किया गया। चुनाव को लेकर विद्यालय के छात्र एवं छात्राएं के सभी अभिभावक उपस्थित थे। प्रबंधन समिति चुनाव के मनोनीत पर्यवेक्षक प्रदीप कुमार और इंद्रदेव राम के उपस्थिति में पूर्व समिति का तीन साल कार्यकाल पूर्ण होने पर भंग कर नया समिति का शांतिपूर्ण पुनर्गठन किया गया। इस दौरान बारह सदस्यों का चयन किया गया। सभी सदस्यों ने चांदनी कुंवर को अध्यक्ष सूर्य देव सिंह को उपाध्यक्ष सुनीता कुंवर को संयोजिका के रूप मे सर्व सम्मति से चयन किया। प्रबंधन समिति चुनाव को लेकर पूर्व समिति के सभी सदस्य भी उपस्थित थे। इस मौके पर प्रभारी प्रधानाध्याप सह प्रबंधन समिति सचिव जितेंद्र राम, बाल सांसद धीरज कुमार बैठा, वार्ड सदस्य सह उप मुखिया सरोज देवी, शिक्षक रविंद्र पाठक, अनीता कुमारी, संभु सिंह, इंद्रदेव साह, बलराम साह, पनपति देवी, सुचिता कुंवर, रेखा देवी, लीलावती कुंवर, अनीता देवी, अनिल कुमार पासवान, देवराज सिंह,भागीरथी सिंह, सरोज देवी सहित दर्जनों अभिभावक उपस्थित थे।

छत से गिरकर बच्चा घायल

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के कैलान गांव में बीती रात्रि घर के छत से गिरने से अनिल कोरवा का डेढ़ वर्षीय बच्चा घायल हो गया। स्थानीय सीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए उसे 108 एंबुलेंस से गढ़वा भेजा गया।

खेत में मिला नवजात का शव

आजाद सिपाही संवाददाता

सगमा। सगमा प्रखंड अंतर्गत घघरी गांव के तेली टोला में स्थित पिपल के पेड़ के 100 मीटर के दूरी पर नवजात शिशु को फेकने का मामले सामने आया है।

मां की ममता एक बार फिर कलंकित हुई है। धुरकी थाना क्षेत्र के घघरी में गांव के तेली टोला में स्थित पिपल के पेड़ के 100 मीटर के दूरी पर नवजात शिशु फेकने की मामले सामने आया है।

ग्रामीणो ने नवजात का शव देख पुलिस को सूचना दी

स्थानीय ग्रामीणों ने मंगलवार को 8 बजे घघरी गांव के तेली टोला में स्थित पिपल के पेड़ के 100 मीटर की दूरी पर नवजात का शव देखा। जिसके बाद लोगों ने इसकी सूचना धुरकी थाने को पुलिस को दे दिया गया है।

इस दौरान उपस्थित ग्रामीण राजेश यादव, बीडीसी प्रतिनिधि, रविन्द्र बैठा, वॉर्ड सदस्य,लोकेंद्र यादव राजेश्वर राम चंद्रवंशी, अशोक ठाकुर, स्वदेश यादव , अरविंद यादव, श्रवण राम सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे। घटना स्थल पर धुरकी थाना पुलिस पहुंचकर नवजात शिशु की शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए गढ़वा भेज दिया गया।

सीएम ने बीमार के इलाज के लिए गढ़वा डीसी को दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

भवनाथपुर। भवनाथपुर विधायक अनंत प्रताप देव की सोशल मीडिया पोस्ट पर सीएम हेमंत सोरेन ने संज्ञान लेते हुए गढ़वा डीसी को बीमार व्यक्ति की समुचित इलाज करने की व्यवस्था का निर्देश दिया।स्वास्थ्य विभाग फौरी कारवाई करते हुए उक्त व्यक्ति को गढ़वा ले गई। उल्लेखनीय है कि भवनाथपुर प्रखंड के बनसानी पंचायत के रोहनिया निवासी रानू अगरिया पिता कल्पनाथ अगरिया बीते कई महीनो से घुटने के जख्म का इलाज पैसे के अभाव में नहीं कर पा रहा था। उक्त व्यक्ति की पीड़ा को समझते हुए विधायक अनंत प्रताप देव ने अपने ट्विटर हैंडल से पर फोटो सहित उक्त व्यक्ति का दर्द पोस्ट किया। मुख्यमंत्री ने तुरंत संज्ञान लेते हुए उक्त व्यक्ति के इलाज की व्यवस्था करने का आदेश गढ़वा डीसी को दिया। गढ़वा डीसी के निर्देश पर रानु अगरिया को मंगलवार को एंबुलेंस से गढ़वा भेजा गया। इधर चिकित्सा प्रभारी दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि उक्त व्यक्ति का जख्म लगभग 2 साल पुराना लग रहा है, शायद पैसे के अभाव में वह इलाज नहीं कर पाया होगा। भवनाथपुर विधायक की यह पहल सोशल मीडिया पर खूब प्रशंसा बटोर रही है।

राशन के लिए दर-दर भटकने को मजबूर है दिव्यांग महिला

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीह। सरकार सभी परिवारों को राशन उपलब्ध कराने को लेकर लाखों दावे करती है, परंतु बरवाडीह प्रखंड मुख्यालय क्षेत्र अन्तर्गत मंगरा पंचायत के हिंदेहास निवासी आदिम जनजाति परिवार (परहिया)की महिला, बसमतिया देवी की दस्ता सुन रूह कांप जायेगा। दरअसल मामला यह है कि बसमतिया देवी पूर्ण रूप से विकलांग है, लेकिन उसके बाउजूद भी पिछले कई वर्षों से राशन नही मिल रहा है और दर बदर भटकने को मजबूर हैं। सरकार राशन वितरण करना सुनिश्चित कर रही, लेकिन इसके बावजूद अभी भी कई ऐसे जरूरत असहाय लोग है जो राशन से वंचित हैं। इसी तरह का एक मामला आदिम जनजाति बाहुल्य इलाका प्रखंड मुख्यालय क्षेत्र अन्तर्गत मंगरा पंचायत के हिंदेहास निवासी आदिम जनजाति

(परहिया) की महिला बसमतिया देवी (58वर्ष) का सामने आया है। वृद्ध दिव्यांग महिला को कुछ वर्षों पूर्व राशन मिलता था, लेकिन राशन कार्ड गुम हो गया और राशन मिलना बंद हो गया है। अब प्रखंड कार्यालय का चक्कर लगा रही है। मंगलवार को एक बार पुनः आदिम जनजाति परहिया परिवार के दिव्यांग महिला बैसाखी के सहारे प्रखंड कार्यालय राशन संबंधित पूछताछ को लेकर पहुंची, लेकिन उसकी सुद्धि तक किसी ने लेना उचित नही समझा और निराश होकर घर वापस हो गयी। दिव्यांग महिला का कहना है कि बीते एक वर्षों से वह लगातार प्रखंड कार्यालय का राशन कार्ड बनाने को लेकर चक्कर लगा रही हैं , लेकिन अब तक उसका राशन कार्ड नहीं बना, जिससे वह राशन लेने से वंचित हैं। वृद्ध दिव्यांग महिला ने कहा कि राशन कार्ड को लेकर पंचायत की जनप्रतिनिधियों से भी गुहार लगायी, लेकिन अब तक उसकी राशन कार्ड नहीं बनी हैं। प्रभारी आपूर्ति पदाधिकारी रामनाथ यादव ने कहा की कुछ दिन पहले ही योगदान लिया हूं। मामले को संज्ञान में लेते हुए वृद्ध महिला का जल्द से जल्द राशन कार्ड बनाने का प्रयास किया जायेगा

मामले पर पूर्वी जीप सदस्य कन्हाई सिंह ने कहा

इस संबंध में जिप सदस्य कन्हाई सिंह ने कहा कि राशन से वंचित दिव्यांग महिला का मामला काफी दुःखद है महिला आदिम जनजाति परिवार से तालुकात तो रखती है परन्तु दिव्याग का सुद्धि नही लिया जाना दुःखद है। प्रखंड कार्यालय पहुँचने के बाद भी अगर मामला पर ध्यान नही दिया जाता है। तो यह गम्भीर विषय है। जिला परिषद मासिक बैठक मे मामले को उठाते हुए जल्द से जल्द राशन कार्ड बनवाया जायेगा और पीड़ित की हरसम्भव मदद की जायेगा।

मामले पर पश्चिमी जीप सदस्य सन्तोषी शेखर ने कहा

मामले की सूचना मिली है गंभीर विषय है। प्रखंड कार्यालय के द्वार तक पहुंचने के बाद भी समस्या का निदान नही किया जा रहा है, तो ये दुःखद है। आपूर्ति विभाग पूरी तरह से बरवाडीह मे भ्रष्ट हो चुकी है। मामले को लेकर जिले के उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता को आकर्षित कराया जायेगा और बसमतिया देवी का समस्या का निदान कराया जायेगा।

विवेकानंद जयंती पर आयोजित होगा एक शाम आंजन धाम महोत्सव कार्यक्रम

लोहरदगा(आजाद सिपाही)। स्वामी विवेकानंद जयंती पर लोहरदगा गुमला सिमडेगा जिले के धार्मिक और पर्यटक स्थल आंजन धाम टोटो को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए आंजन धाम समिति द्वारा आंजन धाम में तीन दिवसीय आंजन महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इसका शुभारंभ 12 जनवरी को एक शाम आंजन महोत्सव के साथ होगा, जिसमें काशी के आचार्यों द्वारा पूजा के बीच रुद्राभिषेक कराया जायेगा. तीन दिवसीय महाभंडारा और अखंड हरिकीर्तन के साथ संगीतमय सुंदरकांड पाठ, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ किया जायेगा। यह जानकारी समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्योतिषविद पंडित दिवाकर पाठक ने प्रेस कान्फ्रेंस में दी. उन्होंने बताया कि समिति बीते दो वर्षों से आंजन धाम में एक शाम आंजन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग शामिल होते रहे हैं। इस बार अधिक धूमधाम से महोत्सव मनाया जायेगा. वहीं पंडित दिवाकर ने बीते माह गुमला के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आंजन धाम की चर्चा करने पर धन्यवाद दिया। साथ ही बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की प्रेस वार्ता के माध्यम से कड़ी शब्दों में निंदा की. दिवाकर पाठक ने कहा कि जिले में आंजन धाम के साथ रामरेखा धाम, टांगीनाथ धाम, मां दशभुजी मंदिर पालकोट, देवगांव गुफा, वासुदेव कोना, हीरादह, बर महादेव, रंगनाथ मंदिर, पांच पांडव पहाड़, सीरा-सीताधाम, टांगीनाथ धाम, देवाकी धाम, हापामुनी महामाया मंदिर, कोरांबे जगन्नाथ मंदिर, चंदवा गड़गांव, खकपरता शिवमंदिर, नागफेनी जगन्नाथ मंदिर, नवरत्न गढ़, कपिल नाथ मंदिर, महादेव मंडा बसिया, केतुका धाम समेत कई धार्मिक व पर्यटक स्थल है. हमारी मांग है कि सरकार उन सभी स्थलों को कॉरिडोर के रूप में विकसित कर गुमला को वैश्विक पहचान दिलायें और गुमला, लोहरदगा व सिमडेगा जिले को पर्यटक हब के रूप में विकसित करें. प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुकेश सिंह पप्पु, उदय पंडित, अभय महतो, विजय भगत, मनीष राजगढ़िया, सुनील अग्रवाल, प्रदीप सिंह, बबलू महतो आदि शामिल थे।

जीवन में सीखी हुई चीजों को आत्मसात करें : डॉ श्रेया

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा। प्रखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत सहिया और साथिया तथा किशोर किशोरियों का स्वास्थ्य सम्बन्धी द्वितीय चरण का गैर आवासीय छह दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ श्रेया कुमारी ने बच्चे बच्चियों से कहा कि जीवन में सीखे हुए हर चीजों को आत्मसात करें साथ हो कहा कि प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षकों द्वारा जो भी चीजें बतायी गयी है। उस के निमित आपस मे एक दूसरे का सहयोग करें और गांव जा कर आस पास अगल बगल के लोगों को जानकारी देते हुए जागरूक करने का प्रयास करें। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षकों द्वारा किशोर किशोरियों को स्वास्थ्य से सम्बंधित पारस्परिक सम्बन्ध, भवनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य, मूल और जिम्मेदार नागरिकता, जेंडर और लिंग,पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता, मादक पदार्थ की रोक थाम का प्रबंधन,स्वास्थ्य जीवन शैली,प्रजनन क्षमता और एचआइवी का रोक थाम,हिंसा और चोट के खिलाफ सुरक्षा तथा इन्टरनेट और सोशल मीडिया का सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देने सहित विभिन्न बिंदुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया था.साथ ही सम्बन्धित सहियाओं को मानसिक,भवनात्मक और कल्याण के बारे में विस्तारकपूर्वक बताया गया था। समापन पर किशोर किशोरियों को रोलप्ले व गेम के माध्यम से प्रशिक्षण के बारे में जानकारी ली गयी। मौके पर बिटीटी लीलावती देवी एएनएम दिव्या किरण,नौमी खाखा, तिलोत्तमा कुमारी, लीलावती कुमारी सहिया शकुंतला देवी, मानती देवी, उपस्थित थे।

किस्को प्रखंड में सशस्त्र सीमा बल 32वीं वाहिनी ने चलाया स्वच्छता अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। 1 दिसंबर से 15 दिसंबर तक भारत सरकार द्वारा मनाए जा रहे स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत मंगलवार को किस्को प्रखंड में स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें सशस्त्र सीमा बल 32वीं वाहिनी गुमला सिलम के कमांडेड राजेश सिंह के दिशा निर्देशन में सशस्त्र सीमा बल किस्को के प्रभारी इंस्पेक्टर मनीष कुमार चौबे के नेतृत्व मे विभिन्न सामुदायिक स्थलों पर स्थानीय जनता के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें किस्को प्रखण्ड परिसर और चौक चौराहे में वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। मौके पर साफ सफाई अभियान चलाकर स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। साथ ही अपने घरों, दुकानों के आलावे चौक-चौराहा को साफ-सफाई रखने का अपील की गई। सफाई अभियान सशस्त्र सीमा बल के अलावे किस्को प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी उदय कुमार महतो, अंचल नाजिर रोशन कुमार, ब्लॉक और अंचल के कर्मचारी सहित ग्रामीण मौजूद थे।

लोगों की समस्याओं को दूर करना जिला प्रशासन की प्राथमिकता:उपायुक्त

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में उपायुक्त कार्यालय कक्ष में साप्ताहिक जन शिकायत निवारण का आयोजन किया गया। जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र से आए लोगों ने अपनी अपनी समस्याओं को उपायुक्त के समक्ष रखा। जन शिकायत निवारण के दौरान उपायुक्त ने वहां उपस्थित सभी लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी एवं अश्वासन दिया कि उनके सभी शिकायतों की जल्द से जल्द जांच कराते हुए शिकायतों का समाधान किया जायेगा। बिजली आपूर्ति को लेकर चंदवा प्रखंड के ग्राम चटुवाग के निवासी जीतन तोपनो और अन्य ग्रामीण जन शिकायत निवारण में पहुंचे। जहां उन्होंने बताया कि ग्राम चटुवाग में बिजली की काफी दिक्कत है। उक्त स्थल पर बिजली की पॉल

और तार की आवश्यकता हैं। उपायुक्त ने कार्यपालक अभियंता, विद्युत आपूर्ति प्रमंडल को ग्रामीणों की समस्या को गंभीरतापूर्वक लेते हुए जल्द से जल्द विद्युत आपूर्ति की समस्या का हल करने का निर्देश दिया। इसी प्रकार अन्य लोगों ने भी अपनी समस्याएं रखीं तथा लोगों से प्राप्त आवेदन के आलोक में उपायुक्त ने समस्या निदान के लिए त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया। आज के जन शिकायत निवारण में कुल 17 आवेदन प्राप्त हुए जो मुख्य रूप से वृद्धा पेंशन,प्रधानमंत्री आवास,जमीन संबंधी, अनुकंपा और मुआवजा राशि संबंधी जुड़े आवेदन आये जिसे उपायुक्त ने संबंधित विभागों के पदाधिकारियों को अग्रसारित कर जल्द से जल्द निष्पादित करने का निर्देश दिया। ज्ञात हो कि आज के जन शिकायत में विभिन्न आवेदन शिकायत के रूप में आये , जो कि जिले के विभिन्न विभागों से संबंधित थे। जन शिकायत में सभी शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को कड़े शब्दों में निदेशित किया कि सभी आवेदनों का भौतिक सत्यापन करते हुए , समस्याओं का समाधान जल्द से जल्द करें। जन शिकायत निवारण के दौरान उपायुक्त ने लोगो को पूर्ण भरोसा दिलाया कि आपकी समस्याओं को दूर करना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। जिला प्रशासन विधि सम्मत आपकी हर समस्याओं को दूर करने का प्रयास करेगा। इसके अलावे जन शिकायत निवारण के दौरान उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निदेशित किया कि सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं और योजनाओं का लाभ अंतिम पायदान के अंतिम व्यक्ति को मिले इस पर विशेष ध्यान दें। उपायुक्त के निदेर्शानुसार आमजनों की समस्याओं के समाधान और शिकायत के निष्पादन हेतु जिला, अनुमंडल, प्रखंड स्तरीय के सभी पदाधिकारियों के कार्यालय में प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को जन शिकायत निवारण का आयोजन किया जाता है।

इ-केवाइसी के नाम पर सिंजो पंचायत के प्रज्ञा केंद्र कर रहे हैं अवैध वसूली

मनिका (आजाद सिपाही)। जिले में इन दिनों राशन कार्ड का इ-केवाइसी यानी आधार सीडिंग का कार्य किया जा रहा है। इ-केवाइसी प्रज्ञा केंद्र के माध्यम से हो रहा है। इ-केवाइसी के नाम पर कार्डधारियों से मनिका प्रखंड के सिंजो पंचायत के संचालक के द्वारा अवैध वसूली की जा रही है, जिससे कार्डधारी परेशान हैं। जिला आपूर्ति विभाग द्वारा इ-केवाइसी निःशुल्क करने का निर्देश सभी डीलरों व प्रज्ञा केंद्र को दिया है, इसके बावजूद कार्डधारियों से अवैध वसूली कर रहे हैं। कहीं प्रति कार्ड 100 से 150 रुपया तो कहीं कार्ड में दर्ज परिवार के प्रति सदस्य 30 रुपया लिया जा रहा है। पैसा नहीं देने पर द्वारा इ-केवाइसी नहीं करने की धमकी दी जा रही है। बता दें कि राशन कार्ड में दर्ज प्रत्येक सदस्य का 31 दिसंबर 2024 तक निःशुल्क आधार सीडिंग कराना है। यह प्रक्रिया पीडीएस दुकान पर इ-पॉश मशीन के माध्यम से पूरी की जा रही है, इसे लेकर प्रज्ञा केंद्रों में भीड़ लग रही है। कार्डधारियों ने उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता से इ-केवाइसी के नाम पर अवैध वसूली पर रोक लगाने की मांग की है. इस संबंध में जिला आपूर्ति पदाधिकारी ने कहा कि राशन कार्डधारियों का इ-केवाइसी निःशुल्क करना है। इ-केवाइसी के नाम पर डीलरों द्वारा राशि मांगने का मामला संज्ञान में है। उन्होंने राशन कार्डधारियों से किसी को भी पैसा नहीं देने की अपील की। पैसा लेने वाले लोगो को कानूनी प्रक्रिया संगत कार्रवाई की जायेगी।

कोल्हान की खबरें

सरकारी जमीन बिक्री मामले में 45 लोगों पर जेपीएलइ मामला दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। पोटका प्रखंड अंतर्गत कुल्दीहा पंचायत इन दिनों चर्चा में है। चर्चा का मुख्य कारण यह नहीं है कि यहां पर कोई कारखाना खुल रहा है या कोई कारखाना बंदी के कगार पर है। बल्कि इस लिए चर्चा में है कि कुलदिहा के 33 एकड़ सरकारी जमीन को भू माफियाओं ने बिक्री कर मालामाल हो गए। अब जिला प्रशासन के द्वारा इसका खोजबीन किया गया तो पता चला कि यहां के गरीब भू माफिया घर बनाने के नाम पर सरकार से जमीन बंदोबस्त करा लिए तथा उसे अधिक दामों पर बिक्री कर दिए। कुछ कृषि कार्य के लिए बंदोबस्त कराए तथा उस पर दुकान बनाकर व्यवसाय शुरू कर दिए। इसके अलावा कुछ लोग सीधे रूप से सरकारी जमीन का अतिक्रमण किए इसके बाद उसे प्लॉट बनाकर बिक्री कर दिए। जिला प्रशासन के द्वारा वैसे लोगों को चिन्हित कर कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू किया गया है। पोटका

के अंचल अधिकारी निकिता बाला ने खाता संख्या 395 के प्लॉट संख्या 213, 418, 434 तथा 530 पर अवैध रूप से कब्जा करने वाले झारखंड भूमि अतिक्रमण एक्ट(जे पी एल ई) के तहत 45 लोगों पर मामला दर्ज किया है। प्लॉट संख्या 418 पर 29 लोग, 434 पर 3 लोग, 213 पर 11 लोग और 530 पर 2 लोगों का अवैध कब्जा है। इन्हें निर्देश दिया गया है की निर्धारित तिथि के अनुसार सीओ के कोर्ट में उपस्थिति दर्ज कराते हुए अपना पक्ष प्रस्तुत करें। अन्यथा सरकारी प्रक्रिया के तहद जमीन को आर्थिक मुक्त कराया जाएगा। कुलदिहा में पार्वती मुर्मू को कृषि कार्य के लिए जमीन बंदोबस्त किया गया था, लेकिन कृषि कार्य के बदले उसपर 26 दुकान बनाकर व्यवसाय किया जा रहा है। सभी 26 दुकानदार को भी नोटिस दिया गया है। सरकारी प्रावधान के अनुसार कहीं भी सरकारी जमीन का अतिक्रमण होता है तो वहां के अंचल अधिकारी तथा स्थानीय थानेदार दोषी होंगे। फिर इन पदाधिकारी पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई। पिछले पांच सालों से सरकारी जमीन का अतिक्रमण किया जा रहा था तथा उस पर आलीशान भवन बनना जारी रहा। सभी सीओ अपना अवधि पूरा कर चलते बने।आम लोगों का कथन है कि यहां पर सरकारी जमीन के अतिक्रमण तथा बिक्री में स्थानीय पुलिस का भी काफी सहयोग मिला। यहां तक कि जिन अवैध भवन के निर्माण पर रोक लगाने का पुलिस को निर्देश दिया गया था उस भवन का तेजी के साथ निर्माण हुआ तथा दुकान भी खोल दिए गए।

जिन लोगों ने सरकारी जमीन का अतिक्रमण किया है उनका नाम इस प्रकार है

जनार्दन सिंह 13 डिसमल, चांद महुरी 2, रक्षा कर महतो 3, महावीर सिंह 3, ग्यानी सिंह 7, सुरेन्द्र कौर 6, सपन भक्त 3, ज्ञानी सिंह 4, प्रभु दयाल महूरी 8, गोविन्द दास 11, देवेंदर सिंह 18, सुनील कुमार बेसरा 3, लक्ष्मण मर्डी 6, कृष्णा 10, सकला मुर्मू 10, सुराई टुडू 10, भवानी 1, अर्जुन भक्त 10, ब्रोजैन भक्त 4, हेम लता 4, सोना राम हेंब्रम 8, गुरु पदों मोदक 6, रमेश दास 6, समीर साव 1, पार्वती सोरेन 6, अपु गिरी 3, मंगल सिंह 1, सनातन भक्त 10, फोकार हो 10, छवि राम हो 10, कृष्णा बारीक 5, संतोष कुमार भक्त 4 डिसमिल आदि है।

रेलिंग से झूलता मिला व्यक्ति का शव

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। सरायकेला थाना अंतर्गत मांझना घाट नया पुल के रेलिंग से झूलता एक व्यक्ति का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। मंगलवार सुबह स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना

पूर्व विधायक प्रतिनिधि सनंद कुमार आचार्य को दी। उन्होंने तत्काल फोन से सरायकेला पुलिस सूचना दी। मौके पर सरायकेला पुलिस घटना स्थल पहुंच कर रेस्क्यू में जुट गए। मृतक की पहचान सरायकेला पति टोला निवासी 43 वर्षीय रंजीत पति के रूप में हुई। स्थानीय लोगो के अनुसार रंजीत किराना दुकान चलाता था। सुबह भी दुकान के आसपास झाड़ू लगाने के बाद मॉर्निंग वॉक में गया था। थोड़ी देर बाद रेलिंग से रस्से के सहारे झूलने की सूचना मिली।

डीसी के निर्देश पर मानगो नगर निगम क्षेत्र से हटा अतिक्रमण

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। जिले के डीसी अनन्य मित्तल के निर्देश पर मानगो में ट्रैफिक समस्या को बेहतर करने के अभियान चलाया गया। मंगलवार को नगर निगम के द्वारा मानगो चौक से डिमना चौक के रास्ते में सेंट्रल वर्ज के किनारे सड़क से अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान अवैध तरीके से सड़क किनारे अस्थाई रूप से बैठने वाले सब्जी विक्रेताओं, ठेला-खोमचा संचालकों व अन्य दुकानदारों से सड़क को अतिक्रमण मुक्त किया गया। साथ ही जानमाल की सुरक्षा को देखते हुए खुले स्थान पर दुकान लगाने की सख्त चेतावनी दी गयी, ताकि सड़क किनारे जोखिम लेकर दुकान न लगे। इससे जाम की भी समस्या बनी रहती है। वही दोबारा से अतिक्रमण करने पर विधि सम्मत कार्रवाई की चेतावनी दी गयी। मौके पर मानगो नगर निगम के सहायक नगर आयुक्त आकिब जावेद की देखरेख में सड़क किनारे से अतिक्रमण हटाया गया। अभियान में स्थानीय पुलिस पदाधिकारी,क्यूआरटी और पर्याप्त संख्या में पुलिस बल

मौजूद रहे। वही अतिक्रमण हटाने के साथ ट्रैफिक कन्ट्रोल के लिए अतिरिक्त मानव बल की भी प्रतिनियुक्ति की गयी, ताकि लोग सुगमता से आवागमन कर सकें। बताया जा रहा है कि जिला प्रशासन के द्वारा मानगो में ट्रैफिक व्यवस्था की लगातार समीक्षा कर आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं, ताकि मानगो वासियों को आवागमन में आसानी हो सके।

उर्दू शिक्षक संघ ने बंद विद्यालय को खोले जाने का मंत्री के निर्णय का किया स्वागत

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। झारखंड राज्य उर्दू शिक्षक संघ, पूर्वी सिंहभूम जिला कमेटी की एक बैठक राजकीय उर्दू बालिका मध्य विद्यालय, हल्दीपोखर में मंगलवार को आयोजित किया गया। बैठक में मुख्य अथिति के रूप में संघ के केंद्रीय महासचिव अमीन अहमद उपस्थित थे। मौके पर उन्होंने कहा कि विधायक रामदास सोरेन जी को हेमंत सरकार पार्ट टू में स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग का मंत्री बनाने का संघ स्वागत करता है। शिक्षा मंत्री के रूप में रामदास सोरेन अच्छा रिजल्ट देंगे । उन्होंने कहा कि श्री सोरेन एक मृदुभाषी व्यक्ति होने के साथ साथ झारखंड आंदोलन के अनुभवी व्यक्ति हैं, इनके अनुभव का सकारात्मक परिणाम निश्चित रूप से शिक्षा विभाग में देखने को मिलेगा। मंत्री जी के द्वारा रामदास सोरेन के द्वारा विभिन्न मुद्दों पर त्वरित रूप से संज्ञान में लेते हुए ठोस पहल किया जाना एक नेक शुरूआत है। उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री रहे रघुवर दास सरकार के कार्यकाल में मर्ज कर बंद किये गए विद्यालयों को नए शिक्षा मंत्री द्वारा पुनः खोले जाने के निर्णय छात्र हित में बेहतर परिणाम सामने आयेगा। बंद विद्यालय खुलने से बच्चों को उनके आवास के निकट ही पठन पाठन की सुविधा मिलेगी और शत प्रतिशत बच्चे विधालय से जुड़ सकेंगे। क्षेत्रीय भाषा अथवा अपनी मातृभाषा में पढ़ाई की व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने की पहल से आर टी ई 2009 का अनुपालन करने की दिशा में ठोस कदम साबित होगा। इसके साथ ही झारखंड राज्य उर्दू शिक्षक संघ शिक्षा मंत्री से अपेक्षा रखती है कि जल्द ही वे शिक्षा एवं शिक्षक हित में ठोस कदम उठायेंगे और तमाम लंबित मामलों पर उचित निर्णय लेंगे।

सड़क दुर्घटना में स्कूटी सवार की मौत

जमशेदपुर(आजाद सिपाही)। शहर के मानगो थाना अंतर्गत छोटा पुल से गुजर रहे एक स्कूटी सवार को अज्ञात वाहन ने मंगलवार दोपहर में टक्कर मार दी। मौके पर स्थानीय लोगों ने घायल स्कूटी सवार को एमजीएम अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उधर घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस घटना स्थल पहुंची। जहां दुर्घटनाग्रस्त स्कूटी को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी। बताया जा रहा है मृतक व्यक्ति का अजहर नाम से पहचान हुई है। वह आजाद नगर 13f के रहने वाले है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

अलाव की व्यवस्था में देर, नप की उदासीनता : दामोदर कसेरा

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। दिसंबर आधा माह बीत जाने के बवाजूद आज तक गुमला में अलाव की व्यवस्था नहीं हो पाई है। गत 29 नवंबर को अनुमंडल पदाधिकारी के अध्यक्षता मे अतिक्रमण से संबंधित बैठक में अलाव के मुद्दे पर भी वार्ता की गयी थी। इस बैठक में नगर परिषद के सिटी मैनेजर भी मौजूद थे। चेंबर अध्यक्ष ने कहा कि बैठक में उन्होंने अलाव जलाने का आग्रह किया था पर आज तक अलाव की व्यवस्था नहीं हुई है। जो अपने आप में एक सवाल है। जबकि आपदा प्रबंधन से अलाव के लिए फंड भी उपलब्ध कराया जाता है। ऐसे में किसी तरह का दिक्कत होना उनकी समझ से परे है।

उन्होनें नगर परिषद के प्रशासक से मांग की है कि अलाव की व्यवस्था करें। ताकि गरीबों, बेसहारों फुटपाथ पर जीवन बसर करने वालों और आम लोगो को ठंडा से राहत मिल सके।

साप्ताहिक जन शिकायत निवारण दिवस का आयोजन
डीसी ने समस्याओं का किया निष्पादन

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में साप्ताहिक जन शिकायत निवारण दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य जिले के नागरिकों की समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना था। उपायुक्त ने प्रत्येक आवेदकों की समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

प्रमुख मामले और समाधान

सारंगो नवाटोली का मामला

एक आवेदिका ने अपने आवेदन में बताया कि उनके पिता, जो सदर अस्पताल में कार्यरत थे, की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र को नौकरी दी गयी। परंतु पुत्र परिवार की आर्थिक मदद करने से इंकार कर रहा है। इस पर उपायुक्त ने सिविल सर्जन, गुमला को इस मुद्दे पर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिये।

बसिया प्रखंड का मामला

ग्राम बानागुटु के आवेदक ने शिकायत की कि डीलर द्वारा राशन वितरण में गड़बड़ी की जाती है और तौल में भी अनियमितताएं हैं। आवेदक ने डीलर को बदलने की मांग की। उपायुक्त ने इस विषय पर जिला आपूर्ति पदाधिकारी को जांच कर उचित कदम उठाने के निर्देश दिये।

अन्य प्रमुख विषय

जन शिकायत निवारण दिवस के दौरान, राशन, पेंशन, शिक्षा, रोजगार, अबुआ आवास योजना, ई-ट्राय साइकिल और अन्य योजनाओं से संबंधित कई आवेदन प्राप्त हुए। उपायुक्त ने संबंधित विभागों को आवेदकों की समस्याओं का समाधान शीघ्र सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने कहा कि जन शिकायत निवारण दिवस का उद्देश्य नागरिकों को प्रशासन के प्रति विश्वास दिलाना है। प्रत्येक समस्या का गहनता से समाधान करना हमारी प्राथमिकता है। संबंधित अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करें।

कामडारा में हाथियों ने दो मकानों को तोड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

कामडारा। कामडारा प्रखंड क्षेत्र के अंतर्गत गांव कजरा में बीती सोमवार की रात को जंगली हाथियों ने उत्पात मचाते हुये कुल दो लोगों के मकान को क्षतिग्रस्त किया। जबकि आसपास के खेतों पर लगी सब्जी और धान की फसलों को रौंदकर बर्बाद किया। उक्त जंगली हाथियों की संख्या लगभग 6 के आसपास है।बताया जा रहा है कि उक्त जंगली हाथियों का झूंड बीती सोमवार की रात लगभग 12 बजे के आसपास विचरण करते हुये गांव कजरा में प्रवेश कर गये। इसके बाद सबसे पहले ग्रामीण भीमसेंट बरला के मकान को क्षतिग्रस्त किया और घर के अंदर रखे लगभग दो किंवटल धान को खाकर बर्बाद किया। उसके बाद जंगली हाथियों का झुंड ग्रामीण डेविड बरला के मकान को क्षतिग्रस्त किया और घर के अंदर रखे धान, चावल, आटा, उरद सहित अन्य अनाज को खाने के पश्चात अन्य घरेलु सामग्रियों को भी बर्बाद किया। इसके अलावे जंगली हाथियों ने पौलुस बरला के खेत पर लगे आलू को रौंदकर बरबाद कर दिया। वहीं मारकुस बरला के खलिहान पर रखे धान को भी खाकर बर्बाद किया। इसी के साथ ग्रामीण राजेश बरला और नुएल बरला के बारी मे लगे आलू, टमाटर, केला को पूरी तरह से रौंदकर बर्बाद कर दिया है। इधर घटना की जानकारी मिलते ही बसिया वनप्रमंडल के वनपाल लिबनुस कुल्लू के नेतृत्व पर वनकर्मियों की टीम मंगलवार की सुबह में गांव कजरा पहुंची।

लैंगिक हिंसा पर समाज कल्याण ने किया कार्यशाला का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर और लैंगिक हिंसा के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान नई चेतना 3.0 के तहत, स्थानीय नगर भवन में लिंग आधारित हिंसा विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जिला समाज कल्याण विभाग और झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन आइटीडीए परियोजना निदेशक द्वारा पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय), जिला शिक्षा पदाधिकारी, सचिव डालसा, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक जेएसएलपीस, और प्रभारी महिला थाना की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर स्वयं सहायता समूह की दीदियां और आंगनबाड़ी सेविकाएं भी उपस्थित रहीं।

महिला हिंसा उन्मूलन पर चर्चा : कार्यशाला में उपस्थित अतिथियों ने महिला हिंसा के कारणों और इसके निवारण के उपायों पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के दौरान सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने जेंडर प्रतिज्ञा ली और समाज में लिंग आधारित हिंसा को समाप्त करने के संकल्प को दोहराया।

जेंडर हिंसा के खिलाफ अभियान पखवाड़ा के समापन के रूप में किया गया। इस दौरान गुमला जिला के विभिन्न उच्च विद्यालयों, महाविद्यालयों, प्रखंडों और पंचायत स्तर पर आयोजित जागरूकता सत्रों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया।

कानूनी जानकारी और जागरूकता सत्र : कार्यशाला में महिला और बच्चों के खिलाफ हिंसा रोकने के लिए विभिन्न कानूनी प्रावधानों पर प्रकाश डाला गया।

राजेश और आनंद ने की राज्यपाल से मुलाकात

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। क्षेत्र के चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता राजेश कुमार सिंह एवं आनंद कुमार गुप्ता ने मंगलवार को झारखंड के राज्यपाल महामहिम संतोष कुमार गंगवार से शिष्टाचार मुलाकात कर गुमला क्षेत्र के विभिन्न समस्याओं को रखा एवं एवं उसके निराकरण के लिए राज्यपाल महोदय से आग्रह किया। जिसमें प्रमुख रूप से गुमला को रेलवे लाइन से जोड़ने एवं गुमला के बिशनपुर क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में बॉक्साइट पाए जाते हैं जिसके लिए गुमला में बॉक्साइट आधारित कारखाने को स्थापित करने के लिए उनसे उचित पहल की मांग की, गुमला में रेलवे लाइन लगने एवं बॉक्साइट आधारित कारखाना खुल जाने से यहां के लोगों के लिए रोजगार के मार्ग प्रशस्त होंगे एवं दूसरे प्रदेशों में रोजी रोटी के लिए पलायन से निजात मिलेगी और क्षेत्र का सर्वांगीण विकास होगा। सारे समस्याओं को सुनने के बाद महामहीम ने बातों को गंभीरता से लेते हुए उचित पहल करने का आश्वासन दिया। मुलाकात करने वालों में राजेश सिंह आनंद गुप्ता एवं भूमि शामिल थे।

युवक ने कीटनाशक खाकर की आत्महत्या

कामडारा (आजाद सिपाही)। कुरकुरा थाना क्षेत्र अंतर्गत रामपुर पंचायत के टाटी गांव निवासी खतिरन डांग (35) ने सोमवार देर शाम कीटनाशक का सेवन कर आत्महत्या कर ली। बताया जाता है कि खतिरन कीटनाशक का सेवन कर अपने कमरे में जाकर चुपचाप सो गया था। जब उसकी पत्नी खाना खाने के लिए उसे उठाने गयी तो उसके मुंह से कीटनाशक की गंध आने लगी तभी उसने आस पड़ोस के लोगों को इसकी जानकारी दी जिसके बाद आनन फानन में उसे रेफरल अस्पताल बसिया लाया गया। लेकिन अस्पताल पहुंचने से पूर्व ही खतिरन ने दम थोड़ दिया था। समाचार लिखें जाने तक आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल पाया था। लेकीन संभावना व्यक्त की जा रही है की किसी विवाद के कारण खतिरन ने आत्महत्या कर ली।घटना की सुचना मिलते ही मंगलवार सुबह कुरकुरा थाना की पुलिस रेफरल अस्पताल बसिया पहुंच कर मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गुमला भेजते हुए मामले कि तहकीकात में जुटी हैं।

डीडीसी ने शिवराजपुर पंचायत का भ्रमण किया

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। डीडीसी दिलमेश्वर महतो ने मंगलवार को घाघरा प्रखंड के शिवराजपुर पंचायत का भ्रमण किया। इस दौरान आम बागवानी, आवास योजना, कूप निर्माण सहित चल रहे कई योजनाओं का अवलोकन किया। इस दौरान कई आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। आम बागवानी में किए गए मिश्रित खेती को देख काफी खुश हुए और उन्होंने कहा सिंचाई को लेकर यदि किसी भी तरह की समस्या होती है तो त्वरित जानकारी मुझे दे सीसी कतरी डैम से निकलने वाले नहर से सिंचाई की व्यवस्था तत्काल किया जाएगा। साथ ही कूप निर्माण में जिस कुआं का मुंडेरा नहीं बना है उसे जल्द से जल्द बनाने का निर्देश दिया। साथ ही विकास के काम में तेजी लाने की बात कही। इस मौके पर मुख्य रूप से बीडीओ दिनेश कुमार, बीपीओ बेबी कुमारी, सत्येंद्र उरांव, सतीश बंसल, श्याम साहू, विनोद उरांव, दिलबंधु मांझी सहित कई लोग मौजूद थे।

व्यक्तित्व विकास वर्ग में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय के छात्रों ने पांच स्वर्ण, तीन रजक और एक कांस्य पदक जीता

आजाद सिपाही संवाददाता

बसिया। एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय बसिया के छात्रों ने गुमला विभाग अंतर्गत तीन संकुलों, क्रमशः गुमला कैम्बा तथा रायडीह संकुल के अंतर्गत संचालित विद्या भारती विद्यालयों के छात्रों के लिए आयोजित व्यक्तित्व विकास वर्ग में 5 स्वर्ण 3 रजक तथा 1 कांस्य पदक प्राप्त किया है। इस व्यक्तित्व विकास वर्ग में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय बसिया के 8 छात्रों ने भाग लिया। बाल वर्ग में छात्र मनीष पातर ने गणित रेस में प्रथम, दीपक असुर ने लंबी कूद में प्रथम तथा 100 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं मनीष पातर, तुलसी उरांव तथा आशीष उरांव ने मासिक गीत गायन में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

किशोर वर्ग की प्रतियोगिता में छात्र कमलेश उरांव ने 100 मीटर दौड़ तथा लंबी कूद में प्रथम स्थान प्राप्त किया। हमारा लक्ष्य वाचन में शिवम महली को तृतीय स्थान मिला। वहीं शिवम महली, आरजू कुमार मुंडा तथा निखिल मुंडा को मासिक गीत गायन में प्रथम तथा वंदना प्रश्न मंच प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। आठ छात्रों के दल द्वारा पांच स्वर्ण, तीन रजत तथा एक कांस्य पदक जीतने पर विद्यालय में हर्ष का माहौल है। प्राचार्य संजय कुमार सिंह ने सभी विजयी प्रतिभागियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। गुमला विभाग निरीक्षक अखिलेश कुमार ने भी विजय छात्रों को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

युवा कांग्रेस अध्यक्ष ने स्वास्थ्य मंत्री और कृषि मंत्री को दी बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष आजाद अंसारी और सिसई प्रमुख मीना टोप्पो ने झारखंड सरकार के नवनियुक्त स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी और कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की से मिलकर पदभार ग्रहण करने पर बधाई दी और गुमला जिला की स्वास्थ्य व्यवस्था से अवगत कराया। डॉ इरफान अंसारी ने पदभार संभालते ही स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरस्त करने की दिशा में पहल कर रहे हैं और जो भी कमियां है उसे दूर करने का काम कर रहे है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं को जनहित में शत प्रतिशत क्रियान्वयन किया जायेगा और जो अस्पताल कोताही बरतेंगे उस पर करवाई किया जायेगा।

वहीं कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले किसानों को समय पर बीज उपलब्ध कराना और अपने विभाग से ज्यादा से ज्यादा किसानों को लाभ पहुंचाना मेरी प्राथमिकता रहेगी। युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाने और कृषि एवं गन्ना विकास को झारखंड में बढ़ावा दिया जाएगा और हर जिले का दौरा कर वहां किसानों से मिलकर उनकी स्थिति को देखने का काम करेंगे ताकि सरकार द्वारा उनकी उन्नति और विकास के लिए उपयुक्त योजना तैयार किया जा सके। मौके पर सिसई विधानसभा युवा अध्यक्ष सह उप प्रमुख निलेश उरांव साबिर अली मौजूद थे।

कुत्ते ने बच्चे को काटा

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। थाना क्षेत्र के छोटा अजियातु गांव में 2 साल के बच्चा आकांसु उरांव को कुत्ते ने काट लिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को परिजनों के सहयोग से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाघरा लाया गया। घटना की जानकारी मिलने पर पूर्व उपप्रमुख कृष्ण कुमार लोहरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घाघरा पहुंचे और घटना की जानकारी ली। वही प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक ने बेहतर इलाज हेतु उक्त बच्चे को गुमला सदर अस्पताल रेफर कर दिया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार घायल आकांक्षा की माता जय श्री देवी ने बताया कि वह घर के समीप भैंस बांधने के लिए आकांसु के साथ जा रही थी इसी क्रम में एक कुत्ते ने आकर उसके बच्चे के गाल को काट लिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

घोषणा पत्र

घोषणा पत्र के अनुसार क्र. सं. 25102 दिनांक 29.11.2024. मै जसवीर कौर, पति स्व0 फिका सिंह, उम्र लगभग 62 वर्ष, धर्म - हिन्दु, पेशा - गृहणी, राष्ट्रीयता भारतीय, आधार सं. 6470 9913 7872, निवासी-उपर धौडा, पगला आश्रम भुरकुण्डा बाजार, थाना-पतरातू, जिला- रामगढ (झारखण्ड) शपथपूर्वक निम्नलिखित घोषणा करता हूँ कि 1.यह कि मेरा उपरोक्त आवास सी०सी०एल० द्वारा मौखिक रूप से अनुमति प्राप्त जमीन में मेरे स्वय के आमदनी से बनाया हुआ है। 1. यह कि. उपरोक्त मेरे आवास के समस्त घरेलू सामान मेरे द्वारा स्वयं अर्जित पैसों से खरीदा गया है एवं मेरा निजी सामान है। 2. यह कि, मेरे पुत्र संतोष सिंह एवं हीरा सिंह विगत काफी दिनों से हमसे अलग रहते है। 3. यह कि, संतोष सिंह भुरकुण्डा में ही कही अन्य जगह किराए के घर में अपनी पत्नी एवं बच्चों के साथ रहते हैं। 4. यह कि, मेरा संतोष सिंह के साथ अब कोई प्रत्यक्ष संबंध, आना-जाना, खाना-पीना या किसी प्रकार का लेन-देन नहीं है। 5. यह कि, मेरा कोई भी हस्तक्षेप संतोष सिंह के पारिवारिक जीवन में न 6. तो पूर्व में था, न वर्तमान में है, न भविष्य में होगा। 7. यह कि, भविष्य में यदि संतोष सिंह कोई भी वैध या अवैध कार्य करते है तो उसकी कोई जिम्मेवारी मेरी नहीं होगी। 8. यह कि, मेरे निवास के किसी भी सामान पर या घर पर या मेरे किसी अन्य संपति पर संतोष सिंह या उनके पत्नी का कोई अधिकार न तो है और न भविष्य में होगा।

महिला हिंसा के खिलाफ निकली जागरूकता रैली

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। जेंडर आधारित हिंसा के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान को लेकर महिला विकास मंडल बाल विकास विभाग और प्रदान संस्था के संयुक्त तत्वाधान में महिला हिंसा के विरुद्ध जागरूकता रैली निकल गया उक्त रैली घाघरा ब्लॉक परिसर से सीओ आशीष कुमार मंडल द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया, जो रैली प्रखंड मुख्यालय के विभिन्न चौक चौराहे होते हुए पुनः ब्लॉक परिसर पहुंचा। जहां बनाए गए रंगोली के समक्ष शपथ दिलाया गया। और कार्यक्रम की समाप्ति की गई। इस क्रम में रैली में मानसिक और शारीरिक हिंसा करना बंद करो, महिला और पुरुष एक सम्मान, सबको एक अधिकार

सहित कई अन्य नारे लगाए। मौके पर सीओ आशीष कुमार मंडल ने कहा कि आज की परिवेश में महिलाएं पुरुषों से काम नहीं है। कंधे से कंधा मिलाकर सभी क्षेत्रों में महिलाएं का कर रही है। महिलाएं अबला नहीं सबला है। मौके पर आईसीडीएस विभाग से एलएस श्वेता कुमारी, बीपीएम अभिनंदन घोष, अमरिंदर कुमार, सीआरपी सहित कई आंगनबाड़ी सेविका उपस्थित थी।

जयराम महतो से मिले अरविंद बोस, दिया हरिहरगंज-हुसैनाबाद आने का निमंत्रण

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/ पलामू। मानवाधिकार दिवस के अवसर पर हरिहरगंज प्रखंड क्षेत्र के बोस सेना के अध्यक्ष सह सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद बोस तथा उनके साथियों ने झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष सह नवनिर्वाचित डुमरी विधानसभा के विधायक टाइगर जयराम महतो से मिला और जीत की बधाई दी। उक्त जानकारी फोन पर देते हुए अरविंद बोस ने बताया कि विधानसभा सत्र के पहले दिन के मौके पर पार्टी के पलामू प्रमंडलीय टीम जिला अध्यक्ष दिलीप मेहता, सचिव सोनू पटेल,

देवरी खुर्द मुखिया प्रतिनिधि उपेंद्र मेहता, राजेश कुशवाहा एवं गढ़वा प्रभारी विकाश पासवान आदि ने जयराम महतो को संविधान की किताब देकर सम्मानित किया। साथ ही जिला अध्यक्ष दिलीप मेहता ने पार्टी सुप्रीमो से हरिहरगंज हुसैनाबाद विधानसभा के धरती पर आने का आमंत्रित किया। बोस सेना के संचालक अरविंद बोस ने कहा कि विधानसभा चुनाव में टाइगर जयराम महतो युवाओं के लिए यूथ आइकन बनकर उभरे हैं। टाइगर जयराम का विधानसभा में बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए युवाओं के बड़ी आबादी हमसे जुड़ने के लिए लालायित है।

झामुमो पीपरा प्रखंड अध्यक्ष बने कुमार राजन

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/ पलामू। पीपरा प्रखंड क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता कुमार राजन ने मंगलवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा का दामन थाम लिया है। झामुमो की जिला कार्यालय में बैठक के दौरान पार्टी ने उन्हें पीपरा प्रखंड का अध्यक्ष बनाते हुए कार्य भार सौंपी है। उक्त जानकारी देते कुमार राजन ने बताया कि जिला अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिन्हा के अध्यक्षता में पिपरा प्रखंड कमिटी का गठन किया है। जिसका संचालन जिला सचिव सलू सिद्धकी ने की है। जिसमें प्रखंड सचिव सौरव कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष बिंदेश्वरी पाठक, उपाध्यक्ष विश्वनाथ राम, संगठन सचिव जनेश्वर रजवार तथा संयुक्त सचिव नीरज उरांव को बनाया गया। इस दौरान कुमार राजन ने कहा कि पार्टी ने जिस उम्मीद के साथ जो दायित्व सौंपा है उस पर ईमानदारी से कार्य करूंगा। साथ ही संगठन की मजबूती के लिए पार्टी की नीति सिद्धांतो को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास रहेगा।

आरपी सिन्हा क्लिनिक के सामने खाली जमीन पर बनेगा इनडोर स्टेडियम, डीपीआर तैयार

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। शहरवासियों को बहुत जल्द इनडोर स्टेडियम और मल्टी परपज हॉल के रूप में नयी सौगात मिलने वाली है। दोनों ही सौगातों को अमलीजामा पहनाने को लेकर जिले के उपायुक्त शशि रंजन गंभीर हैं। इसी कड़ी में मंगलवार को उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद और नगर आयुक्त जावेद हुसैन ने प्रस्तावित स्थलों का जायजा लिया। दो सप्ताह पूर्व उपायुक्त श्री रंजन भी दोनों पदाधिकारियों के साथ प्रस्तावित स्थल का निरीक्षण कर चुकें हैं। वार्ड 23 अंतर्गत डॉ आरपी सिंहा के क्लिनिक के सामने लगभग 1.5 एकड़ जमीन पर इनडोर स्टेडियम के निर्माण को लेकर डीपीआर भी तैयार कर लिया गया है। इस स्थल पर कुछ अतिक्रमण हटाया जाना है, वहीं कुछ जर्जर भवनों को तोड़ने का कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है। इसी कार्यों का निरीक्षण करने आज दोनों पदाधिकारी पहुंचे थे।

इनडोर स्टेडियम सह हेल्थ क्लब में होगा स्विमिंग पूल

वार्ड 23 में बनने वाले इनडोर स्टेडियम सह हेल्थ क्लब में कई तरह की गतिविधियां संचालित की जायेंगी, इसके लिये क्लब को विभिन्न प्रकार के उपकरणों से लैस किया जायेगा। इस इंडोर स्टेडियम में योगा केंद्र, बैडमिंटन कोर्ट, टेबल टेनिस कोर्ट, चेस सहित अन्य प्रकार के इनडोर गेम्स की व्यवस्थाओं से लैस किया जायेगा। इसके अलावे स्विमिंग पूल के साथ-साथ लोगों के मनोरंजन हेतु म्यूजिक सिस्टम युक्त बैठने का लॉन भी बनाया जायेगा। इस संबंध में नगर आयुक्त ने बताया कि जल्द ही टेंडर कर इनडोर स्टेडियम के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया जायेगा।

टाउन हॉल में मल्टी परपज हॉल बनाने की योजना

इनडोर स्टेडियम के अलावे टाउन हॉल में एक मल्टी परपज हॉल बनाने की योजना पर भी काम किया जा रहा है। इस हॉल के निर्माण हो जाने से शहरवासियों को विभिन्न तरह के आयोजनों हेतु सहूलियत होगी। इस हॉल में मैरेज हॉल,ओपन फूड कोर्ट आदि की व्यवस्था की जायेगी। इसे लेकर डीसी श्री रंजन ने नगर आयुक्त को डीपीआर बनाने की बात कही है साथ ही इस योजना के निर्माण हेतु अन्य सभी कागजी प्रक्रियाओं को जल्द से जल्द पूर्ण करने को लेकर निर्देशित किया।

कंडम बिल्डिंग का आकलन करने निकले डीडीसी व नगर आयुक्त

दिनांक 3 दिसंबर को तकनीकी पदाधिकारियों संग संपन्न बैठक में उपायुक्त ने उप विकास आयुक्त को शहर में अवस्थित कंडम पड़े बिल्डिंग का सूची बनाने को लेकर निर्देशित किया था, इसके अनुपालन में मंगलवार को उप विकास आयुक्त व नगर आयुक्त जावेद हुसैन ने समाहरणालय परिसर में अनुपयोगी पड़े कंडम हो चुके बिल्डिंग का जायजा लिया।

जपला स्टेशन पर टिकट जांच, दस धराये

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। पंडित दीन दयाल उपाध्याय मंडल द्वारा बिना टिकट रेल यात्रा करने पर लगाम सहित यात्री जागरूकता हेतु लगातार सघन टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में पूर्व मध्य रेल मुख्यालय के निर्देश पर मंगलवार को जपला स्टेशन पर टिकट चेकिंग का मेगा ड्राइव चलाया गया। इस मेगा ड्राइव के दौरान बिना टिकट या उचित प्राधिकार के यात्रा वाले 2 व्यक्तियों को पकड़ा गया जिन्हें जुमार्ने के बाद छोड़ा गया। जबकि इस दौरान आरपीएफ ने महिला व विकलांग बोगी में अनाधिकृत रूप से यात्रा कर रहे 8 लोगो को पकड़ा। इस संबंध में आरपीएफ के पुलिस निरीक्षक राजेश कुमार मीना ने बताया की पकड़े गये 8 लोगों को अग्रेतर कारवाई के लिए मेदिनीनगर रेल न्यायालय भेज दिया गया है। इस मेगा टिकट चेकिंग ड्राइव में वाणिज्य अधिकारी के साथ टिकट चेकिंग कर्मी और आरपीएफ कर्मी तैनात रहे। रेलवे का सहयोग करें और सभी की सुविधा हेतु सदैव रेल टिकट लेकर चयनित श्रेणी में ही रेल यात्रा करें। मौके पर टीटीइ आशीष कुमार, मुख्य माल पर्यवेक्षक प्रशांत कुमार, आरपीएफ के एसआइ कार्तिक बिंझा, एएसआइ जेपी प्रसाद, जेपी यादव आदि मौजूद थे।

सरसों की खेती में किसान फस्फोजिप्सम का प्रयोग अवश्य करें : बीटीएम

छतरपुर / पलामू (आजाद सिपाही)। छतरपुर प्रखंड के चयनित बरडीहा तथा आकाबासा गांव के 48 किसानों को प्रत्यक्षण हेतु सरसो का बीज सीडीआरएमआर 150/35 दिया गया। बीज के साथ- साथ बीजोपचार के लिए करबेंडिज्म पीएसबी, पौधे के विकास के लिए नैनो यूरिया, अधिक उत्पादन एवं तेल की मात्रा को बढ़ाने के लिए फस्फोजिप्सम तथा सरसो के फसल पर लगने वाले किट जैसे – लाही, तेला, चेपा माहू इत्यादि के रोकथाम के लिए नीम आयल 1500 पीपीएम का वितरण किया गया। इस मौके पर बीटीएम, प्रभारी प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी,जनसेवक, किसान मित्र,एग्री क्लीनिक के स्टाफ मौजूद थे।

अनाथ बच्चों के लिए मसीहा बन कर उभरा देवम इंस्टीट्यूट : अविनाश देव

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। देवम का अर्थ है ईश्वर और ईश्वर किसी के साथ भेद नहीं करते क्योंकि उन्हीं के सब संतान हैं। हमारा देश ऋषि परंपरा का रहा है जहां गुरुकुलीय व्यवस्था था। वहां कृष्ण सुदामा एक साथ पढ़ें। भक्तिकाल के दौर में रामानंद ने एक तरफ कबीर रैदास को शिक्षा दीक्षा दिए तो एक तरफ पीपा धन्ना भारतभूषण को भी दिए। हम गर्व करते हैं और पलामू वासियों को गर्व करना चाहिए कि उसी गुरुकुलीय परंपरा का वाहक है देवम इंस्टीट्यूट। वैसे बच्चे जिनके सर से माता -पिता का साया उठ गया है वे बच्चों के लिए देवम इंस्टीट्यूट मसीहा बन कर उभरा है। आज वैसे ही एक चौदह वर्षीय बच्चा अनुष्ठान कुमार जिनको देवम इंस्टीट्यूट परिवार निःशुल्क पढ़ाने का बीड़ा उठाया। इस शहर व प्रमंडल के लिए देवम इंस्टीट्यूट शिक्षा का सरताज बना हुआ है, जहां बच्चों के उज्ज्वल भविष्य से सूर्य की तरह ललाट चमक रहा है। तमाम पलामू वासियों को ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ,वैसे विद्यार्थी जो देवम इंस्टीट्यूट के आहर्ता पूरा करता हो निसंकोच लाएं और बच्चे को जिंदगी संवारने का काम करें। इस मामले में देवम इंस्टीट्यूट के निदेशक के शुक्रगुजार हूं जिन्होंने यतीम लाचार बेबस विद्यार्थियों के लिए सोचा और कार्य व्यवहार को धरातल पर उतारा। वह दिन दूर नहीं जब देवम इंस्टीट्यूट शिक्षा में क्रांति करेगा और टुअर रेंगा पढ़ कर अधिकारी बनेगा तब एक दिन बोलेगा इंकलाब जिंदाबाद देवम इंस्टीट्यूट जिंदाबाद! प्रबंध निदेशक आर एन सिंह, एकेडमिक डायरेक्टर यू एस चौबे, प्रवीण दुबे, मनीष पाठक, रजनीकांत पांडेय को इस सामाजिक रचनात्मक कार्य के लिए बहुत बहुत शुक्रिया।

संविधान से देश की और पौधा से संसार की होती है संरचना : डॉ कौशल

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। गढ़वा जिले के मेराल कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष व राखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद ट्री मैन डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने भिपिएसए संस्था के प्रधान सचिव सह पंचायत डाली बाजार के मुखिया पूनम जायसवाल ने कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय गान के उपरांत पौधरोपण कर किया। डॉ कौशल ने पर्यावरण धर्म के प्रार्थना के साथ नेपाल के रुद्राक्ष, व सुपारी, बारहमासी कटहल का पौधा रोपण कर कार्यक्रम का समापन बृक्षों पर रक्षाबंधन कर किया। उन्होंने उपस्थित बच्चों व शिक्षकों को पर्यावरण धर्म के आठ मूल ज्ञान मंत्रों की शपथ भी दिलाई। उन्होंने बच्चों के बीच कोरोना काल का जिक्र करते हुए कहा है कि धरती और ब्रह्मांड के 84 लाख योनि जीवन की जीने की संरचना ही ऑक्सिजन होती है। इसके बगैर जीव की कोई कल्पना नहीं की जा सकती। दूसरी तरफ यह भी सर्वविदित है कि ऑक्सीजन किसी फैक्ट्री का उत्पाद भी नहीं है। इसके लिए पौधा लगाना ही विकल्प होता है।

Office Of The Executive Engineer
Water Ways Division, Hazaribagh.
Office Email Id- eewwdhbg-ceh-jhr@nic.in

Very Short Notice Inviting e- Quotation
No: WRD/WWDivision, Hazaribag/Quotation- 05/2024-25 Date: 10.12.2024

Rates through e-quotation of materials/ Items are invited for framing of estimate for Purchase/Supply of items in Water Ways Division Hazaribag annexed in Annexure-I from reputed manufacturer/Authorised dealers/suppliers/agency and other stake holders authorised for respective items having valid GSTIN of materials. The rate shall be submitted online in the website www.jharkhandtenders.in .Details of material, design criteria and its specifications are available on the above e-tender portal. The quotationer may download the documents from the website and quote their rate of materials online from 12/12/24 at 11:00 hours to 19/12/24 at 15:00 hrs.

The quotation will be opened on 20/12/24 at 12:00 hours. The quotation is invited to access the rate for purchase/supply of items for framing of estimate .**For any information/query the department helpline Mobile No-7762857530/9060447483 may be contacted.**

Executive Engineer,
WaterWays Division, Hazaribag

PR.NO.341660 Water Resource(24-25):D

सतबरवा में अतिक्रमित भूमि पर चला बुलडोजर

आजाद सिपाही संवाददाता

सतबरवा/ पलामू। मंगलवार को सतबरवा पुराना थाना से लेकर पुराना बस स्टैंड तक अतिक्रमित भूमि को सतबरवा सीइओ कृष्ण मुरारी तिर्की की मौजूदगी में बुलडोजर चला कर अतिक्रमण मुक्त किया गया। सतबरवा में ज्यादातर दुकानदारों के द्वारा रोड किनारे छज्जा निकालकर, करकट लगाकर सरकारी भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। जिसके चलते हमेशा जाम लगा रहता था, साथ ही दुर्घटना की भी संभावना है अधिक हो गयी थी। सतबरवा सीईओ के द्वारा 2 दिन पहले ही सभी को अल्टीमेटम दिया गया था उसके बाद भी लोगों ने अतिक्रमित भूमि को खाली नहीं किया जिसके बाद मंगलवार को सीइओ कृष्ण मुरारी तिर्की और सतबरवा पुलिस की मौजूदगी में जेसीबी से अतिक्रमित भूमि को मुक्त किया गया।

प्रेम रावत के जन्मदिन पर भक्तों ने आरती उतारी और पूजा की

आजाद सिपाही संवाददाता

हरिहरगंज/ पलामू। नगर पंचायत क्षेत्र के अररूआ खुर्द में मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय शांति प्रवक्ता प्रेम रावत की 67वीं जन्मदिन मनाया गया। आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों भक्तों ने प्रेम रावत जी के चित्र की आरती उतारी व पूजा अर्चना कर जन्म दिवस मनाया। इस दौरान उनके अनुयायियों ने कहा कि प्रेम रावत एक ख्याति प्राप्त शांति का संदेश देने वाले महापुरुष हैं। इनके अनुयायी पूरे दुनिया में प्रेम का संदेश फैलाने में सहायक हैं। साथ ही राज विद्या केंद्र संस्था द्वारा विभिन्न प्रकार के सेवा कार्य संपूर्ण विश्व में चलाया जाता है। इनके बताए मार्ग पर चलकर, हम जीवन को सफल बना सकते हैं। इस दौरान राज विद्या केंद्र पर शांति प्रवक्ता प्रेम रावत के द्वारा अंजन टीवी के माध्यम से शांति का संदेश प्रसारण किया गया।जिसमें कई महिला पुरुषों ने संदेश सुना। कार्यक्रम में समाजसेवी राजीव रंजन, केंद्र सहायक सह शिक्षिका मधु कुमारी, सेवा सहायक कृष्णा गुप्ता, प्रचार सहायक दिनेश पासवान, केदारनाथ ठाकुर, गोपाल गुप्ता, शम्भू सिंह, संजय जायसवाल, शंभू यादव, बिजय पासवान सहित सैकड़ों श्रद्धालु शामिल थे।

कार्यालय :- कनीय पौधा संरक्षण पदाधिकारी, पलामू
योध सिंह नामधारी महिला कॉलेज के सामने,मेदिनीनगर पलामू –822101

कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग झारखण्ड
आलू फसल में झुलसारोग (प्रबंधन एवं नियंत्रण)
सामयिक सूचना अंक–04/2024–25

प्रिय किसान बंधुओं,

रबी मौसम में आलू हमारा एक मुख्य फसल है।इसके बुआई से भण्डारण तक विभिन्न प्रकार के रोगों का प्रक्रोप होता है पर मुख्यतः फफुंदजनित झुलसा रोग इसे अत्यधिक हानि पहुँचाते हैं जिस से पैदावार पर भारी असर होता है।अतः इसका प्रबंधन एवं नियंत्रण अत्यावश्यक हो जाता है। इस रोग के दो अवस्था है जो निम्न प्रकार है :–

1. अगेतीझुलसा :– यह एक मृदाजनित रोग है जिसे बुआई के 3–4 सप्ताह उपरांत साधारणतः दिसम्बर माह के शुरू आतसे मध्य तक देखा जा सकता है। प्रारंभिक अवस्था में नीचे वाली पत्तियाँ संक्रमित होती है जहाँ से रोग उपर की ओर बढ़ती है। पत्तियों पर छोटे, फीके–भूरे चमकदार धब्बे बनते हैं।इस रोग की तीव्रता 20–26 डिग्री से ल्सियस तापमान पर अधिक होता है।
2. पछेती झुलसा :–इसे पछेती अंगमारी भी कहते हैं तथा यह सबसे विनाशकारी रोग है जिसके लक्षण पौधे के सभी भागों पर जैसे–पत्तियों, तना ओरकंद पर भी दिखाई पड़ते हैं। इस रोग का प्रक्रोप दिसम्बर महीने के अंतिम सप्ताह से लेकर जनवरी माह तक देखा जा सकता है। रोग को शुरूआत पत्तियों पर किनारे वाले भाग पर भूरे धब्बे से होते है जो पौधे के अन्य भागों पर फैल जाते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में (अधिकनमी 80–100 प्रतिशत, बादल छाये रहने पर) पौधा का सम्पूर्ण भाग नष्ट हो जाता है, अतः पूरी फसल बरबाद हो जाती है।

नियंत्रण एवं प्रबंधनहैं :–

(1) हमेशा स्वस्थ्य आलू बीज लगायें।
(2) बोने से पहले आलू के बीज को रिडोमिल एम0जेड0 या मेटालैक्जिल के 0.02 प्रतिशत घोल में डूबो लें।
(3) झुलसा प्रतिरोधी किस्मों की ही बुआई करें।
(4) खरपतवार नियंत्रण करें।
(5) अगेती झुलसा के लक्षण दिखाई देने पर मैं को जेब फफूंदनाशी (इण्डोफिल M-45 या डाईथेनM-45)इत्यादि की 300–600 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के दर से 2–3 छिड़काव प्रत्येक 15 दिनों के अन्तराल में करें।
(6) पछेती झुलसा के लक्षण पर मैटालैक्जिल एवं मैं को जेब युक्त फफूंदनाशी (रिडोमिल एम0जेड 72 WP) इत्यादि 400–500 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
(7) अत्यधिक ठण्ड की आशंका पर फसल की सिंचाई कर देने से पाला का असर कम हो जाता है।

कनीय पौधा संरक्षण पदाधिकारी,
पलामू

PR 341697 District(24-25).D

स्पोर्ट्स

प्लेइंग इलेवन में कम से कम 7 अमेरिकी खिलाड़ी होने चाहिए, लेकिन कई मैचों में 6-7 विदेशी खिलाड़ियों को उतारा गया। मैचों में ड्रॉप-इन पिचों का इस्तेमाल किया गया, जो बहुत ही खराब थीं

आइसीसी ने अमेरिका की नेशनल क्रिकेट लीग को बैन किया

प्लेइंग-11 नियमों का उल्लंघन किया, लीग से तेंदुलकर, गावस्कर, अकरम जैसे नाम जुड़े

एजेंसी

नई दिल्ली। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आइसीसी) ने अमेरिका की नेशनल क्रिकेट लीग (एनएलसी) को बैन कर दिया है। आइसीसी ने यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका क्रिकेट को लेटर लिखकर लीग के भविष्य के संस्करणों को मंजूरी नहीं देने के फैसले की जानकारी दी। लेटर में लिखा गया कि लीग में प्लेइंग इलेवन नियमों का पालन नहीं हुआ है। टी-10 फॉर्मेट के इस टूर्नामेंट में 6-7 विदेश खिलाड़ी खेलाये गयी थे।

एनसीएल का पहला सीजन 4 से 14 अक्टूबर के बीच हुआ था। रॉबिन उथप्पा की कप्तानी वाली शिकागो सीसी ने अटलांटा किंग को 43 रनों से हराते हुए खिताब जीता था। क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर ने उन्हें ट्रॉफी दी।

किन नियमों का उल्लंघन हुआ?

आइसीसी के नियम के अनुसार लीग में खेलने वाली हर टीम की प्लेइंग इलेवन में कम से कम 7 अमेरिकी खिलाड़ी होने चाहिए, लेकिन कई मैचों में 6-7 विदेशी खिलाड़ियों को उतारा गया। मैचों में ड्रॉप-इन पिचों का इस्तेमाल किया गया, जो बहुत ही खराब थीं। पिचें इतनी खराब थीं कि वहाब रियाज और टाइमल मिल्स को स्पिन गेंदबाजी करनी पड़ी, ताकि बैटर्स को चोट न लगे। लीग के अधिकारियों ने विदेशी खिलाड़ियों को मौका देने के लिए अमेरिका के इमिग्रेशन नियमों को भी तोड़ा गया। अमेरिका में स्पोर्ट्स कैटेगरी के वीजा के लिए 6 टीमों के लिए कम से कम 2 लाख यूएस डॉलर लगते हैं। पैसे बचाने के लिए कई खिलाड़ी स्पोर्ट्स वीजा से नहीं आये।

एनसीएल ने वसीम अकरम और विवियन रिचर्ड्स जैसे पूर्व क्रिकेटर्स को ब्रॉन्ड ऐंबैस्डर बनाया था। इसने सचिन तेंदुलकर और सुनील गावस्कर को अपने ओनरशिप ग्रुप में शामिल किया था।

जिला समादेष्टा, का कार्यालय झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, हजारीबाग
(कैम्प कार्यालय, कोडरमा)

आम सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि गृह रक्षक नव–नामांकन विज्ञापन सं0–01/2023 के आलोक में कोडरमा जिले के चयनित अभ्यर्थियों (दिनांक–10.10.2024 को प्रकाशित औपबंधिक चयन सूची के अनुसार) का सभी प्रकार के प्रमाण–पत्रों का सत्यापन एवं फार्म–'अ' तथा 'ग' को भरने का कार्यक्रम **जिला समादेष्टा कार्यालय कोडरमा** में निम्न प्रकार से निर्धारण किया जाता है :–

क्रमांक	प्रखण्ड का नाम	तिथि एवं समय	अभियुक्ति
01.	कोडरमा	18.12.2024 10:00 बजे पूर्वाह्न से	
02.	जयनगर		
03.	डोमचांच		
04.	मरकच्चो	19.12.2024 10:00 बजे पूर्वाह्न से	
05.	चन्दवारा		
06.	सतगाँवा		
07.	कोडरमा/डोमचांच शहरी		

- अभ्यर्थी निर्धारित तिथि को अपने साथ आवेदन के साथ संलग्न किए गए प्रमाण–पत्रों की मूल प्रति एवं एक अभिप्रमाणित छायाप्रति साथ ही 02 (दो) पासपोर्ट आकार का रंगीन फोटो के साथ आवश्यक रूप से उपस्थित होना सुनिश्चित करेगें।
- प्रमाण–पत्रों के सत्यापन के उपरांत तिथि का निर्धारण कर अभ्यर्थियों का चिकित्सीय जॉच **सदर अस्पताल कोडरमा** में चिकित्सीय दल द्वारा किया जाएगा।
- अभ्यर्थियों से अनुरोध है कि नियमित अन्तराल पर को कोडरमा की जिले के बेबसाईट www.koderma.nic.in को आवश्यक देखें

जिला समादेष्टा हजारीबाग,
–सह–सदस्य
गृह रक्षक नव नामांकन समिति, कोडरमा

PR 341607 Home, Prison And Disaster Management(24-25)#D

मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा व समानता का आधार है

विश्व मानवाधिकार दिवस पर सर्वोच्च मानवाधिकार संरक्षण की बैठक, कई मुद्दों पर चर्चा

धनबाद (आजाद सिपाही)। गोविंदपुर प्रखंड के विराजपुर स्थित श्री राम कृष्णा पब्लिक स्कूल प्रांगण में मंगलवार को विश्व मानवाधिकार दिवस पर सर्वोच्च मानवाधिकार संरक्षण की झारखंड इकाई की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता भगवत प्रसाद पांडेय और संचालन सुरेश चंद्र तिवारी ने किया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आरके मिश्रा के अलावा विशिष्ट अतिथि हिमांशु शेखर, रिचा झा, संतोष कुमार, प्रदेश अध्यक्ष भगवत प्रसाद पांडेय शामिल थे। इस अवसर पर सुरेश चंद्र तिवारी ने सभी प्रदेशवासियों को विश्व मानवाधिकार दिवस की शुभकामनाएं दी। कहा कि मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और समानता का आधार है, जो एक सशक्त और समावेशी समाज की नींव रखता है। यह दिवस हमें मानवाधिकारों के महत्व को समझने और उसके संरक्षण और सम्मान के प्रति जागरूकता बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। सभी अतिथियों ने भी बारी-बारी से मानवाधिकार दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला। वहीं, आरके मिश्रा ने सर्वोच्च मानवाधिकार सर्वेक्षण के पदाधिकारी स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं और बच्चियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर मिथिलेश कुमार पांडेय, तुलसी कुमार दास, स्वीटी कुमारी, जोगनी देवी, स्नेहा कुमारी, किरण कुमारी, रितु कुमारी, रोहित कुमार साव, सुरेश कुमार महतो, विकास प्रसाद साव आदि मौजूद थे।

पांच अभ्यर्थियों को मिला नियुक्ति पत्र

बोकारो (आजाद सिपाही)। डीडीसी गिरिजा शंकर प्रसाद ने समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में मंगलवार को महिला बाल विकास और सामाजिक सुरक्षा विभाग अंतर्गत बाल संरक्षण इकाई में संविदा के आधार पर चयनित आंकड़ा विश्लेषक, सहायक सह डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीसीपीयू), सहायक सह डाटा एंट्री ऑपरेटर (जेजेबी), आउटरेज वर्कर (डीसीपीयू) आदि पद पर पांच अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र देते हुए उनके बेहतर काम की अपील की, ताकि बोकारो जिला अग्रणी जिलों में समकक्ष पहुंच सके। इस अवसर पर डीडीसी गिरिजा शंकर प्रसाद ने सभी युवक-युवतियों को नियुक्ति पत्र वितरित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस दौरान जिला समाज कल्याण पदाधिकारी डॉ सुमन गुप्ता, बाल संरक्षण पदाधिकारी अनीता झा सहित अन्य उपस्थित थे।

दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए तिब्बतियों ने प्रार्थना की

धनबाद (आजाद सिपाही)। रेलवे स्टेशन, चिल्ड्रन पार्क, न्यू स्टेशन कॉलोनी पुराना बाजार में तिब्बतियन रिफ्यूजी वूलन गारमेंट्स एग्जिबिशन कम सेल में आए तिब्बतियों ने दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने के 35वें वर्ष के उपलक्ष्य में तिब्बती विधि विधान से मंत्र पढ़कर पूजा अर्चना की। शरणार्थी टाशी थुप्तन ने बताया कि सारे तिब्बती इस दिन को हर्षोल्लास के साथ मना रहे है। हम सभी तिब्बती दलाई लामा के दीघार्यु के लिए मनोकामना कर रहे है और विश्व शांति के लिए पूजा अर्चना कर रहे हैं। विगत 1982 से हम लगातार धनबाद के रेलवे स्टेशन के निकट न्यू स्टेशन चिल्ड्रन पार्क में वूलन गारमेंट्स का मार्केट लगा कर धनबादवासियों की सेवा करते आ रहे हैं। इसके साथ ही प्रति वर्ष 10 दिसंबर को दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए पूजा करते आ रहे हैं। कहा की भारत सरकार, धनबाद प्रशाशन और यहां के लोगों का हम सबी को भरपूर सम्मान और प्यार हमेशा मिला है जिसका हम सभी तिब्बतियन आभार व्यक्त करते हैं। संस्था के अध्यक्ष लोंडेन शेरिंग ने तिब्बती लोगों के लिए 10 दिसंबर के महत्व को को बताया। कहा कि विश्वभर में दो कारणों से 10 दिसंबर का दिन तिब्बतियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें पहला 10 दिसंबर 1989 को उनकी अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता और तिब्बत समस्या के समाधान के लिए दूरगामी सुझावों के उपलक्ष्य में परम पावन दलाई लामा जी को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए पुलिस-प्रशासन ने की कार्रवाई

धनबाद (आजाद सिपाही)। गोविंदपुर जीटी रोड लगातार जाम की समस्या और हो रही दुर्घटनाओं की समस्या से परेशान स्थानीय लोगों ने पुलिस-प्रशासन से हस्तक्षेप की गुहार लगायी थी। जिसके बाद जिला प्रशासन और पुलिस हरकत में आ गयी है। लगातार अनियमित तरीके से गाड़ी चलाने और सड़क पर जहां-तहां वाहन खड़ा करने वाले चालकों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उनका चालान काटा और अतिक्रमण किये वाहनों को सड़क से हटाया। ट्रैफिक डीएसपी अरविंद कुमार सिंह ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि लगातार गोविंदपुर बाजार जाम होने के कारण सड़क को अतिक्रमण मुक्त करवाया जा रहा है। लगभग 100 गाड़ियों का चलान भी काटा गया है। कहा कि हम लोग निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि जाम से निजात दिलायें। उन्होंने बताया कि यह अभियान लगातार चलता रहेगा। इस अभियान में गोविंदपुर थाना प्रभारी मोहम्मद रुस्तम भी शामिल रहे।

डीडीसी ने जनता दरबार लगाकर सुनी लोगों की समस्याएं, किया निवारण

स्कूल पर छात्राओं को निकालने का आरोप, डीडीसी से शिकायत

जिला शिक्षा पदाधिकारी को फोन कर मामले की जांच करने का दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। डीडीसी सादात अनवर ने मंगलवार को आयोजित जनता दरबार में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये लोगों की शिकायतों को सुना। इसमें उदलबनी कांकोमठ से आयी छात्राओं ने डीडीसी को बताया कि वे बाघमारा प्रखंड के कतरास अंचल स्थित जमुआटांड उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पढ़ाई करती है। दो दिसंबर को वहां के प्रभारी प्रधानाध्यापक और सहायक शिक्षक ने उनके साथ अभद्र व्यवहार करते हुए स्कूल से निकाल दिया। इसके बाद दोनों ने छात्राओं का स्कूल आना भी बंद कर दिया। इस कारण उनकी पढ़ाई बाधित हो रही है, जबकि परीक्षा भी नजदीक है। छात्राओं की शिकायत पर त्वरित संज्ञान लेते हुए डीडीसी ने तत्काल जिला शिक्षा पदाधिकारी को फोन कर मामले की जांच करने का निर्देश दिया। इसके अलावा जनता दरबार में अवैध निर्माण कार्य रुकवाने, न्यायालय में मुकदमा लंबित होने के बावजूद जमीन पर जबरन जेसीबी चलाकर उसका नेचर बदलने, गुरुजी क्रेडिट कार्ड निर्गत कराने, जबरन चाहर दिवारी तोड़कर जमीन पर अवैध कब्जा करने, बीसीसीएल के सिजुआ क्षेत्र संख्या पांच अंतर्गत सेंद्रा बांसजोड़ा साइडिंग में नियोजक द्वारा हाई पावर कमेटी के अनुसार वेतन का भुगतान नहीं करने सहित अन्य शिकायत प्राप्त हुई। डीडीसी ने सभी शिकायतों का निवारण करने के लिए संबंधित पदाधिकारी को निर्देशित किया। इस दौरान जनता दरबार में निदेशक सामाजिक सुरक्षा नियाज अहमद भी मौजूद थे।

जनता दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं सुनते डीडीसी सादात अनवर।

एनएसयूआइ ने पांच सूत्री मांगों को लेकर कतरास कॉलेज के प्राचार्य को सौंपा ज्ञापन

कतरास (आजाद सिपाही)। एनएसयूआइ कतरास इकाई ने कतरास कॉलेज के प्रचार्य से मुलाकात कर पांच सूत्री मांगों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। जिसका नेतृत्व शाहबाज खान ने किया। उन्होंने प्राचार्य के समक्ष छात्र हित में मांगों को रखते हुए बताया कि कतरास कॉलेज में विभिन्न तरहा की समस्याएं है। इनमें से पहला लड़की के लिए जितना कॉमन रूम आवश्यक है उतना ही लड़कों के लिए भी कॉमन रूम आवश्यक है। लड़के आते हैं तो कहीं बैठने का एक स्थान नहीं होने के कारण परेशानी होती है। दूसरा कॉलेज परिसर में लाइब्रेरी को सुचारू रूप से खोला जाए। लाइब्रेरी खुला नहीं होने के कारण कॉलेज के बाहर एक प्राइवेट लाइब्रेरी है जिसमें छात्र-छात्राएं आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण नहीं जा पाते है। इस कारण नियमित रूप से कॉलेज की लाइब्रेरी को खोला जाए, ताकि बच्चे वहां जाकर पढ़ सकें। इसी तरह कॉलेज के शौचालय और कैंपस में साफ-सफाई, कॉलेज के छात्र-छात्राओं के साथ प्राचार्य, स्टाफ की ओर से दुर्व्यवहार बंद करने और परीक्षा खत्म होने के बाद कक्षा नियमित रूप सभी विषयों की कराना शामिल था। एनएसयूआई के प्रदेश सचिव आकाश कुमार प्रमाणिक ने प्राचार्य को बताया कि उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने के लिए छात्रों को शिक्षा के साथ ही व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं की भी आवश्यकता होती है। जिसमें कहीं ना कहीं कतरास कॉलेज चुक रही है। नियमित क्लास के साथ ही सुविधा भी दिया जाए। इन मांगों पर जल्द कॉलेज प्रशासन अमल नहीं करेगा, तो उग्र आंदोलन किया जायेगा। इस मौके पर एनएसयूआई के प्रदेश सचिव आकाश प्रमाणिक, शाहबाज खान, अमन अंसारी, अहान खान, आशीष महतो, अनीस अंसारी, करण पाण्डेय, रोहित कुमार, अजय दास, अरुण महतो, अक्षय कर्मकार, सैफ अंसारी, आसिफ अंसारी, मोहम्मद साबी और इमरान खान उपस्थित थे।

झारखण्ड सरकार,
गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग

झारखण्ड आन्दोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग।

69वीं औपबंधिक सूची
जिला–हजारीबाग (पार्ट–4)

क्र0	आवेदनकर्त्ता की विवरणी	गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राँची के संकल्प संख्या–1938, दिनांक–20.04.2021 के आलोक में प्रदत्त कंडिका
विवरण :–आयोग के माननीय सदस्य श्री नरसिंह मुर्मू के स्थानीय जांच शिविर में चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी मो0 महमूद आलम एवं मौलाना मोबिन रिजवी द्वारा आवेदन पर दर्ज बयान एवं पहचान के आधार पर।		
182.	1. आवेदन क्र0–3929/24 2. आवेदक–इशाक अंसारी, पिता–स्व0 अजीम अंसारी 3. ग्राम–नवादा, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–72 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें ललाट पर मासा।	कंडिका–2(ix)
183.	1. आवेदन क्र0–3930/24 2. आवेदक–बिशुन साव, पिता–बुलाकी साव 3. ग्राम–नवादा, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें कान में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
184.	1. आवेदन क्र0–3931/24 2. आवेदक–मो0 जाकीर हुसैन, पिता–मो0 नेयाजुद्दीन 3. ग्राम–अंसारी नगर, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–गाल में मासा।	कंडिका–2(ix)
185.	1. आवेदन क्र0–3932/24 2. आवेदक–राकेश कुमार, पिता–बजरंगी प्रसाद 3. ग्राम–रमुआ, पोस्ट–बिष्णुगढ़, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–55 वर्ष, पहचान चिन्ह–बाय गर्दन में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
186.	1. आवेदन क्र0–3933/24 2. आवेदक–मंजू देवी, पति–धर्मवीर यादव 3. ग्राम–बेड़ो हरियारा, पोस्ट–खरना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–महिला, आयु–47 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
187.	1. आवेदन क्र0–3934/24 2. आवेदक–इदरीस राय, पिता–अलीजान राय 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–54 वर्ष, पहचान चिन्ह–पेट में तिल।	कंडिका–2(ix)
188.	1. आवेदन क्र0–3935/24 2. आवेदक–करीम मियाँ, पिता–रसुल मियाँ 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–67 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ में तिल।	कंडिका–2(ix)
189.	1. आवेदन क्र0–3936/24 2. आवेदक–दाउद मौलाना बक्श अंसारी, पिता–स्व0 मौलाना बक्श अंसारी 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–60 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने हाथ में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
190.	1. आवेदन क्र0–3937/24 2. आवेदक–जलील अंसारी, पिता–स्व0 चुरामन अंसारी 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में तिल।	कंडिका–2(ix)
191.	1. आवेदन क्र0–3938/24 2. आवेदक–ब्रजमोहन प्रसाद, पिता–गिरधारी महतो 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–62 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में तिल।	कंडिका–2(ix)
192.	1. आवेदन क्र0–3939/24 2. आवेदक–माथुर महतो, पिता–स्व0 गिरधारी महतो 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
193.	1. आवेदन क्र0–3940/24 2. आवेदक–रतनलाल पटेल, पिता–ब्रजमोहन प्रसाद 3. ग्राम–चानो, पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–40 वर्ष, पहचान चिन्ह–गर्दन के नीचे तिल।	कंडिका–2(ix)
194.	1. आवेदन क्र0–3941/24 2. आवेदक–दशमी देवी, पति–काशी तुरी 3. ग्राम–फाराचांच, पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–महिला, आयु–47 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में तिल।	कंडिका–2(ix)
195.	1. आवेदन क्र0–3942/24 2. आवेदक–लालो तुरी, पिता–स्व0 गणेश तुरी 3. ग्राम–फाराचांच, पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–64 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
196.	1. आवेदन क्र0–3943/24 2. आवेदक–तुली सिंह, पिता–स्व0 बढ़न सिंह 3. ग्राम–फाराचांच, पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–41 वर्ष, पहचान चिन्ह–गर्दन में तिल।	कंडिका–2(ix)
197.	1. आवेदन क्र0–3944/24 2. आवेदक–महावीर तुरी, पिता–स्व0 रीतलाल तुरी 3. ग्राम–फाराचांच, पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–57 वर्ष, पहचान चिन्ह–पेट में लहसन।	कंडिका–2(ix)
198.	1. आवेदन क्र0–3945/24 2. आवेदक–डेगलाल तुरी, पिता–स्व0 नागेश्वर तुरी 3. ग्राम–फाराचांच, पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने पैर में कटा का दाग।	कंडिका–2(ix)
199.	1. आवेदन क्र0–3946/24 2. आवेदक–रती गंझु, पिता–स्व0 गजाधर गंझु 3. ग्राम–मगरो (झापाटांड), पोस्ट–सारूकुदर, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–76 वर्ष, पहचान चिन्ह–मुंह में मासा।	कंडिका–2(ix)
200.	1. आवेदन क्र0–4034/24 2. आवेदक–श्यामलाल महतो, पिता–स्व0 सोबरन महतो 3. ग्राम–झापाटांड, चानो, पोस्ट–चानो, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–57 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में तिल।	कंडिका–2(ix)
201.	1. आवेदन क्र0–3947/24 2. आवेदक–द्वारिका राम, पिता–सुकर राम 3. ग्राम–चरनखिया, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–माथा पर कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
202.	1. आवेदन क्र0–3948/24 2. आवेदक–हिरालाल रविदास, पिता–सुकर रविदास 3. ग्राम–चरनखिया, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–57 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
203.	1. आवेदन क्र0–3949/24 2. आवेदक–शमीमा खातुन, पति–मो0 जाकीर हुसैन 3. ग्राम–चरनखिया, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–महिला, आयु–55 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में तिल।	कंडिका–2(ix)
204.	1. आवेदन क्र0–3950/24 2. आवेदक–झमन साव, पिता–स्व0 टेपा साव 3. ग्राम–टेकवाडीह, पाण्डेडीह, पोस्ट–नवादा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने पैर में निशान।	कंडिका–2(ix)
205.	1. आवेदन क्र0–3951/24 2. आवेदक–विनय कुमार पाठक, पिता–दिगम्बर पाठक 3. ग्राम–हेठली बोदरा, पोस्ट–चौथा, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–नाक के नीचे तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
206.	1. आवेदन क्र0–3952/24 2. आवेदक–माधो महतो, पिता–स्व0 पुरन महतो 3. ग्राम–खरना, बुढवाडीन, पोस्ट–बिष्णुगढ़, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–55 वर्ष, पहचान चिन्ह–पीठ में तिल।	कंडिका–2(ix)
207.	1. आवेदन क्र0–3953/24 2. आवेदक–कुसुम देवी, पति–नुनु गोपाल 3. ग्राम–लहरयाडीह, पोस्ट–कोनार डैम, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–महिला, आयु–56 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
208.	1. आवेदन क्र0–3954/24 2. आवेदक–नुरजहाँ खातुन, पति–मो0 मोजीम 3. ग्राम–कलियानपुर, पोस्ट–करनी, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–महिला, आयु–46 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायां हाथ में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
209.	1. आवेदन क्र0–3955/24 2. आवेदक–अब्दुल मजीद, पिता–स्व0 असरफ आलम 3. ग्राम–कजरी, पोस्ट–तापीन, थाना–चरही, प्रखण्ड–चुरचू 4. लिंग–पुरूष, आयु–67 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में तिल।	कंडिका–2(ix)
210.	1. आवेदन क्र0–3566/24 2. आवेदक–जानकी महतो, पिता–रेवा महतो 3. ग्राम–किमो, पोस्ट–पतरंगा, थाना–आंगो, प्रखण्ड–माण्डू 4. लिंग–पुरूष, आयु–54 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना हाथ में तिल।	कंडिका–2(ix)
211.	1. आवेदन क्र0–590/24 2. आवेदक–मो0 मोजीम, पिता–अलीमुद्दीन 3. ग्राम–कलियानपुर, पोस्ट–करनी, थाना–ईटखोरी, प्रखण्ड–ईटखोरी 4. लिंग–पुरूष, आयु–49 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायें हाथ के अंगुली में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
212.	1. आवेदन क्र0–591/24 2. आवेदक–मो0 इमामन अंसारी, पिता–मो0 मोहीउद्दीन अंसारी 3. ग्राम–पचमो, पोस्ट–ईटखोरी, थाना–ईटखोरी, प्रखण्ड–ईटखोरी 4. लिंग–पुरूष, आयु–49 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में लहसन।	कंडिका–2(ix)
213.	1. आवेदन क्र0–592/24 2. आवेदक–शिव कुमार सिंह, पिता–स्व0 प्यारी सिंह 3. ग्राम–सकतारा, पोस्ट–मयूरहण्ड, थाना–मयूरहण्ड, प्रखण्ड–मयूरहण्ड 4. लिंग–पुरूष, आयु–51 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिना पैर में तिल।	कंडिका–2(ix)
विवरण :–आयोग के माननीय सदस्य श्री नरसिंह मुर्मू के स्थानीय जांच शिविर में चिन्हित झारखण्ड आन्दोलनकारी चन्द्रनाथ भाई पटेल, दर्शन गंझू एवं मोहन रजक द्वारा आवेदन पर दर्ज बयान एवं पहचान के आधार पर।		
214.	1. आवेदन क्र0–4035/24 2. आवेदक–लुटन महतो, पिता–स्व0 गोपी महतो 3. ग्राम–झपाटांड (चानो), पोस्ट–उच्चाघाना, थाना–बिष्णुगढ़, प्रखण्ड–बिष्णुगढ़ 4. लिंग–पुरूष, आयु–68 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायां गाल में मासा का निशान।	कंडिका–2(ix)
215.	1. आवेदन क्र0–3578/24 2. आवेदक–राजेश प्रसाद, पिता–नरेश साहु 3. ग्राम–सौंदा बस्ती पोस्ट–सौंदा (डी), थाना–भुरकुण्डा, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नही।	कंडिका–2(ix)
216.	1. आवेदन क्र0–3579/24 2. आवेदक–अनिल कुमार सिंह, पिता–सुरेश सिंह 3. ग्राम–सौंदा डी पोस्ट–सौंदा (डी), थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–55 वर्ष, पहचान चिन्ह–गाल के उपर दाहिने कान के निकट मासा।	कंडिका–2(ix)
217.	1. आवेदन क्र0–3580/24 2. आवेदक–प्रमोद कुमार ठाकुर, पिता–रामप्रसाद ठाकुर 3. ग्राम–07 नं0 घौड़ा, सेन्ट्रल सौंदा, पोस्ट–सौंदा (सी), थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–49 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
218.	1. आवेदन क्र0–3581/24 2. आवेदक–बालिन्द्र साहू, पिता–स्व0 मूरत साहू 3. ग्राम–पतरातू पोस्ट–पतरातू, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें आंख के नीचे मासा का निशान।	कंडिका–2(ix)
219.	1. आवेदन क्र0–3582/24 2. आवेदक–राजेश कुमार, पिता–स्व0 धनेश्वर 3. ग्राम–न्यू बैरेक पोस्ट–भुरकुण्डा बाजार, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–46 वर्ष, पहचान चिन्ह–ललाट पर तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
220.	1. आवेदन क्र0–3583/24 2. आवेदक–जेठु महतो, पिता–तुलाराम महतो 3. ग्राम–चैनगड़ा, पोस्ट–चैनगड़ा, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–66 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें पैर में कटे का निशान।	कंडिका–2(ix)
221.	1. आवेदन क्र0–3584/24 2. आवेदक–मो0 इमामुल अंसारी, पिता–बसीरूद्दीन अंसारी 3. ग्राम–चैनगड़ा, पोस्ट–चैनगड़ा, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–58 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने जांघ में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
222.	1. आवेदन क्र0–3585/24 2. आवेदक–प्रदीप उराँव, पिता–स्व0 बँधन उराँव 3. ग्राम–चैनगड़ा, पोस्ट–चैनगड़ा, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–53 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ में कट का निशान।	कंडिका–2(ix)
223.	1. आवेदन क्र0–4036/24 2. आवेदक–निर्मल कुमार महतो, पिता–बंधु महतो 3. ग्राम–घुटु, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–40 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें आंख में तिल।	कंडिका–2(ix)
224.	1. आवेदन क्र0–4037/24 2. आवेदक–गोपाल प्रसाद महतो, पिता–स्व0 गणेश महतो 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–50 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें गाल में दाग।	कंडिका–2(ix)
225.	1. आवेदन क्र0–4038/24 2. आवेदक–चुरामन महतो, पिता–स्व0 धर्मनाथ महतो 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–45 वर्ष, पहचान चिन्ह–पेट में बायां तरफ तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
226.	1. आवेदन क्र0–4039/24 2. आवेदक–संजय प्रसाद, पिता–द्वारिका साव 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायां गाल में तिल।	कंडिका–2(ix)
227.	1. आवेदन क्र0–4040/24 2. आवेदक–मोहन साहू, पिता–शोभी साहू 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–ललाट में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
228.	1. आवेदन क्र0–4041/24 2. आवेदक–टिकेश्वर कुमार साव, पिता–कैलु साव 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–ठुडी में कटा हुआ निशान।	कंडिका–2(ix)
229.	1. आवेदन क्र0–4042/24 2. आवेदक–देवशरण महतो, पिता–मधुलाल महतो 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायां आंख के उपर कटा निशान।	कंडिका–2(ix)
230.	1. आवेदन क्र0–4043/24 2. आवेदक–सुगन महतो, पिता–स्व0 गणेश महतो 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
231.	1. आवेदन क्र0–4044/24 2. आवेदक–अर्जुन साव, पिता–स्व0 चोहन साव 3. ग्राम–सलगा, पोस्ट–सलगा, थाना–केरेडारी, प्रखण्ड–केरेडारी 4. लिंग–पुरूष, आयु–46 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
232.	1. आवेदन क्र0–4045/24 2. आवेदक–अरूण कुमार महतो, पिता–स्व0 सरजू प्रसाद मेहता 3. ग्राम–हेड पोस्ट ऑफिस रोड, जुलु पार्क, पोस्ट–हेड पोस्ट ऑफिस, थाना–सदर, प्रखण्ड–सदर 4. लिंग–पुरूष, आयु–55 वर्ष, पहचान चिन्ह–होंठ के उपर कटा निशान।	कंडिका–2(ix)
233.	1. आवेदन क्र0–1756/24 2. आवेदक–सुकदेव प्रसाद वर्मा, पिता–स्व0 कुंज बिहारी महतो 3. ग्राम–नावागढ़, पोस्ट–नावागढ़चट्टी, थाना–धनवार, प्रखण्ड–धनवार 4. लिंग–पुरूष, आयु–58 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें हाथ में तिल का दाग।	कंडिका–2(ix)
234.	1. आवेदन क्र0–1757/24 2. आवेदक–बासुदेव नायक, पिता–स्व0 ईश्वर नायक 3. ग्राम–चट्टी पोस्ट–नावागढ़चट्टी, थाना–धनवार, प्रखण्ड–धनवार 4. लिंग–पुरूष, आयु–59 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायां गाल में तिल का दाग।	कंडिका–2(ix)
235.	1. आवेदन क्र0–1758/24 2. आवेदक–मोहन प्रसाद साहा, पिता–बुलाकी नायक 3. ग्राम–चट्टी पोस्ट–नावागढ़चट्टी, थाना–धनवार, प्रखण्ड–धनवार 4. लिंग–पुरूष, आयु–52 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायां पैर घुटना पर घाव का निशान।	कंडिका–2(ix)
236.	1. आवेदन क्र0–1759/24 2. आवेदक–चन्द्रिका देवी, पति–शक्ति साव 3. ग्राम–चट्टी पोस्ट–नावागढ़चट्टी, थाना–धनवार, प्रखण्ड–धनवार 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–दायां पैर ठेहुना में गोलचक्री निशान।	कंडिका–2(ix)
237.	1. आवेदन क्र0–3586/24 2. आवेदक–लक्ष्मण राणा, पिता–बेचन राणा 3. ग्राम–हुरूमगढ़ा पोस्ट–भुरकुण्डा बाजार, थाना–पतरातू, प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–54 वर्ष, पहचान चिन्ह–बायें पैर में कटे का निशान।	कंडिका–2(ix)
238.	1. आवेदन क्र0–3587/24 2. आवेदक–महावीर प्रसाद, पिता–स्व0 खेमलाल महतो 3. ग्राम–पुरनाटोला, बलकुदरा, पोस्ट–बलकुदरा, थाना–पतरातू (बासल), प्रखण्ड–पतरातू 4. लिंग–पुरूष, आयु–66 वर्ष, पहचान चिन्ह–छाती में मासा का निशान।	कंडिका–2(ix)
239.	1. आवेदन क्र0–2241/24 2. आवेदक–मदन महतो, पिता–सूखन महतो 3. ग्राम–सारले, पोस्ट–सारले, थाना–बुड़मू, प्रखण्ड–बुड़मू 4. लिंग–पुरूष, आयु–49 वर्ष, पहचान चिन्ह–नाक के बायां तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)
240.	1. आवेदन क्र0–2242/24 2. आवेदक–धर्मनाथ ओहदार, पिता–भुनेश्वर ओहदार 3. ग्राम–जिदु, पोस्ट–ईचादाग, थाना–ओरमांझी, प्रखण्ड–ओरमांझी 4. लिंग–पुरूष, आयु–48 वर्ष, पहचान चिन्ह–अंकित नहीं।	कंडिका–2(ix)
241.	1. आवेदन क्र0–4046/24 2. आवेदक–प्रकाश कुमार, पिता–ईश्वर महतो 3. ग्राम–हरली, पोस्ट–हरली, थाना–बड़कागाँव, प्रखण्ड–बड़कागाँव 4. लिंग–पुरूष, आयु–42 वर्ष, पहचान चिन्ह–दाहिने हाथ में तिल का निशान।	कंडिका–2(ix)

नोट :–
1. यह सूची पूर्णरूपेण औपबंधिक है।
2. यह सूची आयोग के द्वय सदस्यों द्वारा स्थानीय जांच शिविर/कार्यालय में जांच कर आवेदन पर दर्ज बयान के आधार आवेदन प्रपत्र की कण्डिका 14(ग) के आलोक में प्रकाशित की गयी है।
3. इस सूची में किसी प्रकार की त्रुटि पाये जाने पर दस (10) दिनों के अन्दर आयोग को आपत्ति कर सकते हैं।
4. आश्रित होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र तथा आश्रित संबंधी प्रतिवेदन संलग्न करना आवश्यक है।

(भुवनेश्वर महतो) सदस्य	(नरसिंह मुर्मू) सदस्य	(दुर्गा उराँव) अध्यक्ष

PR 341581 (Home) 24-25 (D)

पूर्व तट रेलवे का यौन उत्पीड़न रोकथाम सप्ताह

कानूनी प्रक्रियाओं की डॉ एसएस राय ने दी जानकारी

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। कार्यस्थल पर महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न रोकथाम सप्ताह के उपलक्ष्य में पूर्व तट रेलवे (पूतरे) के तत्वावधान में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। लिंग संसाधन केंद्र और एनजीओ अस्तित्व के सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला का आयोजन कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013 की घोषणा की वर्षगांठ के रूप किया गया था। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ एसएस राय, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा निदेशक, पूतरे ने किया। डॉ राय ने यौन उत्पीड़न की शिकायतों को संबोधित करने की कानूनी प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालते हुए पीओएसएस अधिनियम, 2013 के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी दी। कार्यशाला मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, ओडिशा, कटक में विधि विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ प्रियंका आनंद ने कार्य करते हुए यौन उत्पीड़न के मुद्दों से निपटने के लिए वास्तविक जीवन के विभिन्न उदाहरणों पर विस्तार से चर्चा की। अन्य अतिथियों में डॉ ममता दास, सचिव और भुवनेश्वर स्थित अस्तित्व एनजीओ की स्नेहांजलि महांति ने भी यौन उत्पीड़न की वास्तविकता और समाधान पर अपने विचार साझा किये।

वेदांता एल्युमीनियम ने झारसुगुड़ा के किसानों को प्रीमियम 'वेदामृत शहद' लांच करने में मदद की

आजाद सिपाही संवाददाता

झारसुगुड़ा, ओड़िशा। भारत के सबसे बड़े एल्युमीनियम उत्पादक वेदांता एल्युमीनियम द्वारा समर्थित किसानों ने वेदामृत शहद का अनावरण किया, जो लाइकेराहनीफेड किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के तहत संचालित लाइकेरा के कुशल मधुमक्खी किसानों द्वारा तैयार किया गया एक प्रीमियम, 100% प्राकृतिक शहद है। लाइकेरा में पंचायत समिति कार्यालय में आयोजित लॉन्च कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्ति, सरकारी अधिकारी और स्थानीय समुदाय एक साथ आये, ताकि स्थायी आजीविका और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके।

यह पहल स्थानीय किसानों को आधुनिक मधुमक्खी पालन पद्धतियों से सशक्त बनाती है, उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले मधुमक्खी बक्से, मधुमक्खियां और शहद पालन में व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करती है। 100 से अधिक स्थानीय मधुमक्खी किसानों ने निःशुल्क प्रशिक्षण का लाभ उठाया। वेदांता बाजार से जुड़ने की सुविधा भी प्रदान करता है।

इस पहल के बारे में बोलते हुए वेदांता एल्युमीनियम के मुख्य परिचालन अधिकारी सुनील गुप्ता ने कहा कि वेदामृत हनी अभिनव और प्रभावशाली आजीविका पहलों के माध्यम से लचीले समुदायों के निर्माण के लिए हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है। यह परियोजना जैव विविधता को भी बढ़ावा देती है और कृषि उत्पादकता को मजबूत करती है। वेदांता में हम सभी के लिए यह गर्व का क्षण है कि लाइकेरा के मधुमक्खी किसानों की समर्पण भावना ने ठोस परिणाम दिये हैं, आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है और समुदाय के लिए एक उज्जवल भविष्य को आकार दिया है। लाइकेराहनीफेड एफपीओ की सचिव संजुलता नायक ने इस प्रयास की सराहना की और कहा कि मधुमक्खी पालन एक महत्वपूर्ण गतिविधि है, जो न केवल किसानों को आय का एक अतिरिक्त स्रोत प्रदान करती है, बल्कि परागण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है, जो कृषि उत्पादकता के लिए महत्वपूर्ण है। इस पहल में वेदांता का समर्थन अनुकरणीय रहा है और मुझे उम्मीद है कि यह पूरे राज्य में इसी तरह की समुदाय-संचालित आजीविका परियोजनाओं के लिए एक मॉडल बन जायेगा।

लाईकेरा के मधुमक्खी पालक हरीश पटेल ने अपना अनुभव साझा करते हुए आभार व्यक्त किया और कहा कि पहले हमें स्थिर आय के अवसर प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। मधुमक्खी पालन में हमें प्रशिक्षण देने और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में वेदांता के सहयोग से अब हमारे पास आजीविका का एक भरोसेमंद स्रोत है। वेदामृत हनी के लॉन्च से हमें विश्वास है कि हमारी कड़ी मेहनत उन उपभोक्ताओं तक पहुंचेगी, जो शुद्ध और प्राकृतिक उत्पादों को महत्व देते हैं। इससे हमें अपने परिवारों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

भुवनेश्वर, कटक और पुरी में चलेंगी डबल डेकर इ-बसें

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। भुवनेश्वर में डबल डेकर इ-बसें चलेंगी। इसके लिए क्रुट ने निजी कंपनियों से टेंडर आमंत्रित किये हैं। यह डबल डेकर इ-बस भुवनेश्वर, कटक और पुरी में चलेगी। पहले चरण में 5 डबल डेकर बसें होंगी। इन इ-बसों का अनुबंध 10 साल के लिए होगा। संबंधित एजेंसी आपूर्ति, संचालन, रखरखाव और कर्मचारी प्रदान करेगी। यदि आवश्यक हो, तो अनुबंध को और 2 साल के लिए बढ़ाया जा सकता है।

असर्फी हॉस्पीटल
आयुष्मान भारत एवं मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी उपचार योजना के तहत निःशुल्क इलाज की सुविधा उपलबध
• बाईपास सर्जरी / ओपन हार्ट सर्जरी
• हृदय वाल्व की रिपेयर या रिप्लेसमेंट
7808368888 www.asarfihospital.com

JOB VACANCY
सुनहरा अवसर महिलाओं के लिए
एक बड़ी Reputed Company में रॉंची के लिए Jobs Opportunity है जिसके लिए निम्न योगयताएँ अनिवार्य है :-
• Only Female.
• Age 30 to 45 Years.
• Minimum Qualification Graduation
• Married only.
• Experience को वरियता
Post Applied For Life planning Officer (LPO)
Fixed Salary : Rs. 12000 to 17000 (Monthly) +Incentive, PF, Gratuity, Medical & Bonus
Eligible Candidates are request to contact immediately with resume & Photograph on below Contact.
Vacancy सिमित है.. ONLY 10 LEFT HURRY UP
नोट : 29 साल से कम एवं 45 साल से उपर उम्र वाले व्यक्ति सम्पर्क न करें।
Address : 2nd Floor, R.S. Tower, Lalpur, Ranchi
M.: 7004800036, 9905678089 (W)

LAKSHMI VASTRALAY
अच्छे से अच्छा फिर भी सस्ता
फैन्सी
हमारे यहाँ फैंसी साड़ी, लहंगा, सूट सभी तरह के वस्त्र उचित दामों मे मिलते है।
7033265646
Coal Board Colony, Near Dy.SP Bunglow
Police Line Hirapur, Dhanbad

बरजो भाजपा कार्यालय में बैठक

आजाद सिपाही संवाददाता

राजधनवार। भाजपा नेता सह पूर्व डीआइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बरजो स्थित भाजपा कार्यालय में मंगलवार को बैठक की। इस दौरान उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि भाजपा निराश होनेवाली पार्टी नहीं है। हम लोग आज 21 सीट पर हैं, आनेवाले दिनों में 61 सीटें जीतेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा का सदस्यता अभियान शुरू होनेवाला है। इसको लेकर पूरे झारखंड में धनवार ऐसा विधानसभा है, जहां सदस्यता को लेकर प्रथम स्थान है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से प्रधानमंत्री द्वारा चलायी जा रही कल्याणकारी योजनाओं को घर-घर जाकर लोगों को अवगत कराने की बात कही। बैठक के बाद श्री सिंह बोदगो भाजपा कार्यकर्ता के घर शादी समारोह में भाग लेकर वर बधु को आशीर्वाद दिया। मौके पर रतन सिंह, सुबोध राय, श्रीकांत, लोकेश चौधरी,पवन सिंह, अंकित कुमार, श्याम सिंह, महेंद्र चौधरी, अरविंद राय, कमलेश यादव, विनय सिंह आदि मौजूद थे।

बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते भाजपा नेता लक्ष्मण प्रसाद सिंह।

मीडिया मार्केटिंग इनिशियेटिव

शारदा ग्लोबल स्कूल में वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

थीम – 'एब्लेज इवाल्व इट्स टाइम टू चेन्ज' पर आधारित कार्यक्रमों ने अभिभूत किया दर्शकों को

रविवार, 8 दिसम्बर को शारदा ग्लोबल स्कूल में बहुप्रतीक्षित वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें थीम एब्लेज 'इवाल्व इट्स टाइम टू चेन्ज' के आधार पर नर्सरी से लेकर बारहवीं तक के छात्रों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों के माध्यम से अतिथियों को अभिभूत एवं भाव विभोर कर दिया एवं लोगों के विचार में बदलाव लाने का संदेश भी अपनी प्रस्तुति अधिकार (वुमेन सेफ्टी) के माध्यम से दिया।

भिन्न-भिन्न गानों के रिदमों पर बच्चों का उत्साह।

विपरीत परिस्थितियों में ईश्वर पर श्रद्धा

शिक्षा हो या सम्मान, दोनों है नारी का अधिकार

काल्पनिक लोक में ले जाकर रचनात्मक एवं तार्किक गुणों का विकास

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री परवीन कुमार टोप्पो (आई॰ए॰एस॰, सेक्रेटरी पर्सनल, एडमिनिस्टेजटिव रिफार्म एवं राजभाषा डिपार्टमेन्ट गवर्मेंट ऑफ झारखण्ड) एवं श्रीमती निक्की टोप्पो, गेस्ट ऑफ ऑनर श्री अमित कुमार (आई॰ए॰एस॰ डिपार्टमेन्ट ऑफ फायनान्स एवं कॉमर्शियल टैक्सेस, गवर्मेन्ट ऑफ झारखण्ड एवं श्रीमती प्रेरणा मेहता, श्री शशि रंजन (आई॰ए॰एस॰ डिपार्टमेन्ट ऑफ झारखण्ड एजूकेशन प्रोजेक्ट काउन्सिल गवर्मेन्ट ऑफ झारखण्ड एवं डॉ॰ (श्रीमती) श्रेया रंजन के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट अतिथियों में श्री आदित्य स्वरूप (आई॰ए॰एस॰), श्रीमती मन्नु झा, अन्य विद्यालयों के डायरेक्टर्स एवं प्रिंसिपल एवं अभिभावकगण ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में छात्रों ने भिन्न-भिन्न जीवन्त सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से अतिथिगण को सम्मोहित कर दिया। अभूतपूर्व नृत्य एवं संगीत, भजन, इन्स्ट्रुमेन्टल, सूफी संगीत, फ्यूजन, प्रस्तुतियों के साथ-साथ नृत्य-नाटक प्रस्तुत किया। परिवर्तन प्रकृति का नियम है अतः हमें इन चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ना चाहिए, यह संदेश छात्रों की प्रस्तुतियों द्वारा स्पष्ट किया गया। वार्षिकोत्सव पर विद्यालय की प्राचार्या महोदया ने विद्यालय का वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया ।

कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित अतिथिगण ने छात्रों की अद्भुत प्रस्तुतियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि विद्यालय एवं विद्यालय के छात्र सही एवं सटीक निर्देशन में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

संजय शारदा,चेयरमैन - शिक्षा एक छात्र की सम्पूर्णता की खोज का वह साधन है जो उसकी पूर्णता में सहायक है। अपनी स्थापना के नवें वर्ष में यह विद्या का मन्दिर शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में उच्च मानदंडों को स्थापित करने में सफल रहा है। इस सफलता का श्रेय विद्यालय की डायरेक्टर एकेडमिक्स डॉ॰ (श्रीमती) रंजना स्वरूप, विद्यालय की प्राचार्या महोदया श्रीमती जसमीत कौर एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षकों को जाता है, जिनके मार्गदर्शन में छात्र नित नए कीर्तिमान गढ़ने में सफल हो रहे हैं।

दीपक बंका, डायरेक्टर - आज हमें यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि 2015 में स्थापित शारदा ग्लोबल स्कूल ने इतने अल्प समय में जो सफलता का इतिहास रचा है वह अपने में अद्वितीय है यहां के छात्र साल-दर-साल इसकी प्रतिष्ठा को अपनी सफलता से नए आयाम दे रहे हैं।

अनुज रंजन, डायरेक्टर - आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में शारदा ग्लोबल स्कूल के छात्र केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विद्यालय का परचम लहरा रहे हैं यह विद्यालय की शिक्षण पद्धति एवं उचित निर्देशन का द्योतक है।

रंजना स्वरूप, डायरेक्टर एकेडमिक - शिक्षा मनुष्य के शरीर मन एवं आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को सामने लाता है। शिक्षण के साथ-साथ विद्यालयी गतिविधियां छात्रों में आत्मविश्वास, मानसिक एवं शारीरिक विकास, संवेगात्मक, सहयोग एवं आत्म-नियन्त्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जसमीति कौर, प्रिंसिपल -- आज की नवीन शिक्षण प्रणाली छात्रों को ज्ञान के साथ-साथ जीवन को अच्छे से जीने की तैयारी है। शारदा ग्लोबल स्कूल शिक्षण के साथ अपने छात्रों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने की तैयारी एवं प्रेरणा देता है।

पुरानी पीढ़ी का नई पीढ़ी से तालमेल।

गिटार, तबला, ढोलक, शंख और हारमोनियम पर जीवंत प्रस्तुति छात्रों ने दी

राक्षसों का वध करने वाली आदि शक्ति, महिषासुर मर्दनी का भव्य रूप

भारत को मिटाने वाले मिट गए, यह है इतिहास हमारा। शाश्वत अखण्ड रखें इसे यह है प्रण हमारा

मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार टोप्पो (आई॰ए॰एस॰) ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'शिक्षा वह संस्कार है जो हमें अपने कर्त्तव्यों को समझने में मदद करता है। शारदा ग्लोबल स्कूल अपने छात्रों में शिक्षण के साथ-साथ संस्कार के बीज का रोपण कर रहा है जो उनकी अद्भुत प्रस्तुतियों के माध्यम से दृष्टिगत हो रहा है। विद्यालय के छात्रों का भविष्य उचित निर्देशन एवं मार्गदर्शन में हो रहा है जिसका परिणाम है कि छात्र जीवन के विविध क्षेत्रों में नए कीर्तिमान गढ़ रहे हैं। उन्होंने छात्रों को अधिक से अधिक ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा दी। विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएं।

गेस्ट ऑफ ऑनर श्री अमित कुमार (आई॰ए॰एस॰) - शिक्षा सही मायनों में अज्ञानता के अंधकार को मिटाता है। शारदा ग्लोबल स्कूल छात्रों के भविष्य निर्माण में हर कदम उनके साथ है। छात्रों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तुतियों ने विद्यालय की गरिमा बढ़ा कर विद्यालय को नई ऊंचाइयां दी है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

श्री शशि रंजन (आई॰ए॰एस॰) - आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में किताबें पढ़ना एवं उनमें दी गई सीख को जीवन में लागू करना अत्यन्त आवश्यक है। शारदा ग्लोबल स्कूल ने अपने छात्रों के शैक्षणिक स्तर के साथ-साथ सह पाठ्यक्रम गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया है। वह यहां के मैनेजमेन्ट एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षकों की ही देन है। विद्यालय के इस अदभुद प्रगति के लिए मेरी हार्दिक बधाइयां।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**